अपभ्रंश काव्यधारा

लेखक
देवेन्द्रकुमार जैन

प्रकाशक



कल्याणमल एण्ड सन्स
त्रिपोलिया बाजार जयपुर

१९७०

प्रकाशक
प्रकाशन-विभाग
कल्याणमल एण्ड सन्स
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर-२

मूल्य रु ६.०० [illegible]

मुद्रक
अजन्ता प्रिण्टर्स,
जयपुर

प्रास्ताविक

अपभ्रंश अब न तो एक अनजानी भाषा है और न उसका साहित्य अप्राप्य। गत चार दशकों की खोज से जो साहित्य प्रकाश मे आया है वह यह उजागर करने करने के लिए काफी है कि अपभ्रंश—एक जीवित लोक भाषा थी और यह कि उसका क्षेत्र, किसी भी आधुनिक भारतीय भाषा से बडा था।

अपभ्रंश का युग (ईसवी ७ से १२वीं तक) ऐतिहासिक सदर्भ म सांस्कृतिक मूल्यो के ह्रास और राजनीतिक बिखराव का युग था। बिखराव की यह प्रक्रिया भाषा के क्षेत्र मे और भी तेज थी। अपभ्रंश कवि के सम्मुख दुहरा दायित्व था एक तो उसे नये पुराने के बीच सेतु बनना था और दूसरे युगीन यथार्थ के सदर्भ मे आध्यात्मिक मूल्यो की प्रतिष्ठा करनी थी। और यह अभी भी शोध की अपेक्षा रखता है कि वह अपने दायित्व के प्रति कितना सजग और सक्रिय रह सका?

प्रस्तुत सकलन का अपना विशिष्ट सदर्भ और उद्देश्य है? भारतीय विश्व विद्यालयों मे एम० ए० स्तर पर वैकल्पिक प्रश्न-पत्र के रूप म 'अपभ्रंश' का अध्ययन लोकप्रिय होता जा रहा है यह इसलिए भी क्योकि उसम शोध के नए क्षितिज और दिशाएँ हैं परन्तु प्रामाणिक और अधुनातन सकलन न होने से नए अध्येता को बडी कठिनाई का सामना करना पडता है? यह प्रयास इसी कठिनाई को हल करने की दिशा मे एक प्रयास है।

विषय को सरल बनाने के लिए समकालीन परिवेश टिप्पणियाँ और अवतरित अशों के सदर्भ दे दिए गए हैं चयन म यह सावधानी बरती गई है कि सदर्भित काव्य की बहुरगी झलक सामान्य पाठक को भी मिल जाये। पाठ्यक्रम की दृष्टि से पुस्तक कुछ बडी है परन्तु सग्रह को बडा बनाने म दृष्टिकोण यह रहा है कि विभिन्न विश्वविद्यालयो मे अपनी अपेक्षा और आवश्यकता के अनुसार पाठ्यक्रम निर्धारित किया जा सके और कुछ समय बाद दूसरे कवियो को भी पाठ्यक्रम मे म रखने के विकल्प की सुविधा रहे। अतिरिक्त इसके सामान्य पाठक के, जो परीक्षार्थी नहीं हैं उपयोग म आ सके?

'पाडुलिपि तयार करने मे जिस मनोयोग से सुश्री महेशी कपूर ने काम किया है उसके लिए मैं उन्हे धन्यवाद देता हूँ। साथ ही कल्याणमल एण्ड सस भी कम

धन्यवाद के अधिकारी वे हैं जिन्होंने—मशीनी प्रकाशनों की व्यस्तताओं के बावजूद अपेक्षित साज सज्जा के साथ 'पुस्तक' उपलब्ध करा दी।

पिछले तीन-चार सालों से मैं आलोच्यकाव्य से सम्बद्ध हूँ और यह सम्बद्धता यह विश्वास करने के लिए पर्याप्त है कि पुस्तक निश्चय ही उनका अपनापन पायेगी जिनके लिए यह समर्पित है।

देवेन्द्रकुमार

अध्यक्ष—हिन्दी विभाग
इन्दौर विश्वविद्यालय, इन्दौर

अपभ्रंश-साहित्य

(१) ऐतिहासिक सदभ म अपभ्रश प्राचीन भारतीय आयभाषा की अतिम कडी है ऐसी कडी जो न केवल प्राचीन भारतीय आयभाषा को आधुनिक भारतीय आयभाषाओ और उनके साहित्य से जोडती है वरन् दक्षिणभारत की भाषाओ और उनके साहित्य को भी किसी हद तक जोडती है। अपभ्रश और दक्षिणी भाषाओ का साहित्य सजन समकालीन साहित्य सजन है और अपभ्रश म आयभाषा के शब्दो की तुलना म आर्येतर भाषाओं के शब्द कम नही है। इस प्रकार भारतीय साहित्य धारा क नरतर्य और नानाप्रवाहा को समभन का सूत्र सचमुच अपभ्रश के हाथ में है।

(२) जहाँ तक अपभ्रश के एक भाषा रूप म विकसित होन का प्रश्न है इसका उत्तर स्पष्ट है ? अपभ्रश के विकास म वही तत्व और प्रभाव काम करते हैं जो किसी दूसरी भाषा में कर सकते हैं। अपभ्रश का सबसे बडा महत्व यह है कि आयभाषा एक से अनक कसे बनी—इसकी व्याख्या अपभ्रश क माध्यम से सही ग्रथ में की जा सकती है ? व्याकरण की दृष्टि से भी अपभ्रश का अपना एक व्यक्तित्व और आकृति है। उसका एक रूपात्मक अस्तित्व है। अभी तक के प्राप्त तथ्यो के आधार पर यह कहा जा सकता है कि अपभ्रश अपन मूल रूप म उत्तर पश्चिम भारत की एक बोली थी जिसे भरत मुनि न आभीरोक्ति कहा है और जिसकी प्रकृति थी उकारात जसे 'मोरउ नच्चन्तउ'— नाचता हुआ मोर। आभीरी अपभ्रश कस बनी—इसकी कहानी लम्बी और उलझनभरी है। वसे अपभ्रश शब्द का प्रयोग पतञ्जलि न अपन भाष्य म किया है परन्तु वह सस्कृत स भिन्न शब्द के लिए है जसे गौ के लिए—गावी, गोणी गोपोतलिका इत्यादि। सबसे पहले सस्कृत साहित्यालोचक दडी न यह बताया कि बोलचाल की आभीरी साहित्यभाषा के रूप म न केवल अपभ्रश कहलाती है प्रत्युत उसकी अपनी साहित्यिक कृतियाँ हैं जिनका उसन सस्कृत और प्राकृत साहित्य के साथ, उल्लेख समानातर उल्लेख किया है।

भरतमुनि और दडी के बीच दो तीन सौ वर्षों का अन्तर तो सहज ही था। आभीरी को अपभ्रश कहलान म इतना समय लग जाना कोई बडी बात नही। प्रसिद्ध सस्कृत गद्यकार कवि बाणभट्ट के समय अपभ्रश भाषा के नाम स जानी जाती थी। इसके हर्षचरित म प्राकृत कवि वायुकुमार के साथ भाषा कवि ईशान का भी उल्लेख है। यहाँ भाषा का आशय अपभ्रश से है ईशान अपभ्रश कवि थ इसम सन्देह

स्थापित भी यहाँ तक जाता क्योंकि पुष्पदन्त ने महापुराण में उनका अपभ्रंश कवि के रूप में उल्लेख किया है — चउमुहु सयम्भु सिरिहरिसु दोणु णालोइउ कइ ईसाणु बाणु। ईशान बाणभट्ट का परम मित्र था। इससे स्पष्ट है कि सातवीं सदी के पूर्वार्ध से अपभ्रंश में कविता लिखी जाने लगी थी, परन्तु उसमें ईशान जैसे प्रसिद्ध कवि भी हो चुके थे। इस प्रकार मोटे तौर पर ईसवी सातवीं सदी से १२वीं सदी तक अपभ्रंश साहित्य का युग कहा जा सकता है। स्वयम्भूछन्द के अवतरणों से भी यह तथ्य प्रमाणित है कि स्वयम्भू के पहले कई अपभ्रंश कवि हो चुके थे। इनमें प्रबन्ध और मुक्तक दोनों प्रकार के कवि सम्मिलित हैं।

(४) अपभ्रंश के युग की समाप्ति १२वीं ईसवी में ही मानना उचित और न्यायसंगत है, यद्यपि अपभ्रंश में इसके बाद (१६वीं १७वीं तक) काव्य रचना होती रही। १२वीं के बाद वस्तुतः अवहट्ट और आधुनिक भाषाओं के साहित्य का युग है। राजनीतिक और सांस्कृतिक दृष्टि से इस युग का प्रतिनिधित्व नई बोलियों का साहित्य करता है न कि अपभ्रंश का। राजनीति के सन्दर्भ में यह भारतीय इतिहास का राजपूत युग है। जिस प्रकार मौर्य और गुप्त साम्राज्यों के समय में संस्कृत परिष्कृत होकर अभिव्यक्ति का माध्यम बना, बुद्ध और महावीर की क्रान्ति से पालि और प्राकृत को मान्यता मिली, उसी प्रकार हर्षवर्धन के राजनीतिक उथल-पुथल से अपभ्रंश को महत्त्व मिल गया। हर्षवर्धन (६०६ से ६४८) शासन के बाद साम्राज्य का जब विघटन हुआ तो देश टुकड़ों में बँट गया। लगभग सौ वर्ष का समय अराजकता और राजनीतिक अस्थिरता का युग था। ६४६ से ८१६ ईसवी तक उत्तरी गंगा घाटी बाह्य आक्रमणों और आन्तरिक संघर्ष की भूमि बनी रही। हर्ष के निधन के कोई सौ साल बाद भारत में तीन महाशक्तियाँ अपनी स्वतन्त्र सत्ता स्थापित करने में सफल हो गयीं—(i) दक्षिणापथ के राष्ट्रकूट (ii) राजपूताने के भिन्नमाल या श्रीमाल के गुर्जर प्रतिहार (iii) पूर्वी भारत का प्रसिद्ध पाल वंश। महोदयश्री (कन्नौज) को हथियाने के लिए इनमें कठोर संघर्ष हुआ। अन्त में प्रतिहारों ने उस पर कब्जा कर लिया। इस समय कन्नौज का वही महत्त्व था जो मुगलकाल में दिल्ली का। इसके अतिरिक्त छोटे मोटे दूसरे राजनीतिक इकाइयाँ भी थीं जैसे गुजरात के चालुक्य, अजमेर के चौहान, पश्चिम के नागर, गहड़वाल व चन्देल और परमार। इस काल की दूसरी मन्दगामिनी किन्तु महत्त्वपूर्ण घटना है अरब आक्रमण। ७११ ईसवी में मुहम्मद बिन कासिम की चढ़ाई से यह प्रक्रिया प्रारम्भ होती है और ११७४ में जयचन्द के पतन के साथ समाप्त।

(५) अपभ्रंश युग के राजा प्रायः लड़ाकू होते थे। मल्लयुद्ध के सिवा जनता पशुओं से युद्ध करना उन्हें विनोद प्रिय था। कला और विद्या के प्रति अनुराग उनमें था। वंशगत भावना उग्र थी। राजनीतिक नीति वंशगत के लिये वंशहित

सम्बन्धों पर विशेष जोर दिया जाता था। सामाजिक स्थिति में परिवर्तन तेजी से हो रहा था। ब्राह्मण और किसान सेना में भरती होते थे। उच्च कुल की स्त्रियाँ शासन में भाग लेती थीं। राजवर्ग और साधारणवर्ग के रहन-सहन में काफी अन्तर था। ऊँची शिक्षा के प्रबन्ध के उदाहरण मिलते हैं, परन्तु ग्राम्य स्तर पर शिक्षा की व्यवस्था का कोई उल्लेख नहीं है। व्यक्तिगत रूप से गावों में पढ़ाई होती थी। दस्तकारी या अथवा दूसरी विद्याएँ बेटा बाप से ही सीखता था। पुरानी धर्म साधनाओं और देवी देवताओं की उपासना के साथ नये धार्मिक विचार भी विकसित हो रहे थे। इस नयी आस्तिक भक्ति चेतना का केन्द्र तमिल देश था। यह विचार चेतना शीघ्र सारे देश में फैल गयी। ऐसा लगता है कि साधनात्मक और वैराग्य प्रधान आध्यात्मिक साधनाओं के विरुद्ध प्रवत्यात्मक शिव या विष्णु भक्ति का प्रचार करना इनका उद्देश्य था। १०वीं सदी में आसपास प्रदार ने उनके गीतों का सकलन तवारम' के नाम से किया जो तामिल शैव धर्म के लिए वेद' है।

(६) नयी भक्ति फलने के अधोलिखित कारण थे—

(I) राज्याश्रय के कारण जनता में प्रचार

(II) जनभाषा में गीतों की रचना

(III) शिव विष्णु के लोकोत्तर व्यक्तित्व द्वारा जनता में विश्वास की भावना पैदा करना

(IV) सुन्दर रागों में गीतों को गाकर प्रचार करना।

सदर्भित युग में उत्तर भारत की तुलना में दक्षिणभारत में धार्मिक विचार धाराओं का सघर्ष अधिक सक्रिय था। ये सारी विचारधाराएँ भारतीय थीं। विष्णुमत की अपेक्षा शैवमत अधिक सुगठित था। जैन धर्म और शैवमत में सघर्ष था। बौद्ध धर्म अवनति पर था। कुछ इतिहासकारों की मान्यता है कि ईसवी सदी ६३६ में अरब जहाज भारतीय समुद्र के किनारे पहुँचे। तब से अरब व्यापारियों का सम्बन्ध इस देश से रहा है एक सदिग्ध धारणा यह भी है कि ईसाइयों का दक्षिण भारत में बसना इस समय तक प्रारम्भ हो गया था और इसलिए नई उठती हुई अद्वैतात्मक भक्ति आत्मसमर्पण, सामाजिक समानता और गुरु की आवश्यकता पर जोर दिये जाने आदि बातों को उक्तधारणा मुस्लिम या ईसाई प्रभाव मानती है परन्तु यह सास्कृतिक और ऐतिहासिक दोनों दृष्टि से गलत है।

साम्प्रदायिक मतभेद के बावजूद सहिष्णुता का भाव था। मत-परिवर्तन वैवाहिक सम्बन्धों में बाधक नहीं था। धर्म की शक्ति बढ़ना न बढ़ना राज्य के आश्रय पर निर्भर करता था। यह युग मन्दिरों के ठाट बाट का युग था। आलोच्य युग के उत्तरार्ध में उग्र मध्यात्म सिद्ध साधना हठयोग भक्ति आदि साधनाओं

और खण्ड काव्य। जहाँ तक प्रबन्ध काव्य का सम्बन्ध है यह धारा परम्परागत पौराणिक काव्यों से प्रारम्भ हुई। बहुत सी प्रवृत्तियों में समानधर्मी होते हुए भी पुराण काव्य की तुलना में चरित काव्य की अपनी विशेषताएँ हैं, जैसे चरित काव्य में अप्राकृत तत्व का सकोच वस्तु विकास में यथा समय धारावाहिकता, धार्मिकता, लौकिकता और संक्षिप्तता। चरित काव्य और कथा काव्य एक ही बात है—और इनकी सबसे बड़ी विशेषता है लौकिक और शास्त्रीय परम्परा का समन्वय। चरित काव्य की अपनी टेक्नीक है, गीततत्व युक्त द्विपदी के आधार पर छन्द की लयात्मक तुकान्त रचना कडवक की योजना इसी टेक्नीक के परिणाम हैं। वस्तु वर्णन की दृष्टि से काव्य समृद्ध है, विवाह गोकुल शबरबस्तियों कृष्णलीला स्वयम्बर और जल क्रीडा का वर्णन विशेष महत्व रखता है। रूप चित्रण में ये कवि बेजोड़ हैं, वह भी भाव के अनुरूप रूप चित्रण करने में। स्त्रियों की रूपात्मक प्रतिक्रिया भी ये खूब चित्रित करते हैं। प्रकृति चित्रण और अलकार योजना भी इनमें मौलिकता को लिए हुए है। चरित काव्य की तुलना में पुराण काव्य एक प्रकार से चरित्रों का संग्रह ग्रन्थ है। इनमें काव्य और कथानक दोनों से संबंधित रूढ़ियाँ देखी जाती हैं। चरित काव्य की दो उपधाराएँ हैं चरित काव्य (धार्मिक) और रोमांटिक काव्य। चरित काव्यों की एक विशेषता यह है इनके अन्तर्गत गीति तत्व भी है। राम और कृष्ण के इतिवृत्त पर लिखित चरित काव्य की धाराएँ आलोच्य काव्य में देखने परखने की वस्तु है।

(६) खंड काव्य भी दो चार उपलब्ध हैं उदाहरण के लिए संदेश रासक' सुखान्त खण्डकाव्य है, कुछ आलोचक पहले इसे गीतिकाव्य मानते थे और अब कहते हैं कि वह क्षीणधर्मा प्रबन्धकाव्य है ? वस्तुतः इस काव्य में घटनाक्रम कम और प्रतिक्रिया अधिक है। मुक्तक काव्य की परिभाषा के बारे में अभी तक यह कहा जाता रहा है कि उसे इतिवृत्तविहीन होना चाहिए। परन्तु यह ठीक नहीं। मुक्तक का अर्थ है जो पूर्वापर संदर्भविहीन हो, वह अपने आप में मुक्त हो। अतः भावना के अतिरिक्त घटना या इतिवृत्त का खंड भी मुक्तक काव्य का विषय बन सकता है। संस्कृत आलोचक राजेश्वर ने इसका विस्तार से विवेचन किया है। अपभ्रंश में इतिवृत्तात्मक मुक्तकों के काफी उदाहरण मिलते हैं। गेयमुक्तकों के रूप में जो रचनाएँ मिलती हैं उनमें से अधिकांश गीतनृत्यात्मक रचनाएँ हैं। अपभ्रंश में इतिवृत्तात्मक की परम्परा अधिक लोकप्रिय रही हैं इसके अतिरिक्त कुछ गेयमुक्तक अपभ्रंश काव्यधारा के भीतर मिलते हैं। यह कहा जा चुका है कि अपभ्रंश प्रबन्ध काव्य के स्वरूप गठन में गीत के कई तत्वों को ले लिया गया है। मुक्तक के रूप में दोहा काव्य बहुत बड़ी मात्रा में उपलब्ध है जैसा कि पाठक देखेंगे कि यह आध्यात्मिक और लौकिक दोनों रूप में उपलब्ध है। गहराई से देखने पर यह साफ हो जायगा—

कि लोक में प्रचलित काव्य विधाओं ही आगे चलकर शास्त्रीयविधाओं का रूप ग्रहण करता हैं। लोक की अधिकता के कारण अपभ्रंश की दूहा विद्या भी बहुत थी। कुछ विद्वानों का मत है कि प्रारम्भ में 'दूहा' या 'दोहा'—दो पंक्तियों वाले छन्द का सामान्य नाम था बाद में खास प्रकार के छंद को दोहा कहने लगे। इसमें संदेह नहीं कि अपभ्रंश छन्द का आधार, दो पंक्तियाँ और तुक (अन्त्यानुप्रास) है। अपभ्रंश कवियों ने अपने छन्द की प्रकृति के भीतर संस्कृत के वर्णिक छंदों को लाने का सफल प्रयास किया है। इस प्रकार अपभ्रंश कवि शास्त्रीय और लोक काव्य के बीच सेतु का काम करता है। प्रस्तुत काव्यधारा में दो प्रकार की अंतर्धाराएँ हैं प्रवृत्ति-मूलक या कर्मकांड में आस्था रखने वाली विचारधारा और निवृत्तिमूलक या विशुद्ध अध्यात्मवादी विचारधारा। विशुद्ध अध्यात्मवादियों में भी दो उपधाराएँ हैं—(१) जैन विशुद्ध अध्यात्मवादी (२) सिद्ध सहज अध्यात्मवादी। बाह्य आडम्बर का विरोध आत्मा की स्वतन्त्रता चित्तशुद्धि और करुणा, इनमें समान रूप से मिलती है। नियति की विडम्बना के प्रति अपभ्रंश कवि का स्वर सबसे अधिक आक्रोशपूर्ण है। वह अनुभव करता है कि भाग्य की विवशताओं के आगे मनुष्य का नत होना ही पड़ता है। जीवन के उतार चढ़ाव को भी वह संवेदनशील स्वर में अभिव्यक्ति देता है। कुमार भविसयत्त अपनी पत्नी से कहता है '*सुन्दरी! जीवन के गत उतार चढ़ाव* पर खेद करना व्यर्थ है, क्योंकि यदि मनुष्य जीवन है तो उसमें संयोग वियोग होगा ही? मैं मानता हूँ कि यौवन को जरा रूपी डायन खा जाती है परन्तु मनुष्य की सबसे बड़ी हार इस बात में है कि वह अपनी जिन्दगी से ऊब जाय।'

(१६) आलोच्य साहित्य में समाज और संस्कृति का जो चित्र अंकित है वह यथार्थ से अधिक दूर नहीं है। भारतीय जीवन का यह यथार्थ क्या है? यह यथार्थ है कि भारत में आध्यात्मिक विचारधाराओं में जितने परिवर्तन हुए उतने समाज व्यवस्था और आर्थिक जीवन में नहीं। इसलिए आलोच्य साहित्य में युगीन समाज का जो चित्र अंकित है वह इतना स्पष्ट है कि किसी भी युग के बारे में 'फिट' किया जा सकता है? उदाहरण के लिए अपभ्रंश कवियों ने कलियुग का जो चित्र खींचा है वह तुलसीदास के कलियुगीन चित्र से बहुत कुछ मिलता-जुलता है इसका कारण है कि मध्ययुग में भारतीय समाज के मूल्यों में जो ठहराव आ गया था उसने अपनी सीमाएँ और *अभिव्यक्तियाँ एकदम स्थिर कर ली थी। यथार्थवादी कोण से देखा* जाय तो आलोच्य साहित्य में राजन्य वर्ग और श्रेष्ठि वर्ग का बोलबाला है दूसरा कोई वर्ग है, तो दरिद्र गरीब निम्न निम्नवर्गीय जनता—जो अपने ही पाप, कर्मों से अभिशप्त जीवन बिताने के लिए विवश है। संयुक्त परिवार के शीतयुद्ध बहुपत्नी प्रथा राजनैतिक युद्ध, कन्यापहरण स्त्रियों की दयनीय स्थिति का वास्तविक चित्रण इस साहित्य में है। समाज जाति उपजातियों और कुरीतियों में बँट फँस

चुका था। राज समाज—विशेष रौब दौब रखता था। जुआ और मल्लयुद्ध विशेष पसन्द किये जाते थे। हिंसक पूजाविधान भी थे। भक्ति का उदय हो रहा था तन्त्र मन्त्र की भी धार था। सबसे बड़ी बात तो यह है कि चीजों में मिलावट उस युग में भी होती थी। दार्शनिक वैरविरोध भी अपने उग्रतम बिन्दु पर था। धर्म आडम्बरपूर्ण था, साधना से अधिक वह प्रदर्शन की वस्तु था। इस प्रकार, इस साहित्य की सबसे बड़ी देन यह है कि उसमें काव्य की शास्त्रीय और लौकिक परम्पराओं का निर्वाह है पुरानी और नयी काव्य विधाओं के बीच एक सेतु है और यह कि उसने युग की चिंता, भाषा काव्य रूप और अन्य साधनाओं का, धूमिल पर तथ्यपूर्ण चित्र हमें दिया है। चाहे हम यह न जानें कि भारतीय साहित्य का उद्गम, आदर्श की हिम गंगोत्री या यथार्थ की चट्टान से हुआ पर यह हम जानते हैं कि वह जो अपनी नाना धाराओं में बहता है वह इसी अपभ्रंश के धरातल में।

महाकवि स्वयम्भू

कवि स्वयम्भू—अपभ्रंश के आदि कवि तो नहीं परन्तु उसके महान् कवियों में प्रथम अवश्य हैं। कम से कम तीन पीढ़ियों से इनका घराना साहित्यिक घराना था। पिता का नाम मारुतदेव था और माता का पद्मिनी। सम्भवतः इनकी दो पत्नियाँ थीं, आइच्चाम्बा और सामिअब्बा। आइच्चाम्बा विदुषी और कवयित्री थी। पति की साहित्य साधना में उसका भी सक्रिय योगदान था। इनका बेटा त्रिभुवन स्वयम्भू भी कवि था और कहते हैं उसने अपने महान् पिता की अधूरी रचनाओं को पूरा किया। इसके विपरीत उन लोगों का मत है जो मानते हैं कि कवि की समस्त रचनाएँ सम्पूर्ण थीं। स्वयम्भू—भारत के उन भाग्यशाली कवियों में एक थे जिन्हें जीवन में फला-फूला घर यश और संतोष मिला। समाज में भी प्रतिष्ठा थी। सम्भवतः इनके काव्य में निराशा और कटुता से भरी पंक्तियाँ कम हैं।

वह सुदर्शन व्यक्तित्व वाले थे। वह अपने बारे में खुद कहते हैं 'मैं दुबला पतला नाक मेरी चिपटी और दाँत विरल विरल।' वह विचारशील, उदार और व्यवहारवादी थे। ईसा की आठवीं और नवीं सदियों के बीच, किसी कालबिंदु पर उस कवि स्वयम्भू किस प्रान्त के थे इस सम्बन्ध में निश्चित रूप से कुछ कहना कठिन है परन्तु इतना निश्चित है कि उन्होंने अधिकतर कर्णाटक में रह कर साहित्य साधना की। उनकी अब तक कुल तीन कृतियाँ उपलब्ध हैं—रिट्ठणेमिचरिउ पउमचरिउ और स्वयम्भू छन्द। इनके अतिरिक्त एक दो ग्रंथ और उनके बताए जाते हैं। ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में स्वयम्भूछन्द का महत्व यह है कि वह लोकभाषा के छन्दों पर अधिकारपूर्वक विचार करने वाली पहली पुस्तक है। सिवाय इसके उसका महत्व इस लिए भी है क्योंकि इसमें पूर्ववर्ती और सहगामी अपभ्रंश कविता के नमूने सुरक्षित हैं।

कवि की रचना की मुख्य प्रेरणा जिनभक्ति है। रामायण—उसके लिए आत्माभिव्यक्ति का काव्य है। रामकथा को वह पुण्य से पवित्र कथा मानता है जिसके गान से उन्हें कीर्ति मिलती है। अपनी रामकथा को कवि नदी का रूपक देता है। इनके काव्य में भक्ति की तन्मयता और काव्य की सुन्दरता दोनों हैं। प्रकृति चित्रण और मनुष्य के स्वभाव की अच्छी परख इन्हें थी। परवर्ती अपभ्रंश कवियों ने स्वयम्भू का नाम बड़े आदर से लिया है।

महाकवि पुष्पदंत

अपभ्रंश काव्य का सबसे निराला और प्रतिभासम्पन्न हस्ताक्षर। कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण। पिता केशवभट्ट और माँ मुग्धा देवी। शव धम छोडकर जन धम म दीक्षित। एकान्तप्रेमी, उग्र और भावुक। पडिता म विवाद है कि वह दक्षिण के थे या उत्तर के। प्राचीन कवियो के बारे म, इस प्रकार के विवाद व्यर्थहीन हैं। क्योकि ये कवि किसी प्रान्त के कवि नही थे, अपभ्रश एक व्यापक काव्यभाषा थी उसम किसी भी प्रात का कवि लिख सकता था यह कहना भी गलत है कि 'पुष्पदत के काव्य म द्रविड भाषा के शब्द नही हैं। अन्त और बाह्य साक्ष्यो से यह सिद्ध है कि पुष्पदत ईसा की दसवी सदी म हुए और प्रसिद्ध राष्ट्रकूट नरेश कृष्ण ३ के सम कालीन थे। कृष्ण ने चोलराज पर विजय प्राप्त की थी। पुष्पदत ने भी इसका उल्लेख किया है तोडेप्पिणु चोलहो तणउ सीसु'।

महापुराण और दूसरी कृतियाँ रचने का कहानी स्वय कवि क शब्दो म यह है, एक साँझ वह थका मादा 'मलखेड' (मान्यखेट) राष्ट्रकूट राज्य की राजधानी पहुँचता है (शक स० ८९६), वहाँ मन्त्री भरत से उसकी भेंट होती है, उसी के अनुरोध पर कवि पुराण रचना म लगता है। बीच बीच मे—उसका मन उदास हो उठता परन्तु मन्त्री भरत उसे मना लेते।' एक जगह कवि लिखता है कि पहले मने भरव नामक शैव राजा की प्रशसा की थी, उससे उत्पन्न मिथ्यात्व को धोने के लिए म इस काम में लगा। वह कहता है—लो भरत, तुम्हारी अभ्यर्थना पर म जिनगुण स भरित कविता करता हूँ, धन के लिए नहीं, केवल तुम्हारे अकारण स्नेह के कारण, जिनपद भक्ति से मेरा कवित्व वसे हो फूट पडता है जसे आम के बौरो पर मधुमास मे कोयल कूक उठती है कानन मे भ्रमर गूँजन लगते हैं और नुक सुख स भर उठता है कवि सरस्वती की वदना के सदभ म जो कुछ कहता है उससे उसकी काव्य सम्बन्धी मान्यताएँ जानी जा सकती हैं भाषा प्रसन्न और गम्भीर छद और अलकार काव्य की गति और शोभा है। कवि ने बार बार अलकृता और रसभरी कथा की उपमा दी है वह काव्य म सबसे बडी वस्तु गहन अनुभूति को मानता है।

कवि का घरेलू नाम 'खण्ड' 'खण्डू जा' था। उनके साहित्यिक नाम थे अभिमानचिन्ह कविकुलतिलक सरस्वतीनिलय, काव्यपिसल्ल आदि। उनके व्यक्तित्व म विरोधी बातो का विचित्र सम्मिलन था। एक ओर वह अपने को कुक्षि मूर्ख कहते हैं और दूसरी ओर ताव मे आकर सरस्वती को यह चुनौती भी देते ह कि वह जायगी कहाँ? अपनी इस विरोधी प्रकृति के कारण उन्होंने विरोधाभास और श्लिष्ट शली का अधिक प्रयोग किया है। उनके काव्य म श्लिष्ट सरल समस्त व्यस्त, सभी प्रकार की शलियाँ प्रयुक्त हैं दशन और अनुभूति का सुन्दर समन्वय है। मात्रिक और वर्णिक छन्दो का कृत्रिम भेद इन्होने अपने काव्य म दूर कर दिया है। महापुराण जसहर चरिउ और णाय कुमार चरिउ उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं।

धनपाल

भविसयत्तकहा के रचयिता धनपाल धक्कड़ वंश के थे। पिता का नाम माएसर और माँ का नाम धनश्री था। धक्कड़ पश्चिमी भारत की वैश्य जाति में हुए हैं अतः कवि को राजस्थानी होना चाहिए। मेरी समझ में इन्हें दसवीं सदी का मानना—असंगत नहीं। कवि के अनुसार भविसयत्तकहा—चरित्र कीर्तन है अर्थात् कथा नाम होते हुए भी है चरित ही। कवि बार बार अपने को सरस्वती पुत्र कहता है फलतः दूसरों की अपेक्षा वह अपने काव्य को सौन्दर्य के निकट रखना अधिक पसन्द करते हैं यद्यपि इनके कथा का नायक राजा न होकर वैश्य है परन्तु उसका परिवार राज्य से घनिष्ठतम रूप से सम्बद्ध है? धार्मिक दृष्टि से भविसयत्तकहा का उद्देश्य—श्रुतपंचमी के व्रत का माहात्म्य दिखाना है परन्तु इसकी कथा भी पूर्ण पारिवारिक है घटनाओं में उतार-चढ़ाव, सम्बन्ध निर्वाह भावों का घात प्रतिघात आदि का सुन्दर समावेश है? भविसयत्तकहा मनुष्य की भवितव्यता की प्रतीककथा है घटनाओं के विकास में स्वाभाविकता है। यह पहला चरित काव्य है जिसमें पात्रों के व्यक्तित्व का शुद्ध स्वतन्त्र अस्तित्व है उदाहरण के लिए पति भविस—अंगीकार करने के पूर्व भविष्यानुरूपा की परीक्षा लेता है तो दूसरे विवाह के प्रसंग पर वह भी—अपने पति से आश्वासन लेना नहीं भूलती। इसी प्रकार अपमानिता कमला तब तक स्थायी रूप से धनवइ के घर नहीं जाती जब तक वह माफी नहीं माँग लेता। अतः वस्तु विन्यास चरित्र चित्रण और वस्तुवर्णन कौशल के कारण—यह एक महत्त्वपूर्ण चरित काव्य है।

कवि धाहिल

'पउम सिरि चरिउ' के रचयिता श्री धाहिल—अपने को संस्कृत महाकवि माघ का वंशज मानते हैं। वह श्रीमाल वंशीय गुजर वैश्य थे। पिता का नाम पार्श्व और माता का महामती सुराइ। कवि के व्यक्तिगत जीवन की कुछ भी जानकारी नहीं मिलती। अनुमानतः वह १०वीं के आसपास हुए। पउम सिरि चरिउ' छोटी रचना होते हुए भी—धाहिल में कवि होने का अहसास ही नहीं कराती—बल्कि पाठक के अंतमन पर एक छाप छोड़ती है। धाहिल ने प्रस्तावना में स्वीकार किया है कि महासती दुलभा की प्रेरणा से इस काव्य की रचना की गई। कवि की वर्णन क्षमता, भावाभिव्यक्ति और प्रकृति के रंग में मानवी भावनाओं के उतार चढ़ाव को रंग देने में जो सफलता मिली है वह बहुत कम कवियों को मिल सकी है। 'पउम सिरि चरिउ' की रचना का ध्येय उद्देश्य जैन कर्म सिद्धांत का परिपाक दिखाना है। कथावस्तु सम्मिलित जन परिवार से सम्बन्धित है शैली रम्य और रोचक है, कवि के शब्दों में 'मन ललित शब्दों में अवसार दिया है और मेरा काव्य तरुणी जन का तरह बहुविकार वाला है।" कवि का महत्व यह नहीं है कि वह पारिवारिक समस्या का धार्मिक हल खोजने का प्रयास करता है वरन्, यह है कि समस्या को रखते समय वह मनुष्य स्वभाव का यथार्थवादी दृष्टि से चित्रण करता है। एक धनी परिवार में विधवा लड़की की स्थिति का गृह कलह घरलू कूटनीति और नारी की स्थिति का चित्रण करता है, तो दूसरी ओर, वियोगिनी पद्मश्री की वियोग व्यंजना में प्रकृति का तादात्म्य भी दिखाता है। धाहिल का नाम दिव्य दृष्टि उचित था। उसे मनुष्य की अन्तर्भावनाओं की अच्छी पकड़ थी। वह अपनी कथा को कर्ण रसायन धर्मकथा कहता है।

पउम सिरि चरिउ में पद्मश्री के दो दो जन्मों की कहानी है, एक जन्म में वह जो बोती है दूसरे जन्म में वही काटती है। पहले जन्म में वह धनश्री है और असमय में विधवा हो जाने पर अपने भाइयों के पास रहती है वह घर की मालकिन है और कुछ भी करने के लिए स्वतन्त्र है। वह सोचती है कहीं भाभियां मेरे खिलाफ भाइयों के कान न भर दें जिससे मेरे दान पुण्य पर अंकुश लग जाय। वह अपना रंग गांठना चाहती है। बारी बारी से दोनों भाभियों को नम्र शील पालने और चोरी न करने का ऐसा कपट-उपदेश देती है कि भाई समझते हैं कि उनकी पत्नियां ऐसी हैं व उन्हें पीटते हैं, बाद में धनश्री भाइयों से कहती है कि— 'मैं तो उपदेश दे रही थी तुम सच मान बैठे।' यह उनका मेल करा देती है। इस प्रकार उसका रौब बढ़ता है। भाभियां उसकी गुलाम हैं। दूसरे जन्म में—वह पद्मश्री बनती है और न केवल पति वियोग उसे सहना पड़ता है वरन् कुशील और चोरी का कलंक भी अन्त में तप कर मुक्ति प्राप्त करती है।

अब्दुलरहमान (अद्दहमान)

'सदेश रासक' की उत्थानिका के अनुसार, यह पश्चिम देश म म्लेच्छ देश के मीरसन नामक जुलाहा के घर के कुलकमल थे। यह प्राकृतकाव्य और गीत विषय म विशेष प्रसिद्ध था। म्लेच्छ देश स कवि का अभिप्राय पश्चिमी भारत की किसी मुसलमान बस्ती स है क्योंकि उस समय तक मुसलमान सिंध पर कब्जा कर चुके थे। ऐतिहासिक तथ्यों के सन्दर्भ म शहाबुद्दीन गोरी के अभ्युदय की पूर्व सध्या म इनका जन्म हुआ था। डॉ० हजारीप्रसाद का विचार है कि अब्दुल रहमान के पिता मीरसेन मुसलमानी धर्म अगीकार कर, पश्चिम स पूर्व भारत म चल आये थे वहीं अब्दुल रहमान का जन्म हुआ। ऐसा उन्होंने आरद्ध पच्चाएसि अद्दहमाण और मिच्छ शब्दों के अर्थ की खींचतान पर स किया है। द्विवेदी जी का विचार इसीलिए मान्य नहीं किया जा सकता क्योंकि समूची रचना म पूर्वीपन कहीं भी नहीं है।

इसम सदेह नहीं कि सदेश रासक' की रचना मध्यम श्रेणी के पाठक के लिए है, जो मुक्तक शृगार को अधिक पसन्द करते थे। कवि की वर्णन पद्धति कहीं-कहीं शास्त्रीय है अत उसे विशुद्ध लोक कवि स्वीकार नहीं किया जा सकता।

कवि रहमान का सबसे बड़ा महत्त्व यह है कि वह सधिकाल म जन्म मुसलमान होकर भी अपभ्रश म लिखने वाले प्रथम मुसलमान कवि हैं। उनका काव्य रचना के माध्यम भारतीय हैं। उसम साहित्यिकता और लौकिकता का सुन्दर मेल है। प्रकृति का उद्दीपक चित्रण है कुछ सूक्तियाँ भी हैं। उनका प्रेम सासारिक और सम है।

सदेश रासक—वस्तुत एक मुक्तक विप्रलभ काव्य है। यह एक प्रतिक्रियात्मक काव्य है जिसम विक्रमपुर की एक वियोगिनी एक पथिक स अपने विरह के उद्गार व्यक्त करती है। पथिक स कहने का अर्थ यह है क्योंकि वह एक लेख पत्र लेकर मुलतान स खभायत जा रहा था। तीन प्रकार के इस काव्य म भी कथा की काव्य की रूढ़ियों का परिपालन है। सदेश कथन स अधिक उसम प्रतिक्रिया अधिक है, बीच-बीच म वह उद्धरण भी देता है। डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी—रासक हान से गेय समझते हैं (हिन्दी साहित्य)। रासक नाम को लेकर हिन्दी आलोचकों के मन म इस प्रकार की विचार वाले काव्यों की जो भ्रान्त धारणा घर कर चुकी है, यह उसी का परिणाम है। अब्दुर्रहमान यदि पूर्व के होते, तो उनकी भाषा म कुछ पूर्वीपन होता। सदेश रासक का वातावरण भारतीय है उसम विदेशी प्रभाव कुछ भी नहीं है उनकी अपभ्रश पश्चिमी अपभ्रश है। जिस रूप म सदेश रासक है—उसम उसका महत्त्व कम नहीं होता। वह एक ऐसे मुसलमान कवि की रचना है जिसने हाल ही म धर्म परिवर्तन किया होगा, इसम शुद्ध रामायण लोकोक्तियों के साथ उहात्मक उक्तियाँ भी है प्रकृति चित्रण म जीवन के नित्य व्यापारों का समावेश हैं। पर है यह 'पाठ्य काव्य' ही।

सरहपाद

'सरहपाद' नई भाषाओं और छन्दों के युग के आदि कवि हैं, संत सिद्ध परम्परा के आदि सिद्ध होकर भी आध्यात्मिक तौर पर वह नई दिशा देने वाले हैं, उन्हें द्वितीय बौद्ध कहकर लोग अतिशयोक्ति से काम नहीं लेते।' यह कथन है स्व० महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन का। इससे स्पष्ट है कि सरहपाद का व्यक्तित्व असाधारण व्यक्तित्व था। कहा जाता है कि पूर्वीप्रदेश के किसी राजा कसबे में एक ब्राह्मण परिवार में उन्होंने जन्म लिया। यह कहना कठिन है कि वह परिवार बौद्ध था या ब्राह्मण।

सरहपाद स्पष्टतः जातिवाद और साम्प्रदायिक कट्टरता के घोर विरोधी थे। वह आठवीं सदी के उत्तरार्ध के सबसे प्रबल व्यक्तित्व के व्यक्ति थे। सरहपाद के गुरु थे-हरिभद्र, जो प्रसिद्ध पालवंशी राजा धर्मपाल (७७० ८१३) के समकालीन थे। राजा धर्मपाल के अन्तिम समय शबरपाद के शिष्य लुईपाद के प्रमुख शिष्य के रूप में प्रसिद्ध हो चुका था। वह धर्मपाल का सचिव था और उन्हीं की अनुमति से उसने घर-बार छोड़ा था। इनसे सिद्ध है कि सरहपाद उससे दो पीढ़ी पहले चल बसे होंगे। इस प्रकार उनकी असाधारणप्रवृत्तियों का काल आठवीं सदी का उत्तरार्ध ठहरता है।

सरहपाद, का पहला नाम राहुलभद्र था और तब वह नालंदा विश्वविद्यालय में थे वज्रयान के प्रथम सिद्ध होने के कारण वह सरहपाद कहलाए। इनके पहले इस परम्परा में कई सिद्ध हो चुके थे परन्तु सरह ने सिद्ध विचारधारा को एक नया मोड़ दिया। उनके समय नालंदा में—दूसरी धाराओं के साथ अशोक के समय की विनय परम्परा भी थी—जिसमें भिक्षु को स्त्री छूना वर्जित था वह मद्यपान नहीं कर सकता था शरीर पर चीवर पहनना पड़ता था। राहुल ने इसका खुला विद्रोह किया उन्होंने एक शरकार की कन्या को रख लिया। वह, महामुद्रा (शरकार कन्या) के साथ खुलेआम घूमते थे।

सरहपाद ने ध्यान के साथ करुणा पर जोर दिया। करुणा के बिना ध्यान (शून्यता-योग) व्यर्थ है। उनकी अपभ्रंश रचनाओं को दोहा कोश या दोहागीति कहते हैं। उनकी प्रसिद्ध रचना दोहा चर्या गीति' में दोहों की अपेक्षा चौपाइयाँ अधिक हैं। सांकृत्यायन के अनुसार 'दोहा कोश' का उस समय अर्थ था 'दो पंक्ति वाले छंदों की कविता।' 'सात दोहा कोश—सिद्धचर्या और वज्रयानी योग का वेद मान जाते हैं। सरह की कविता में उलटवासियाँ और व्यंग्योक्तियाँ हैं। असाधारण प्रतिभा वाले इस महाकवि की कविता का संग्रह इनके शिष्यों ने किया। सरह मूलतः रहस्यवादी कवि हैं और उनके श्लिष्ट पदों में—आध्यात्मिकता के साथ कामुकता भी प्रकट होती है बाद में इस प्रकार की कविता वामाचार में सहायक हुई। एक उदाहरण है

'ऊँचे ऊँचे पर्वत पर रहता है एक शबरबाला। जिसके सिर पर है मोर पंख और गले में है गुंजामाला। उसका प्रिय शबर प्रेम में मतवाला और पागल है। अरी शबर तू हल्ला गुल्ला मत कर तेरा अपना घरवाला सहज सुन्दर है।' (दोहा कोश पृष्ठ २४)

इस प्रतीक शैली का आशय यह है कि शबर साधक है? शबरी है नैरात्मा गणिका रूप शून्यता। शबर साधक—उसी का भुजंग और जिज्ञासा है? उसका साक्षात्कार ही वस्तुतः महासुख की अनुभूति है।'

सरह विचारों की दुनिया के विद्रोही थे। और उन्होंने अपने युग के धार्मिक सम्प्रदायों और आडम्बरों का खुलकर खंडन किया। सरह अपनी समस्त रहस्यवादी विचारधारा के बावजूद सहज नैसर्गिक जीवन के पक्षपाती थे। वे सहजवाद के पहले आचार्य थे उन्होंने सांसारिक भोगों को नहीं उसमें अपनी आसक्ति को त्याज्य मानते थे। चित्त की अपार शक्ति में उनका विश्वास था और उनका कहना था कि मन को बांध रखना बहुत कठिन है? उन्होंने आचार का महत्व कम कर करुणा और शून्यता पर अधिक जोर दिया।

दार्शनिक सन्दर्भ में सरहपाद असंग के योगाचार और नागार्जुन के माध्यमिक (शून्यवाद) से सम्बद्ध हैं। असंग के अनुसार क्षणिक विज्ञानवाद का मूल तत्व आलय विज्ञान है मूल तत्व एक ही है वह है विज्ञान (चेतना) जो अपने क्षणिक रूप में सनातन है यह विज्ञान (चेतना) दो प्रकार की है।

(१) वैयक्तिक विज्ञान—प्रवृत्ति विज्ञान

(२) महाविज्ञान —आलयविज्ञान।

दृश्यादृश्य पदार्थ, इसी आलय विज्ञान का सहज परिणाम है। वह सर्वत्र व्यापी अलौकिक तत्व आलय विज्ञान है जो समुद्र की तरह अपनी क्षणिकता के कारण सदैव तरंगित रहता है। यह तरंगप्रवृत्ति ही विज्ञान—यानी चेतना है? सरह ने इस प्रवृत्ति का प्रतीक तरुवर को माना है। वे कहते हैं—

आलयतरु उमन्द

हिण्डइ अग-च्छाच्छन्द

आलय विज्ञान रूपी तरुवर विकसित है। हिलता डुलता हुआ वह स्वच्छन्द है? स्वच्छन्द इसलिए क्योंकि उसको संचालित करने वाली दूसरी शक्ति नहीं। सरह 'आलय विज्ञान' को मूल तत्व मानते हैं और उसे रहस्यमय रूप देना चाहते हैं? अतः उनके अनुसार यह मूल रहित तत्व शून्य भी हो सकता है? शून्यता की इस स्थिति में भव और निर्वाण एक है इस प्रकार उन्होंने निर्वाण का महत्व कम कर ऐहिक जीवन का मूल्य बढ़ा दिया। उन्होंने कहा कि संसार सहजानंद पूर्ण है और मनुष्य का शरीर ही तीर्थ है?

योगीन्द्र (जोइन्दु)

शान, उदार और विशुद्ध अध्यात्मवादी कवि थे। इन्होंने अपने विषय में कुछ नही लिखा, जोइन्दु के समय के बारे मे भी मतभेद है। कुछ विद्वान इन्हें ई० पू० सदी का मानते हैं जब कि कुछ ईसवी छठी सदी का और यह मानने का मुख्य कारण है जोइन्दु के एक दोहे 'काल लहेप्पिणु' का चड के 'प्राकृत लक्षण' मे उद्धत होना। चू कि चड सातवी के उत्तराध म हुए—अत जोइन्दु को इसके पूव होना चाहिए। परन्तु भाषा के विचार से जोइन्दु का समय, प्रस्तावित समय से बाद में होना चाहिए, जो भी हो अपभ्रश के विशुद्ध अध्यात्मवादियो मे जोइन्दु सबसे पुरान हैं, उनकी रचनाएँ उनकी आध्यात्मिक अनुभूतियो की अभिव्यक्तियाँ हैं एक विशुद्ध अध्यात्मवाद के एक छोर पर जोइन्दु हैं और दूसरे पर सरहपाद। जोइन्दु बाह्य आडम्बर के घोर विरोधी हैं, वह पारिभाषिक शब्दो का अध्यात्मपरक अथ करते हैं। 'परमात्म प्रकाश' और 'योगसार' इनके प्रामाणिक उपलब्ध ग्रथ हैं।

मुनि रामसिंह

जोइन्दु की परम्परा के हैं। यह भावुक और उग्र अध्यात्मवादी थे। इनका अनुमानित समय १०वीं और ११वीं के मध्य है। शव धम और तान्त्रिक पारिभाषिक शब्दों का इन्होंने खुलकर प्रयोग किया है। रूढियो, धार्मिक आडम्बर और पाखड के यह कटु आलोचक थे। अपभ्रश साहित्य के कुछ समीक्षक इस धारा को जन रहस्य वादी धारा कहते हैं। असल में भारतीय चिंताधारा के विकास के बारे म जो थीसिसें प्रस्तुत की जाती रही हैं वे ही गलत हैं। वह एक ही चिन्ता का स्वाभाविक विकास न होकर नाना चिन्ता प्रतिचिन्ता की क्रिया प्रतिक्रिया का परिणाम है। ऐसा समझा जाता है कि रामसिंह राजस्थानी थे परन्तु विशुद्ध अध्यात्मवादी कहीं के नही होते। विशुद्ध आध्यात्मवाद का एक रूप उपनिषदा म देखा जा सकता है परन्तु उसम चिंतन प्रबल है जबकि मध्ययुगीन अध्यात्मवाद म अनुभूति। 'पाहुड दोहा' का अथ है—'दोहो का उपहार' या दोहो म प्रतिपादित आध्यात्मिक विचार। इसम शलियाँ है उपदश अन्योक्ति और प्रतीक। और समग्र प्रतिपाद्य है अनुभूति के माध्यम से आत्मा का साक्षात्कार करना। हिन्दी के कुछ विद्वान आलोच्य युग को अंतर्विरोधो का युग मानते हैं और कुछ दो विरोधी काव्य प्रवृत्तिया का। कुछ इसम दो

के मिलन का युग मानते हैं। मेरे विचार में यह, दो व्यवस्थाओं या संस्कृतियों के संघर्ष का युग न होकर—दो दृष्टिकोणों के संघर्ष का प्रतीक काव्य है। यह संघर्ष किसी भी संस्कृति और किसी भी युग में सम्भव है। सुदूर परवर्ती संतकाव्य साधना के संदर्भ में—विशुद्ध अध्यात्मवादियों का श्रेय यह है कि उन्होंने आलोचनात्मक दृष्टिकोण लिया, परलोक की बजाय जीवन में मुक्ति की कल्पना की आसक्ति से ऊपर उठने का भरपूर व तमाशा दिखाया, आत्मा-परमात्मा के मिलन के लिए प्रेमी प्रेयसी की कल्पना की सम्प्रदायवाद और धार्मिक आडम्बरों का खुला विरोध किया।

देवसेन

असली सवयधम्म दोहाकार कौन है ? यह निर्णय नहीं किया सकता। कुछ विद्वान इसका लेखक देवसेन को मानते हैं जब कि कुछ लक्ष्मीचन्द्र को। देवसेन—जैसा कि कृति के नाम से ही जाना जा सकता है कि श्रावक धर्म का उल्लेख करते हैं। वह धर्म के आचरण पक्ष के कवि हैं और धर्म का उद्देश्य उनके लिए लौकिक समृद्धि और श्रेयता प्राप्त करना है। यही कारण है कि पुण्य और दान का बड़ा व्यापक महत्व उन्होंने प्रतिपादित किया है।

दोहा कोश-गीति

सिद्ध सरहपाद

सरह भणइ जग वाहिअ आलें ।
णिअ सहाव ण लक्खिअ नालें ॥१॥

करुणा सहित भावना

अहवा करुणा केवल साहअ ।
सो जमन्तरे मोक्ख ण पावअ ॥
जइ पुण वेएणवि जो जण साक्कअ ।
णउ भव णउ णिव्वाणें थाक्कअ ॥२॥
जइ पच्चक्ख कि झाणे कीअइ ।
अहवा भाण अन्धार साधिअअ ॥
सरह भणइ मइ कड्ढिअ राव ।
सहज सहाउ णउ भावाभाव ॥३॥

चित्त

चित्तेक चित्त सअल बीअ भव णिव्वाण जम्म विफुरंति ।
त चिन्तामणिरूअ पणमह इच्छाफल देइ ॥४॥
वज्झइ कम्मेण जणो कम्मविमुक्केण होइ मणमुक्को ।
मणमोक्खेण अणुअर पाविज्जइ परम (णि) व्वाणें ॥५॥

---

१ सरह कहते हैं कि दुनिया भ्रम में बह रही। मूढ़ अपना स्वभाव नहीं जानता।

२ जो केवल करुणा की साधना करता है वह जन्मान्तर में भी सुख नहीं पाता। जो जन दोनों को साध सकता है वह न निर्वाण में थकता है और न संसार में।

३ यदि वह प्रत्यक्ष है तो ध्यान से क्या करिए। अथवा ध्यानान्धकार को साधिए। सरह कहते हैं मैं पुकार कर कहता हूँ कि सहज स्वभाव न भावरूप है न अभाव रूप।

४ चित्त एक है वह सबका कारण है जन्म और निर्वाण दोनों उसमें चमकते हैं। इच्छाफल स्वरूप उसे नमन करो वह इच्छाफल देता है।

५ कर्म से जन बंधता है कर्ममुक्त होने पर, मन मुक्त होता है और मन की मुक्ति से ही पाता है जन मोक्ष।

जाव ण अप्पउ पर परिआणसि।
ताव कि देहाणुत्तर पावसि॥
एमइ कहिउ भान्ति ण भावा।
अप्पउ अप्पा बुज्झहि तावा॥२०॥

विसअ रमन्त ण विसअहि लिप्पइ।
उअल हरन्त ण पाणी छिप्पइ॥
एमइ जोइ मूल सरन्तो।
विसअ ण बाहइ विसअरमन्तो॥२१॥

पडिअ सअल सत्थ वक्खाणअ।
देहहि बुद्ध वसन्त ण जाणअ॥
अवणागमण ण तेन वि खण्डिअ।
तउ णिलज्ज भणइ हउ पण्डिअ॥२२॥

सहज अवस्था

जत्तइ चित्तहु विप्फुरइ तत्तइ णाहु सरूअ।
अण्ण तरंग कि अण्णु जलु भवसम खसम सरूअ॥२३॥

ण तम वाणे गुरु कहइ, णउ त बुज्झइ सीस।
सहज महारस हलें अमिअरस, कासु कहिज्जइ कीस॥२४॥

---

२० जब तक नहीं जाने आपन पर को तब तक कैसे अनुत्तर देह को पा सकता है। ऐसा कहा गया है इसमें भ्रान्ति नहीं उस आत्मा आत्मा को पहचान लेता है।

२१ विषय का भोग करता है विषयों में लिप्त नहीं होता। कमल तोड़ता परन्तु पानी से नहीं छूता। इस प्रकार योगी मूल को गहता है विषय में रमता हुआ भी उससे बाधक नहीं होता।

२२ पण्डित सब शास्त्रों का व्याख्यान करता है परन्तु देह में बसते बुद्ध को नहीं जानता। इससे आना जाना नहीं मिटा फिर भी निर्लज्ज अपने को पण्डित कहता है।

२३ सहज अवस्था—जब तक चित्त चमकता है तब तक स्वरूप नहीं जाना जा सकता। क्या तरंग अलग है और पानी अलग है? स्वरूप संसार और शून्य दोनों के समान है।

२४ न तो गुरु वचन से कहता है और न शिष्य उसे समझ सकता है। हे सखी! सहज स्वभाव अमृत रस है, वह किससे कहा जाय।

जतइ पइसइ जलेंहि जलु, तत्तइ समरसु होइ ।
दोस गुणाअर चित्तता वढ पडिवक्ख ण होइ ॥ २५॥

रिद्धि सिद्धि हलें वेरिण न काज्ज ।
पाप पुण्ण तहि पाडहु वाज्ज ॥
सो अ (?)णुत्तर बुज्झहिं जव्वें ।
सरह भणइ जग सिज्झइ तव्वें ॥२६॥

ऐहिकतावादी कोण

एत्थु से सरसइ सोवणाह, एत्थु से गङ्गासाअरु ।
वाराणसि पआग एत्थु से चाँद दिवाअरु ॥२७॥
खेत्त पिट्ट उअपिट्ट, एत्थु मइ भमिअ समिट्ठउ ।
देहासरिस तित्थ, मइ सुणउ ण दिट्ठउ ॥२८॥
जग उपपाअणे दुक्ख नहु, उप्पण्णउ तहिं सुहसार ।
उप्पण उप्पाअ णहिं लोअ ण जाणइ सार ॥२९॥

बुद्ध नि वअणें एत्तवि धम्म ।
लोआचारें एत्तवि कम्म ॥
सअल तत्त सहावें देक्खइ ।
लोआचार जे तहिं उएक्खइ ॥३०॥

---

२५ जितना जल जल म समा जाता है, उतना ही समरस होना चाहिए, दोष और गुणो का आकर चित्त तव विपरीत नहीं होता ।

२६ हे सखा ऋद्धि और सिद्धि दोना से काम नहीं। पाप पुण्य पर वज्र पडे । वही अनुत्तर को समझ सकता है और वही तव सिद्ध हो सकता है—ऐसा कहते हैं ।

२७ यहा (?ह) सरस्वती है, यहीं सोमनाथ है यहीं है वह गगासागर, यही है वाराणसी और प्रयाग, चन्द्रमा और सूरज ।

२८ यह क्षेत्र पीठ उपपीठ, म समाधि पर भटका। देह क समान तीर्थ, न मैने देखा और न मैंने सुना ।

२९ जग में उत्पन्न होने म बहुत दुख है उत्पन्न होने पर ही सुखसार हैं उत्पन्न और उत्पाद कुछ नहीं है, दुनिया यह तत्त्व सार नहीं समझती ।

३० बुद्ध के वचन से यही धर्म है लोकाचार म यही कर्म है जो सकल तत्त्व को अपने स्वभाव म देखता हैं तब वह लोकाचार की उपेक्षा करता है ।

सहजयान

जइ पमाण विहि नम वउ लद्धउ भेउ।
जइ चण्डाल घर भुञ्जइ तओवि ण लग्गइ लेउ ॥३१॥

सहानुभूति

जिणवर-वअण पतिज्जहु मा-ई।
सरह भणइ मइ कहिअउ थाऍ॥
सहजें सहज वि जाहिअ जवें।
अचिंत जोएँ सिज्झइ तेॅ ॥३२॥

शून्य निरंजन

सुण्ण णिरञ्जण परम प जुइणोमाअ सहाव।
भावहु चित्त सहावता, जउ णासिज्जइ जाव ॥३३॥

परमपाद साधना

सुण्णहि सम्मे सुण्ण पउ।
तहि स धाण पइसरइ ॥
स त्र धम्म स लसम करीहमि।
समम सहावें चीअ द्ठवीहमि ॥३४॥
सरह भणइ एह दुइ पावहु।
तुरिअ दुक्ख सिन्धु णिवारहु ॥
एहु घर टठिअ महिला मणु मा।
एहु णु री मउ मण साँहि कदमा ॥३५॥

---

३१ यदि प्रमाद से या बुद्धि से ह सूत्र रहस्य जान लिया है फिर यदि चण्डाल के घर भी खाता है तो ह सूत्र को भी पाप नहीं लगता।

३२ जिनवर-बुद्ध के वह वचन सत्य समझो। सरह कहता है कि मने बाँचकर ही यह कहा है। जब सहज न सत्य को जान लिया अचिन्त्य योग में तुम तभी सिद्ध हो गए।

३३ शून्य निरञ्जन परमपद है स्वप्न तुल्य स्वभाव। चित्त की इसी स्वभावता का ध्यान करो कि जब तक वह नष्ट नहीं होता।

३४ शून्य में शून्य पद है उसे सधान करते हुए प्रवेश करना चाहिए, सब तत्वों को जो प्रियतम बना लेते हैं और स्वभाव से चित्त को शून्य सम कर लेते हैं।

३५ इससे ही दोनों को प्राप्त हो तुरन्त दुःख और मृत्यु को दूर करो। इसी घर में स्थित महिला मनुष्य, ह ममा कम यह स्वाद नहीं देता।

पासें पाम भमन्ते अन्छह ।
सरह भणअ तसु घरिणी णेन्छअ ॥
साद्‌ के खाद्धउ सअल जगु ।
सद्‌ का ण केणवि खाद्ध ॥३६॥



३६ पास पास रहते हुए घूमते हुए भी सरह कहते हैं, उस घरनी को नही चाहते। शका ने ही सब जग खा लिया, शका को कोई नही खा सका।

जोइन्दु

गउ संसारि वसंताहं सामिय, कालु अणंतु।
पर मइं किं पि ण पत्तु सुहु दुक्खु जि पत्तु महंतु ॥१॥

जसु अब्भंतरि जगु वसइ, जग अब्भंतरि जो जि।
जगि जि वसंतु वि जगु जि णवि मुणि परमप्पउ सो जि ॥२॥

अप्पा जणियउ केण ण वि अप्पें जणिउ ण कोइ।
दव्व सहावें णिच्चु, मुणि, पज्जउ विणसइ होइ ॥३॥

जीवहं कम्मु अणाइ जिय जणियउ कम्मु ण तेण।
कम्में जीउ वि जणिउ णवि, दोहिं वि आइ ण जेण ॥४॥

बंधु वि मोक्खु वि सयलु, जिय जीवहं कम्मु जणेइ।
अप्पा किंपि वि कुणइ णवि णिच्छउ एउ भणेइ ॥५॥

देहहं पेक्खिवि जर-मरणु मा भउ जीव करेहि।
जो अजरामरु बंभु परु, सो अप्पाणु मुणेहि ॥६॥

---

१ सामिय—स्वामी। किं पि ण—कुछ भी नहीं। सो जि—वही। दव्वसहावें—द्रव्य के स्वभाव से। अणाइ—अनादि। जणियउ—जनित उत्पन्न किया। कुणइ—करता है। णिच्छउ—निश्चय से। भणइ—कहता है।

२ जिसके भीतर जग रहता है और जो जग के भीतर रहता है, लेकिन जो जग के भीतर रहकर भी जग में नहीं रहता उसी को परमपद समझो?

३ आत्मा को किसी ने उत्पन्न नहीं किया, और न आत्मा ने किसी को उत्पन्न किया। द्रव्य स्वभाव से वह नित्य है पर्याय से वह अनित्य है?

४ जीव का कर्म अनादि है हे जीव? उसने कर्म पैदा नहीं किया कर्म ने भी जीव पैदा नहीं किया इसलिए दोनों आदि नहीं हैं।

५ जीव बंध और मोक्ष दोनों कर्म करता है आत्मा कुछ नहीं करता यह निश्चय से कहा जाता है?

६ पेक्खिवि—देखकर। बंभु—ब्रह्म। अप्पाणु—अपने को।

मेल्लिवि सयला अवक्खडी, जिय, णिच्चितउ होइ।
चित्तु णिवेसहि परम पए, देउ णिरंजणु जोइ ॥७॥

जोइय, णिय-मणि णिम्मलए पर दीसइ सतु।
अवरि णिम्मलि घण रहिए भाणु जि जेम फुरंतु ॥८॥

राए रंगिए हियडए देउ ण दीसइ संतु।
दप्पणि मइलए बिंबु जिम, एहउ जाणि णिभंतु ॥९॥

जहिं भावइ तहिं जाइ जिय, जं भावइ करि तं जि।
केम्वइ मोक्खु ण अत्थि पर, चित्तहं सुद्धि ण जं जि ॥१०॥

सिद्धिहं केरा पथडा, भाउ विसुद्धउ एक्कु।
जो तसु भावइ मुणि चलइ, सो किम होइ विमुक्कु ॥११॥

बुज्झइ सत्थइं तउ चरइ, पर परमत्थु ण वेइ।
ताव ण मुंचइ जाम णवि इहु परमत्थु मुणेइ ॥१२॥

चेल्ला चेल्ली पेत्थियहिं तूसइ मूढु णिभंतु।
एयहिं लज्जइ णाणियउ बंधहं हेउ मुणंतु ॥१३॥

सता विसय जु परिहरइ, बलि किज्जउ हउ तासु।
सो दइवेण जि मुंडियउ, सीसु खडिल्लउ जासु ॥१४॥

मोक्खु म चिंतहि जोइया, मोक्खु न चिंतउ होइ।
जेण णिबद्धउ जीवडउ मोक्खु करेसइ सोइ ॥१५॥

'परमप्पयास'

णिम्मलु णिक्कलु सुद्ध जिणु णिण्हु बुद्धु सिव संतु।
सो परमप्पा जिण भणिउ एहउ जाणि णिभंतु ॥१॥

---

७ अवक्खडी—झंझट। णिच्चितउ—निश्चिंत।

८ घण रहिए—घन रहित अवरि—आकाश में, फुरंतु—चमकता है।

१० केम्वहि—किसी भी तरह चित्तहं—चित्त की।

११ सिद्धहं केरा—सिद्धों का विमुक्कु—विमुक्त।

१२ सत्थइं—शास्त्रों को। वेइ—जानता है। (वृत्ति)

१३ तूसइ—संतुष्ट रहता है, णाणियउ—ज्ञानी, हेउ—हेतु कारण।

१४ सता—विद्यमान। बलि किज्जउ—बलिहारी करता हूं।

१५ करेसइ—करेगा।

जो परमप्पा सो जि हउं, जो हउं सो परमप्पु ।
इउ जाणेविणु, जोइया, अण्णु म करहु वियप्पु ॥२॥

जाम ण भावहि, जीव, तुहु, णिम्मल अप्प सहाउ ।
ताम ण लब्भइ सिव गमणु जहिं भावइ तहिं जाउ ॥३॥

वउ तउ संजमु सीलु जिय ए सव्वइ अकयत्थु ।
जाव ण जाणइ इक्क परु सुद्धउ भाउ पवित्तु ॥४॥

ताम कु-तित्थइ परिभमइ, धुत्तिम ताम करेइ ।
गुरुहु पसाएं जाम णवि, अप्पा देउ मुणेइ ॥५॥

पुण्णिं पावइ सग्ग जिउ, पावएं णरय णिवासु ।
वे छंडिवि अप्पा मुणइ, तो लब्भइ सिव-वासु ॥६॥

देहा देवलि देउ जिणु जणु देवलिहिं णिएइ ।
हासउ महु पडिहाइ इहु, सिद्धे भिक्ख भमेइ ॥७॥

आउ गलइ णवि मणु गलइ, णवि आसाहु गलेइ ।
मोहु फुरइ, णवि अप्प हिउ, इम संसार भमेइ ॥८॥

जेहउ मणु विसयहं रमइ तिमु जइ अप्प मुणेइ ।
जोइउ भणइ हो जोइयहु लहु णिव्वाणु लहेइ ॥९॥

धधइ पडियउ सयल जगि, णवि अप्पा हु मुणंति ।
तहि कारणि ए जीव फुडु, ण हु णिव्वाणु लहंति ॥१०॥

जइ लोहम्मिय णियड बुह तह सुणम्मिय जाणि ।
जे सुहु असुहु परिच्चयहिं, ते वि हवंति हु णाणि ॥११॥

---

२ सो जि हउ—वही मैं हूँ, जाणविणु—जानकर वियप्पु—विकल्प ।
३ अप्प सहाउ—आत्म स्वभाव, लब्भइ— पाया जाता है ।
४ वउ—व्रत, तउ—तप ।
५ धुत्तिम—धूर्तता पसाएँ—प्रसाद से ।
६ पुण्णि—पुण्य से । छंडिवि —छोड़कर ।
७ देहा देवलि—देहरूपी मंदिर, पडिहाइ—प्रतिभासित होता है, भिक्ख—भीख भमेइ—भ्रमण करता है ।
८ अप्प हिउ—आत्महित फुरइ—चमकता है ।
९ विसयहं— विषयों में । णिव्वाणु—निर्वाण ।
११ लोहम्मिय—लोह मय सुणम्मिय— —स्वर्णमय परिच्चयहिं—छोड़ते हैं ।

जं वडमज्झइ बीउ फुडु, बीयह वडु वि हु जाणु।
तं देहह देउ वि मुणहि, जो तइ-लोय पहाणु ॥१२॥
जो जिण सो हउ, सो जि हउ, एहउ णिभंतु।
मोक्खहं कारण जोइया, अण्णु ण तंतु ण मंतु ॥१३॥
योगसार

---

१२ तइलोय—त्रिलोक।
१३ णिभंत—निर्भ्रान्त तंतु मंतु—तंत्र मंत्र।

मुनि रामसिंह

गुरु दिणयरु, गुरु हिमकिरणु गुरु दीवउ गुरु देउ।
अप्पा परहं परपरहं जो दरिसावइ भेउ ॥१॥

उप्पलि चोप्पडि चिट्ठ करि देहि सु मिट्ठाहार।
सयल वि देह णिरत्थ गय जिह दुज्जणि उवयार ॥२॥

मणु मिलियउ परमेसरहो परमेसरु वि मणस्स।
विण्णि वि सम रस हुइ रहिय, पुज्ज चडावउ कस्स ॥३॥

भितर चित्ति वि मइलियइ बाहिरि काइ तवेण ?
चित्ति णिरंजणु को वि धरि मुच्चहि जेम मलेण ॥४॥

हत्थ अहुट्टहं देवली बालहं णाहि पवेसु।
संतु णिरंजणु तहिं वसइ णिम्मलु होइ गवेसु ॥५॥

हउँ सगुणी पिउ णिग्गुणउ, णिल्लक्खणु णीसंगु।
एक्कहिं अंगि वसंतयहं मिलिउ ण अंगहिं अंगु ॥६॥

देह गलंतहं सवु गलइ मइ सुइ धारणा धेउ।
तहिं तेहइ वढ अवसरहिं विरला सुमरहिं देउ ॥७॥

छह दंसण धंधय पडिय मणहं ण फिट्टिय भंति।
एक्कु देउ छह भेउ किय तेण ण मोक्खहं जंति ॥८॥

मुनि रामसिंह —२ उप्पलि—[illegible]। चोप्पडि—चुपड़कर। चिट्ठकरि—बैठाकर।
उवयार—उपकार।

३ विण्णि—दोनों। पुज्ज—पूजा।

४ भितर चित्ति—भीतर चित्त में।

५ हत्थ अहुट्टह—साढ़े तीन हाथ का।

७ मइ—बुद्धि। सुइ—श्रुति शास्त्र। तेहइ—[illegible]। अवसरहिं—अवसरों पर। धेउ—ध्येय।

ᳲ छह दंसण-धंधय पडिय—६ दर्शनों के धंधे में पड़ा हुआ।

पोत्था पढणि मोक्खु कहं मणु वि असुद्धउ जासु।
वहु यारउ लुब्धउ णवइ मूल ट्ठिउ हरिणासु ॥९॥
तित्थइ तित्थ भमेइ वढ, धोयउ चम्मु जलेण।
एहु मणु किम धोएसि तुहुँ मइलउ पाव मलेण ॥१०॥
अग्गइ पच्छइ दह दिहहिं जहिं जोवउ तहं सोइ।
ता महु फिट्टिय भतडी, अवसु ण पुच्छइ कोइ ॥११॥
जो पइ जोइउ जोइया तित्थइ तित्थ भमेइ।
सिउ पइ सहु हिंहिडियउ लहिवि ण सक्किउ तोइ ॥१२॥
मूढा जोवइ देवलइ, लोयहिं जाइं कियाइं।
देह ण पिच्छइ अप्पणिय, जहिं सिउ सतु ठियाइं ॥१३॥
जइ लद्धउ माणिक्कडउ, जोइय, पुहुवि भमत।
बधिज्जइ णिय कप्पडइ जोइज्जइ एक्कत ॥१४॥

देवसेन

दुज्जणु सुहियउ होउ जगि, सुयणु पयासिउ जेण।
अमिउ विसें, वासरु, तमिण, जिम मरगउ कच्चेण ॥१॥
इक्कु वि तारइ भव-जलहि बहु दायार सुपत्तु।
सु परोहणु एक्कु वि बहुय दीसइ पारहु णितु ॥२॥

---

९ पोत्था पढणि—पोथी पढ़ने से। बहुयारउ—बधकार। लुब्धउ—लुब्धक—शिकारी। मूलट्ठिउ—मूल स्थित। हरिणासु—हरिणों के।

१० तित्थइ तित्थ—तीर्थों से तीर्थ मइलउ—मला भतडी—भ्रांति।

१२ पइ सहु—तुम्हारे जैसा। हिंहिडियउ—घूमता फिरा। लहिवि ण सक्किउ—पा नहीं सका।

१३ मूढा—मूर्ख, लोयहिं—लोगों ने जिन्हें बनाया, पिच्छइ—पहचानता। अप्पणिय—अपनी। ठियाइं—स्थित हैं।

१ सुहियउ—सुहित कल्याण। सुयणु—सुजन, सज्जन। अमिउ—अमृत। वासरु दिन। मरगउ—मरकत। कच्चेन—काच से।

२ बहुदायार—बहु देने वाला दाता। सु परोहण—नाव।

धम्म-सरूवें परिणमइ चाउ वि पत्तहँ दिण्णु ।
साइय जलु सिप्पिहिं गयउ मुत्तिउ होइ रवण्णु ॥३॥

जइ गिहत्थु दाणेण विणु जगि पभणिज्जइ कोइ ।
ता गिहत्थु पंखि वि हवइ जें घरु ताहँ वि होइ ॥४॥

जं दिज्जइ तं पावियइ एउ ण वयणु विसुद्धु ।
गाइ पइण्णइ खडभुसइं किं ण पयच्छइ दुद्धु ॥५॥

धम्में जाणहिं जंति णर, पावें जाणि वहंति ।
घर पर गेहोवरि चढहिं कूप-खणय तलि जंति ॥६॥

धम्में इक्कु वि बहु भरइ, सइ भुक्खियउ अहम्मु ।
वडु बहुयइं छाया करइ तासु सहइ सइ घम्मु ॥७॥

एक्क वि इंदिय मोक्कलउ पावइ दुक्ख सयाइं ।
जसु पुणु पंच वि मोक्कला तसु पुच्छिज्जइ काइं ॥८॥

काइं बहुत्तइं जंपियइं, जं अप्पहु पडिकूलु ।
काइं मि परहु ण तं करइ एहु जि धम्महु मूलु ॥९॥

मणुयहं विणय विवज्जियहं गुणु सयल वि णासंति ,
अह सरवरि विणु पाणियइं कमलइं केम रहंति ॥१०॥

सावयायार

---

५ पावियइ—पाया जाता है, गाइ—गाय पइण्णइ—खाती है खडभुसइं—घास भूसा । पयच्छइ—देती है दुद्धु—दूध ।

६ जाणहिं—याना से, जंति—जाते हैं पावें—पाप से, वहंति—ले जाते हैं वहन करते हैं ।

७ बहु भरइ—बहुतों का तारता है सइ—स्वयं वडु—वट, बहुयहं—बहुतों को । छाया करइ—छाया करता है घम्मु—घाम ।

८ मोक्कलउ—मुक्त दुक्खसयाइं—सैकड़ों दुःख पुच्छिज्जइ काइं—पूछना क्या ?

९ काइं बहुत्तइं जंपियइं—बहुत कहने से क्या ?

१० विणय विवज्जियहं—विनय से रहितों के । केम रहंति—कैसे रहते हैं ।

'सन्देशरासक' समाप्त विप्रलंभ श्रृंगार [illegible] काव्य है। विरहिणी नायिका वियोग से व्याकुल है। पथिक को [illegible], वह अपना [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हो उठता है, [illegible] विचार [illegible] [illegible] है कि [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है, उसकी [illegible] प्रतिक्रिया उस पर हुई [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] वर्षा की समाप्ति के साथ [illegible] [illegible] समाप्त है और नायिका का [illegible] पर लौट आता है।

अब्दुलहमारन (अद्दहमान)

ऋतु वर्णन

गय गिम्हागमि पहिय णाहु जं पवसियउ
करवि करंजुलि सुइ समुद्द मइ णिवसियउ
तणु अणुअवि पजुट्टि विरह दवि तविय तणि
पालिवि पत्त णिय सुयणि धिसठुल विहलमणि ॥१॥
जन जीवइ निम घंचनु यहदनु साहसहइ
सहतदयहि घर तिदइ ण तैयह भग सहइ।
अइउ इउ धोमयलि पइनगु ज थइ,
तं मन्थरु विरहिणिहि अगु परिसिउ दहइ। ॥
तइ पत्तिहि संसग्गिहि चूयारसिरिय।
पीरपंति परियसयइ णियत्त णिरंतरिय।
लइ पल्लव फुल्लति समुट्ठिय, फरण तुरि,
हुउ किय णिरमाहार पहिय साहार वणि ॥ ॥

तणु घणसारिण चन्दणिण अलिन नि निरि पन्चति ।
पुण नि पिएण न उन्हवइ पियविरहग्गि निभन्ति ॥४॥

वर्षा

वगु मिल्हवि सलिलद्दहु तरुसिहरिहि चडिउ
तहवु करिवि सिहडिहि वर सिहरिहि रडिउ ।
सलिल निरहि सालुरिहि फरसिउ रसिउ सरि
वलयलु किउ क्लयठिहि चडि चूयइ सिहरि ॥५॥
मन्छरभय सचडिउ रनि गोयणिहि,
मणहर रमियइ नाहु रगि गोयणिहि ।
हरियाउलु धरवलउ कयणिए महमहिउ
भियउ भगु अणगि अणगिण मह अहिउ ॥६॥
णवमेहमालमालिय णहम्मि सुरचाव रत्तदिसि पसरो।
घणछन्न जम इ दोइणहि पिय पावस दुसह ॥७॥

शरद्

सोहइ सलिलु सरिहि सयरत्तिहि
विविह तरग तरगणि उतिहि ।
ज हय हीय गिभि णत्र सरयह
तं पुण सोह चडी णत्र सरयह ।१०॥

---

४ लोग शरीर को कपूर और चन्दन से व्यय चर्चित करते क्योंकि विरहाग्नि तो प्रिय ही बुझा सकता है ?

वर्षा —५, बगुले सरोवर छोडकर तरु शिखरो पर चढ गए नाचते हुए मोर शिखरों पर बोल उठे मढक तालावो म कठोर आवाज कर रहे हैं आम्रवृक्षों पर कोयलें बोल रही हैं। ६ मच्छरो के डर से गायो का झुण्ड ऊंची टेकरी पर चढ गया है गोपियाँ अपने पतियो के साथ सुन्दर गीत गा रही हैं कदम्बों से हरीभरी धरती महक उठी है ? कामदेव अग अग को दग्ध कर रहा है। ७ नव मेघमालाओ से गुफित आकाश और लाल लाल दिशा में इन्द्रधनुष का प्रसार! और बहुदिनो से अत्यन्त ढका हुआ पावस एकदम असह्य है।

शरद —१० समवर्ति [illegible] नतरगिनियो से। बहती हुई नदी विविध तरगों से। ग्रीष्म ने [illegible] शोभा आहृत कर छीन ली थी, वह अब शरद् पर फिर चढ

इ निहि पंडुरवि पुट्टिवि रमु,
तिउ पसयउ सुमणोहरु सुरदसु ।
उच्छलि भुवण भरिय सयदिसिहि
गयउलरिनिल पहिन्निय निपहि ॥११॥

निम्मउं पहिय जलिहि मिग्गनिहि
निग्गउं नग्गोयहि नग्गनिहि ।
सारस सरसु रसहि कि सारसि ।
मह चिर जिएण दुक्खु कि मारसि ॥१२॥

तिउ मारयलि तुरविक तिलरिहय ।
यु कुमि चंदणि तणु पन्नसरिय,
सोरंदहि करि लियहि पिरंतिहि,
दिव्व मणोहरु गेउ गिरंतिहि ॥१३॥

धूव दिंति गुरुमसि सइत्तिहि,
गोआमगिहि तुरंग पलतियहि ।
तं जोइवि हुउ खिय उम्भिन्निय,
योय महिय मह इच्छ भन्निय ॥१४॥

दारय यु ढाल तंडव पर,
भमहि रलिय यायंतय सुन्दर ।
सोहहि सिज्ज तरुणि जण सजियहि,
घरि घरि रमियइ रेह पलरियहि ॥१५॥

दिंतिय णिसि दीयालिय दीवय,
णयमसिरह सरिस करि ली अय ।

---

११ पंडुरवि—पमर या पुट्टिवि—पात्तर ।

१२ हे पथिक, पानी कम होने न मैं छीजती हूँ कुमुदों के कमल न मे मिल हो उठती हूं । हे सारस तुम क्या इस प्रकार सरस बोलकर मुझ पुराने दुख की याद दिलाते हो ?

१३ मान पर पटरानी तिलक पर, चन्दन चन्दन स शरीर सजा कर सोरह हाथ म लेकर घूमती हैं और दिव्य सुन्दर गीत गाती हैं ।

१५ स्त्रियाँ घेरा बनाकर नाचती हैं बाजा बजाती नगियों म घूमती हैं तरुणियाँ म साथ सज शोभित हैं घर घर म भाताना की रेखाएं शोभित हैं ।

तणु घणसारिण चंदणिण अलिउ जि निरि चच्चंति ।
पुण पि विरह य उल्हवइ पियविरहग्गि निभंति ॥४॥

वर्षा

बगु मिल्हवि सलिलद्दहु तरसिहरिहि चडिउ
तहवु करिवि सिहंडिहि वर सिहरिहि रडिउ ।
सलिलि निवहि मालूरिहि कारसिउ रसिउ सरि,
कलयलु किउ कलयंठिहि चडि चूयह सिहरि ॥५॥

मच्छरभय सचडिउ रंनि गोयणगिहि,
मणहर रमियइ नाहु रंगि गोयणगिहि ।
हरियाणु धरयलउ कयंविण महमहिउ
रियउ भगु अंगगि अणगिण मह अहिउ ॥६॥

णवमेहमालमालिय णहम्मि सुरचाव रत्तदिसि चमरो ।
घणउन्न नम इ दोहणहि पिय पावस दुसह ॥७॥

शरद्

सोहइ सलिलु सरिहिं सयवत्तिहि
विविह तरग तरगगि नतिहि ।
ज हय हीय गिंभि णव सरयह
तं पुण सोह चडी णव सरयह ।१०॥

---

४ लोग शरीर को कपूर और चन्दन से पंथ चर्चित करते, तथापि विरहाग्नि को प्रिय ही बुझा सकता है ?

वर्षा —५ बगुल सरोवर छोड़कर तरु शिखरों पर चढ़ गए नाचते हुए मोर शिखरों पर बोल उठे, मेंढक तालाबों में कठोर आवाज कर रहे हैं, आम्रशृंगों पर कोयलें बोल रही हैं। ६ मच्छरों के डर से गायों का झुण्ड ऊंची टेकरों पर चढ़ गया है गोपियाँ अपने पतियों के साथ सुन्दर गीत गा रही हैं कदम्बों से हरीभरी धरती महक उठी है ? कामदेव अंग अंग को चूर कर रहा है। ७ नव मेघमालाओं से गुम्फित आकाश और लाल लाल दिशा में इन्द्रधनुष का प्रसार! और बहुटियों में अत्यन्त दुःख हुआ पावस एकदम असह्य है।

शरद् —१० सयवत्तिही—शतपत्रों कमलिनियों से। बहती हुई नदी विविध तरंगों से। ग्रीष्म ने नवशरद् की जो शोभा आहत कर छीन ली थी, वह नव शरद् पर फिर चढ़ गई।

इ सिहि यंदुटवि पुट्टिरि रसु,
जिउ कमलु सुमणोहरु सुरहसु।
उच्छलि भुवणि भरिय मयणहिदि
गयउनरिन्लि पहिल्लिय निग्यहिं ॥११॥

निरुत्ते पहिय जलिहि निरुनिहि
निरुत्तई मणोयहि नानिहि।
सारस मरहु रसहि किं सारसि।
मह धिर जिएण दुक्खु किं मारसि ॥१२॥

तिलु भासयलि तुरवि तिलरिदय।
सु कुमि चंदरिग तगु घण्पविरय,
सोरंडहि करि लियहि किरिनिहि,
दिव्व मणोहरु गेउ गिरतिहि ॥१३॥

धूव दिति गुरुमन्ति-सइसिहि,
गोधामणिहि तुरंग पलसियहि।
तं जोइवि दुउ खिय उं रनिय,
घोय सहिय मह इन्द्र गनिय ॥१४॥

दाएय सु दयाल तंदर फर,
भमहि रसिय वायंनय सुन्दर।
सोहहि सिउन तहणि जग सज्जियहि,
घरि घरि रमियइ रेह पलसियहि ॥१५॥

दिति खिमि दीवालिय दीवय,
णवससिरह सरिस मरि ही थय।

---

११ चन्द्रुवि—कमल की पुट्टिवि—पाण्टर।

१२ हे पथिक, पाना फल हाने से मैं छीजती हूँ दुःगुणों के समान से मैं खिन्न हो उठती हूँ। हे सारस तुम क्या इस प्रकार सरस बोलकर मुझ पुराने दुःख को याद दिलाते हो?

१३ मान पर चन्द्राला तिलक कर, केशर चन्दन से शरीर सजा कर मारह हाथ में लेकर घूमता है और स्त्रिय सुन्दर गीत गाती हैं।

१४ स्त्रियाँ चेरा बनाकर नाच रही हैं बाजा बजा रहे गनिया ।। घूमता हैं तरुणियाँ के साथ सज शोभित हैं घर घर में भावना की रचनाएं शोभित हैं।

मढहिं भुवण तरुण जोइक्खहिं,
महिलिय दिंति सलाइय अक्खिहिं ॥१६॥

इमि विवि केलि करहिं सपुन्निय,
मइ पुणु रयणि गमिय उन्निन्निय।
अन्नइ घरि घरि गीउ रवन्नउ
इक्कु ममग्गु कटु मइ न्निनउ ॥१७॥

जं तहिं देसि णहु फुरइ जुन्ह णिम्मल चन्द्रह,
अह पवसउ न कुणंति दुम फल सेवि रविन्दह।
अह पायउ णहु पढइ कोइ सुललिय पुण राइण,
अह पंचमु णहु कुणइ कोइ कावालिय भाइण,
महमहइ अहव पच्चूसि णहु ओसमित्त घण कुसुमभरु,
अह मुणिउ पहिय। अणरसिउ पिउ सरइ समइ जु न
मरइ घरु ॥१८॥

हेमन्त

दोह उमासिहिं दीह रयणि मह गइय णिरक्खर।
आइ ण णिद्दय ! णिदं तुम्ह सुयरंतिय तक्खर।
अगिहिं तुह अलह त णिट्ठ ! करयल फरिसु।
ससोसिउ तणु हिमिण हाम हेमइ सरिसु।
हेमंति कंत ! विलवंतियह जइ पलुट्टि नासासिहसि,
त तइय मुक्ख ! खल ! पाइ मइ मुद्य वि आगिहसि
आसिहसि ॥१९॥

---

१८ दीवालों में रात में दीपदान करती हैं नयी चन्द्र रेखा के समान हाथ में लेकर दोनों में गवाक्ष को आलोकित करती हैं महिलाएँ आँखों में सलाई से काजल लगाती हैं। १७ इस प्रकार कोई पुण्यवती नारी करती है मैं दुःख में रात बिताती हूँ घर घर सुन्दर गीत हैं एक अकेली मुझ सारा दुःख दिया।

हेमन्त—१६ हे मूर्ख, लम्बी उसासों में लम्बी रात बीत गई, हे निर्दय चोर तुम्हारी याद करते हुए नींद नहीं आई रे ढीठ तुम्हारे हाथों का स्पर्श न पाने से हेमन्त में मेरे अंग अंग सूखा होकर जैसे धूप ढका था। हे प्रिय यदि हेमन्त में भी न। आन और विलाप करती हुई मुझ आश्वासन नहीं दिया तो क्या रे दुष्ट मेरे मरने पर आओगे?

शिशिर

दाघट्ट-लवनदहिय अमेविय सउणियण,
निन्नेहरहिं निसा न तुट्टिहि पुहुण करिग ।
मग्ग मग्ग पथियह गु परसिहि दिन करिणु,
उज्जालिहि दंरवरिय कसंलिय कुसुमवरा ॥२०॥

उहण्णिहि दंत पतुरिसय जिय पेम्मो हरिहि,
जिमहि भइनु किउ नयणु महनु था रोहरिहि ।
पवणु जहि दैल्लीरसु ओम्भिम्म’र सुयणु,
उगनाउह तुम्मिहिवि न धीरइ लिवि ममणु ॥२१॥

वसन्त

महमहिउ अंगि पद्दु न रमेउ
गु तरणि (तरणि) पयुरनउ सिसिर मोउ ।
तं पिक्खिवि मइ मज्झहि सहीय,
सकोरउ पड़ियउ धन्नाहीय ॥२२॥

निवडेत रज घरणिरहिं,
उट्ठियगर सीयल महमंहवहि ।
मरु सिवनु थाइ महि सीयलतु,
यह जणइ सीउ सं निवइ तंतु ॥२३॥

शिशिर—२० उज्जालिहि—उद्यान में जो कुसुम का कभी तक नहीं सूखा था, वह भी झाड़ झंखाड़ रह गया है ।

२१ पतिहीनी पतियों की पत्नियाँ मन्दिर में छोड़कर पीठ के दर से मन्दिर में आग की शरण में हैं भीतर ही कुजाओं से सीडारत या आनन्द ले रही है । उद्यानों में पत्ते के नीचे अब कोई नहीं सोता ।

वसंत—२२ वहुत से गये भागों से पग पग महकन सो मानो तरुणी (तरणि) सूप ने शिशिर का सार छांट दिया हो, यह देखकर मन प्रिय सखियों के बीच यह रहता पड़ा ।

२३ नयी मंजरियों से धरती पर पराग गिरता है वह धविर सा उठता है, ठण्डा हवा धरती को शीतल करती हुई बहती है वह ठण्ड पर नाटा करती वस्त्र धारण कराती है ।

जसु नामु अलिक्कउ फुट्टइ लोउ,
णहु हरइ मणह असोउ सोउ ।
पत्थि दप्पि मतरिय अग्गि,
साहार णाहु ण सहार अग्गि ॥२४॥

वहि सिहरि सुरत्तय किमणकाय,
उच्चरहि भरहु जणु विविह भाव ।
अइ मणहर पत्तु मणोहरीन,
उच्चरहि सरमु महुयर मणीउ ॥२५॥

चच्चरिहि गेउ सुणि करिवि तालु,
नच्चीयइ अउव वसनयालु ।
घड निविड हारि परिकिन्नरीहि
रणझुणइ रव महल किंकिणीहिं ॥२६॥

गज्जंति तम्मि रणनुउरणीहिं ।
सुणि पत्थिय गाह पियकन्तिरीहिं ॥२७॥

सम्पादक म

---

२७ जिसका नाम लोगों ने झूठमूठ रख छोड़ा है वह अशोक भी एक क्षण भी शोक दूर नहीं करता बल्कि दाह से मन को जलाता है। सहकार (आम्रवृक्ष) भी प्राणों का सहारा नहीं रहा।

२८ उसके शिखर पर भ्रम से मतवाले नाना भाँति बोल रहे हैं मानों भरत मुनि के विविध भावों को गा रहा हो। अत्यन्त सुन्दर वसन्त ऋतु आ गई। मधुकर भी अत्यन्त सुन्दर स्वर में बोल रहे हैं।

२९ चत्वर में चौबर पर में ताल की ध्वनि कर गीत गाया जा रहा है और अपूर्व नाच हो रहा है, सघनता से गहन पहन ... घनता हुई जिनकी करधनी किंकिणियों का रुनझुन हो रहा है?

३० नवयौवना सुन्दरियाँ कह रही हैं---इन सुन्दर प्रिय की आशा में रहने वाली इसने एक गाथा पढ़ा।

दोहा संग्रह

हेमचन्द्र

(१) वीर

एइ ति घोडा, एह थलि एइ ति निसिआ खग्ग ।
एत्थु मुणीसिम जाणिअइ, जो नवि वालइ वग्ग ॥१॥

पुत्तें जाऍं कवणु गुणु अवगुणु कवणु मुएण ।
जा बप्पी की भुंहडी चम्पिज्जइ अवरेण ॥२॥

हिअडा जइ वेरिअ घणा, तो किं अब्भि चडाहुँ,
अम्हाहिं बे हत्थडा, जइ पुणु मारि मराहुँ ॥३॥

अम्हे थोवा, रिउ बहुअ, कायर एम्व भणन्ति ,
मुद्धि, निहालहि गयणयलु कइ जण जोण्ह करंति ॥४॥

पइ मइ बेहिं वि रण-गयहिं को जय सिरि तक्केइ ।
केसहिं लेप्पिणु जम घरिणि, भण, सुहु को थक्केइ ॥५॥

तुम्हेहिं अम्हेहिं ज किअउ दिट्ठउ बहुअ जणेण ।
त तेवड्डउ समर भरु निज्जिउ एक्क खणेण ॥६॥

जाम न निवडइ कुंभ यडि सीह चवेड चडक्क ।
ताम समत्तहं मयगलहं पइ-पइ वज्जइ ढक्क ॥७॥

---

१ एइ ति घोडा=यहां वे घोडे । एइ ति निसिआ खग्ग=य हां वे पैनी तलवारें । मुणीसिम=मनुष्यत्व । वालइ वग्ग=मोडता है लगाम ।

२ भुंहडी=भूमि धरती । चम्पिज्जइ=चाप ली गई । अवरेण=दूसरे के द्वारा ।

४ अब्भि=आकाश में । चडाहुँ=जाऊं । अम्हाहिं=हमारे भी । बे हत्थडा =दो हाथ ।

५ जोण्ह=ज्योत्स्ना । ६ रण गयहिं=रण में जाने पर । जयश्री=विजय श्री । को तक्केइ=कोई कल्पना करता है ।

७ त तेवड्डउ=वह इतना बडा । समरभर=युद्ध भार ।

कन्त जु सीहहो उपमिअइ तं महु खण्डिउ माणु ।
सीहु णिरक्खय गय हणइ पिउ पय रक्ख समाणु ॥८॥
भग्गउं देक्खिवि निअय बलु बलु पसरिअउं परस्सु ।
उम्मिल्लइ ससि रेह जिवँ करि करवालु पियस्सु ॥९॥
जहिं कप्पिज्जइ सरिण सरु छिज्जइ खग्गिण खग्गु ।
तहिं तेहइ भड घड निवहि कन्तु पयासइ मग्गु ॥११॥
सगर-सएहिं जु वण्णिअइ देक्खु अम्हारा कन्तु ।
अइमत्तहं चत्तंकुसहं गय कुम्भइं दारन्तु ॥१२॥
कन्तु महारउ हलि सहिए, निच्छइं रूसइ जासु ।
अत्थिहिं सत्थिहिं हत्थिहिं वि ठाउ वि फेडइ तासु ॥१३॥
महु कन्तहो गोट्ठट्ठिअहो कउ झुम्पडा वलन्ति ।
अह रिउ-रुहिरें उल्हवइ अह अप्पणं न भन्ति ॥१४॥
महु कन्तहो बे दोसडा, हेल्लि म झंखहि आलु ।
देन्तहो हउं पर उव्वरिअ जुज्झन्तहो करवालु ॥१५॥
प्रिय एम्वहिं कर सेल्लु करि, छड्डहि तुहुं करवालु ।
जं कावालिय बप्पुडा लेहिं अभग्गु कवालु ॥१६॥
जइ भग्गा पारक्कडा तो सहि मज्झु पिएण ।
अह भग्गा अम्हहं तणा तो तें मारिअडेण ॥१७॥
पाइ विलग्गी अन्त्रडी, सिरु ल्हसिउं खन्धस्सु ।
तो वि कटारइ, हत्थडउ बलि किज्जउं कन्तस्सु ॥१८॥
भल्ला हुआ जु मारिआ, बहिणि महारा कन्तु ।
लज्जेज्जन्तु वयंसिअहु, जइ भग्गा घरु एन्तु ॥१९॥

---

८ कु नयडि=कुम नद पर। मर् चर चर्रा=मिर् का चर का तदक। समत्तह मयगलह=मतवाल गयिया का। वन्दइ रक्खा=रक्षता है नगाहा।

९ उवमिअइ=दरमावत। विरवरन=प्रगति। पय रक्ख=दर रमित।

१० उम्मिल्लइ ससि रेह=चन्द्र रेखा के समान चमकता है।

११ कप्पिजइ=काटा जाता है। निवहि=समूह में। पयासइ=प्रकाशित करता है। १२ चत्तकुस—चवताड़ग गय अकुश रहित गज। १३ अत्थिहि—अस्त्र शस्त्र और हाथियों सहित।

१५ आलु म झखहि—झूठ मत बोलो। उव्वर—बाल बचा है। असग्गु—असमान। १७ पारक्कडा—पराए।

आयहिं जम्महिं अन्नहिं वि, गोरि सु दिज्जहि कन्तु।
गय मत्तहं चत्तंकुसहं जो अब्भिडइ हसन्तु ॥२०॥
खग्ग विसाहिउ जहिं लहहुं, पिय तहिं देसहिं जाहुं ।
रण दुब्भिक्खे भग्गाइं, विणु जुज्झें न वलाहुं ॥२१॥
वित्ति पणट्ठइ वंकुडउ, रिद्धिहिं जण सामन्नु ।
किंपि मणाउं महु पिअहो ससि अणुहरइ न अन्नु ॥२२॥
विहि विणडउ, पीडन्तु गह, म धणि, करहि विसाउ।
संपइ कड्ढउं वेस जिवं छुडु अग्घइ ववसाउ ॥२३॥
एहु जम्मु नग्गहं गयउ, भडसिरि खग्गु न भग्गु ।
तिक्खा तुरय न माणिया गोरी गलि न लग्गु ॥२४॥

(२) अन्योक्ति

भमर, म रुणझुणि रण्णडइ सा दिसि जोइ म रोइ।
सा मालइ देसंतरिअ, जसु तुहुँ मरहि विओइ ॥१॥
भमरा एत्थु वि लिंबडइ के वि दिअहडा विलंबु ।
घण-पत्तलु छाया बहुलु फुल्लइ जाम कयंबु ॥२॥
बप्पीहा कइं बोल्लिअण निग्घिण वार-इ-वार ।
सायरि भरिअइ विमल जलि लहइ न एक्कइ धार ॥३॥
कुंजर अन्नहं तरुअरहं कोड्डेण घल्लइ हत्थु ।
मणु पुणु एक्कहिं सल्लइहिं जइ पुच्छह परमत्थु ॥४॥

---

२० आयहिं जम्महिं—इस जन्म में दूसरे जन्म में। जो अब्भिडइ हसंतु—भिड़ जाय हंसता हुआ। २१ खग्ग विसाहिउ—खड्ग व्यवसाय। जहिं लहहुं—जहां प्राप्त करें। २२ वित्ति पणट्ठइ वंकुडउ—धन के नष्ट होने पर बांका। रिद्धिहिं—ऋद्धि में। जन-सामन्नु—जन सामान्य। २२ किं पि मणाउं—कुछ थोड़ा। महु पिअहो—मेरे प्रिय से। ससि अनुहरइ—चन्द्रमा समानता करता है। २३ विहि विणडउ—भाग्य नाचे। पीडन्तु गह—ग्रह सताएं। वेस जिव—वेश्या की तरह। छुडु अग्घइ ववसाउ—जरा व्यवसाय तो चल जाय। २४ गयउ गया मेरा यह जन्म। न योद्धा की श्री मिली, न तलवार भग्न की, न तीखे घोड़ों पर चढ़ा, और न गोरी के गले लगा।

१ रण्णडइ—अरण्य जंगल में। देसंतरिअ—देशान्तरित कर दी गई।
२ लिंबडइ—नीम पर। कयंबु—कदम्ब। ३ बप्पीहा—पपीहा। निग्घिण—निर्दय। ४ कोड्डेण—कौतुक से। हत्थु घल्लइ—हाथ डालता है। एक्कहिं सल्लइहिं—एक सल्लकी लता में। पुच्छह—पूछते हो।

गु जर, तुमहिं म मल्लिउ गरला माम म मेल्लि ।
धवल नि पाविय विहि-वसेण, त चरि, माण-म मेल्लि ॥५॥

मइ वुत्तउ, तुहुँ धुरु धरहि, कसरेहिं विगुत्ताइ ।
पइ विणु, धवल, न चडइ भरु, एम्वइ वुन्नउ काइ ॥६॥

धवलु विसूरइ सामिअहो गरुआ भरु पिक्खवि ।
हउँ किं न जुत्तउ दुहुँ दिसिहिं खंडइं दोण्णि करेवि ॥७॥

गयउ सो केसरि, पिअहु जलु निच्चिंतइं हरिणाइं ।
जसु केरएँ हुंकारडएँ मुहहु पडंति तिणाइं ॥८॥

तणहं तइज्जी भंगि न वि तें अवड यडि वसंति ।
अह जणु लग्गवि उत्तरइ अह सह सइं मज्जंति ॥९॥

सिरि चडिआ खंति फलइं, पुणु डालइं मोडंति ।
तो वि महद्दुम सउणाहं अवराहिउ न करंति ॥१०॥

पइ सुक्खाइ वि वरतरु
फिट्टइ पत्तत्तणं न पत्ताण ।
तुह पुण छाया जइ होज्ज
कह वि ता तेहिं पत्तेहिं ॥११॥

जे छड्डेविणु रयण णिहि अप्पउ तडि घल्लंति ।
तहं संखहं विट्टालु पर, फुक्किज्जंत भमंति ॥१२॥

एत्तहे मेह पिअंति जलु,
एत्तहे वडवानल आवट्टइ ।
पेक्खु गहीरिम सायरहो,
एक्क वि कणिअ नाहिं ओहट्टइ ॥१३॥

५, माण म मल्लि—मान मत छोड़ो । विहि-वसि—भाग्य के वश से ।

६ कसरेहिं विगुत्ताइ—कसर-गरियाल बैल से खिन्न । काइ वुन्नउ—इस समय खिन्न क्यों ? हउं दुहुं दिसि—दोनों दिशाओं में मुझे क्यों नहीं जोत दिया । जसु केरए हुंकारडएँ—जिसकी हुंकार से ।

९ तइ—जो भंगि ण वि—जिनकी गति नहीं । तें अवड तडि वसंति—कूप के औघट घाट पर पड़ते हैं । १० सउणाह—पक्षियों का । १२ अप्पउ यडि घल्लंति—अपने को तट पर डाल देते हैं । विट्टालु—नीच । फुक्किज्जंत भमंति—फूंके जाते हुए घूमते हैं । १३ आवट्टइ—विद्यमान है । गहीरइ—गंभीर । सायर हो—समुद्र का । कणिअ नाहिं ओहट्टइ—एक कण भी कम नहीं होता ।

सोसउ म सोसउ च्चिअ
उअही, वडवानलस्य किं तेण ।
जं जलइ जले जलणो
आएण व किं न पज्जत्तं ॥१४॥

तं तेत्तिउ जलु सायरहो, सो तेवडु वित्थारु ।
तिसहे निवारणु पलु वि न वि, पर धुट्ठुअइ असारु ॥१५॥

वच्छहे गृण्हइ फलइ जणु, कडु पल्लव वज्जेइ ।
तो वि महद्दुमु सुअणु जिव ते उच्छंगि धरेइ ॥१६॥

(३) नीति

सरिहिं न सरेहिं न सर वरेहिं न वि उज्जाण वणेहिं ।
देस रवण्णा होंति वढ निवसतेहिं सु अणेहिं ॥ १ ॥
सत्थावत्थहं आलवणु साहु वि लोउ करेइ ।
आदन्नहं मब्भीसडी जो सज्जणु सो देइ ॥२॥
जो गुण गोवइ अप्पणा, पयडा करेइ परस्सु ।
तसु हउं कलि जुगि दुल्लहहो बलि किज्जउ सुअणस्सु ॥३॥
सु-पुरिस कंगुहे अणुहरहिं भण कज्जें कवणेण ।
जिव वड्डत्तणु लहहिं, तिव तिव नवहिं सिरेण ॥४॥
दूरुड्डाणे पडिउ खलु अप्पणु जणु मारेइ ।
जिह गिरि सिंगहु पडिअ सिल अन्नु वि चूरू करेइ ॥५॥

---

१४ च्चिअ-चेत्-शायद । उहअी—उदधि-समुद्र । आएण व कि न पज्जन्त-वया इतना पर्याप्त नहीं है । १५ सो ते बडु=वित्थारु-वह उतना बडा विस्तार । तिसहे निवारणु—प्यास का निवारण । धुट्ठुअइ असारु—व्यथ गरजता है । १६ वच्छहे गृण्हइ—वृक्ष से ग्रहण करते है । फलइ जनु—लोग फल । कडुपल्लव—कडवे पत्ते । वज्जइ—छोड देते हैं । उच्छगे धरेइ—उत्सग—गोद म धारण करते है ।

१ सरिहिं=नदियो स । सरेहिं=सरो से । सरवरेहिं=सरोवरा से । देस रवण्ण होंति=देश सुन्दर होते ह । वढ=मूख । २ सत्था आलवणु=स्वस्थ अवस्था वालो से आलाप । आदन्नह=पीडिता को । मब्भीसडी=डरोमत यह अभयदान ३ बलि किज्जउ=बलिहारि करता हू ४ कवणेण कज्जें=किस काम से ५ दूर दूर भी स्थान म । पडिउ=पडा हुआ अप्पणु जणु मारेइ=अपने जन को मारता है । सिल=शिला ।

साहु वि लोउ तडप्फडइ वड्डत्तणहो तणेण।
वड्डप्पणु परि पाविअइ हत्थें मोक्कलडेण ॥६॥

गुणहिं न संपइ कित्ति पर फल लिहिआ भुंजंति।
केसरि न लहइ बोड्डिअ वि गय लक्खेहिं घेप्पंति ॥७॥

सायरु उप्परि तणु धरइ, तलि घल्लइ रयणाइं।
सामि सुभिच्चु वि परिहरइ, सम्माणेइ खलाइं ॥८॥

जीविउ कासु न वल्लहउं ? धणु पुणु कासु न इट्ठु।
दोण्णि वि अवसर निवडिअइं तिण सम गणइ विसिट्ठु ॥९॥

कमलइं मेल्लवि अलि-उलइं करि-गंडाइं महंति।
असुलहमेच्छण जाहं भलि ते ण वि दूर गणंति ॥१०॥

माणि पणट्ठइ जइ न तणु तो देसडा चइज्ज।
मा दुज्जण-कर-पल्लवेहिं दंसिज्जंतु भमिज्ज ॥११॥

जामहिं विसमी कज्ज-गइ जीवहं मज्झे एइ।
तामहिं अच्छउ इयरु जणु सुअणु वि अंतरु देइ ॥१२॥

रट्टु पडावइ अंगि तस्सु मग्गिहिं पक्क फलाइं।
सो वरि सुक्खु पइट्ठ ण वि कण्णट्ठिअ-वयणाइं ॥१३॥

तरुहुं वि वक्कलु फलु मुणि वि परिहणु असणु लहंति।
सामिहुं एत्तिउ अग्गलउं आयरु भिच्चु गृहंति ॥१४॥

गिरिहे सिला-यलु तरुहे फलु घेप्पइ नीसावन्नु।
घरु मेल्लेप्पिणु माणुसहं तो-वि न रुच्चइ रन्नु ॥१५॥

विहवे कस्सु थिरत्तणउं जोव्वणि कस्सु मरट्टु ?।
सो लेखडउ पठाविअइ जो लग्गइ निच्चट्टु ॥१६॥

एत्तहे-तेत्तहे बारि-घरि लच्छि विसंठुल धाइ।
पिअ-पब्भट्ठ व गोरडी निच्चल कहिं-वि न ठाइ ॥१७॥

---

७ लिहिआ=लिखा हुआ। बोड्डिअ वि=कौड़ी भी। घेप्पंति=खरीदे जाते हैं। सुभिच्चु=सुभृत्य को। ९ दोण्णि वि अवसर=दोनों अवसर आ पड़ने पर ११ देसडा चइज्ज=देश छोड़ दो। मा ... दुर्जनों के अंगुलियों द्वारा संकेतित न घूम। १२ सुअणु वि=सज्जन भी किनारा काटता है। १३ मग्गिहिं=मांगिया के लिए। १४ अग्गलउं=अधिक विशेष। १५ नीसावन्नु=निःसामान्य। रन्नु न रुच्चइ=वन अच्छा नहीं लगता। १६ निच्चट्टु=नीचे पड़ता। १७ बारि-घरि=द्वार-द्वार। विसंठुल=विसंस्थुल=चञ्चल। धाइ=दौड़ता है। पिअ-पब्भट्ठ=प्रिय से भ्रष्ट गोरी।

दिअहा जंति झडप्फडहिं, पडहिं मणोरह पच्छि ।
ज अच्छइ त माणिअइ होसइ करतु म अच्छि ॥१८॥

जो पुणु मणि जि खसफसिअ-हूअउ ॥
चिंतइ, देइ न दम्मु न रूअउ ।
रइ-- वस--भमिरु करग्गुल्लालिउ ।
घरहिं जि कोंतु गुणइ सो नालिउ ॥१९॥

एक्कसि सील-कलंकिअह देज्जहिं पच्छित्ताइं ।
जो पुणु खंडइ अणु-दिअहु, तसु पच्छित्तें काइं ॥२०॥
विरि सु-पुरिस तिर घघलइं जिव नइ तिव वलणाइं ।
जिव डोंगर तिव कोटरइं, हिआ विसूरहि काइं ॥२१॥
जग ते विरला के-वि नर, जे सव्वंग-छइल्ल ।
जे वंका ते वंचयर, जे उज्जुअ ते बइल्ल ॥२२॥
अग्गिए उण्हउ होइ जगु वाएँ सीअलु तेम्व ।
जो पुणु अग्गि सीअला, तसु उण्हत्तणु केम्व ॥२४॥

एक्क कुडुल्ली पंचहिं रुद्धी ।
तह पंचह वि जुअं-जुअ बुद्धी ॥
बहिणिए त घरु, कहि, किंव नंदउ ?
जेत्थु कुडुम्बउ अप्पणछन्दउ ॥२५॥

---

१८ पहिं=मनोरथ पीछे पड जाते हैं । १९ जो मन में खुसफुसाता हुआ सोचता है, न छदाम देता है, न रुपया, प्रेम के वश अँगुली पर नचाए गए भौंटे भाले की तरह, वह मूर्ख घर में समझा जाता है । २० एक बार शील में कलंकित होने पर प्रायश्चित दिया जाता, है लेकिन जो प्रतिदिन शील खण्डित करे उस प्रायश्चित् कैसा ।

२१ जैसे सज्जन वैसे घोंघे, जैसी नदी वैसे ही उसके मोड़ जैसे पहाड़ वैसे ही उसके खोह, हे हृदय तुम दुःख क्यों करते हो ? २२ वे लोग दुनिया में विरल हैं । जो सब तरह से चतुर हों जो बाँके हैं वे ठग हैं जो सीधे हैं वे बैल हैं । २३ आग से दुनिया गर्म होती है और जल से शीतल । यदि आग से शीतल होने लगे तो फिर गर्मी कहाँ से आयेगी । २४ एक कुटी (शरीर) पाँच ने रोक रखा । उन पाँचों की भी अलग बुद्धि । हे बहन उस घर में कैसे आनन्द रह गया है ? जिस कुटुम्ब का हर सदस्य अपने मन का हैं ।

आयहो दड्ढ-कलेवरहो जं वाहिउ तं सारु।
जइ उट्टब्भइ तो कुहइ अह डज्झइ तो छारु ॥२५॥

(४) शृङ्गार

(१) रूप चित्रण

सीसि सेहरु खणु विणिम्मविदु
खणि कंठि पालंबु किदु रदिअ ।
विहिदु खणु मुंडमालिए जं पणएण,
तं नमहु कुसुमदाम कोदंडु कामहो ॥१॥

मारु सलोणी गोरडी नवखी क वि विस-गंठि।
भडु पच्चलिओ सो मरइ, जासु न लग्गइ कंठि ॥२॥

जइ सो घडदि प्रयावदी केत्थु वि लेप्पिणु सिक्खु।
जेत्थु वि तेत्थु वि जगि, भण तो सहि सारिक्खु ॥३॥

मुह-कबरि-बंध तहे सोह धरहिं ।
न मल्ल-जुज्झु ससि-राहु करहिं ॥
तहे सहहिं कुरल भमर-उल-तुलिअ ।
न तिमिर डिंभ खेल्लंति मिलिअ ॥४॥

चलेहिं चलंतहिं लोअणेहिं जे तइं दिट्ठा बालि।
तहिं मयरद्धय दडवडउ पडइ अपूरइ कालि ॥५॥

आयइं लोअहो लोअणइं जाईं सरइं न भंति।
अप्पिए दिट्ठइ मउलिअहिं पिए दिट्ठइ विहसंति ॥६॥

जिवं जिवं वंकिम लोअणहं णिरु सामलि सिक्खेइ।
तिवं तिवं वम्महु निअय सर खर पत्थरि तिक्खेइ ॥७॥

---

२५ इस मल देह में जो लगाया जाय वही सार है। यदि ढका जाता तो नष्ट होता है यदि जलता है तो छार छार होता है।

१

२ सलोणी=सलोनी, गोरडी=गोरी, नवखी=अनोखी, विसगंठी=विष की गांठ। ४ सोह=शोभा। धरहिं=धारण करता है। तिमिर डिम्भ=अंधकार के बच्चे। ५ जाई-सरइं=जाति-स्मृति। अप्पिए दिट्ठइ=अप्रिय के देखने पर। ७ जिव जिव=जिस जिस प्रकार। सामलि=श्यामला। सिक्खेइ=सिखाता है। खर पत्थरि=तीखे पत्थर। तिक्खेइ=तीखा करता है।

विट्टीए, मइ भणिअ, तुहुँ मा करु वंकी दिट्ठि।
पुत्ति सकण्णी भल्लि जिव मारइ हिअइ पइट्ठि ॥८॥

असु जेल प्राइम्व गोरिअहे सहि, उव्वत्ता नयण सर।
ते समुह सपेसिआ देंति तिरिच्छी घत्त पर ॥९॥

उअ कणिआरु पफुल्लिअउ कंचण-कंति-पयासु।
गोरी वयण विणिज्जिअउ ण सेवइ वण वासु ॥१०॥

ओ गोरी मुह णिज्जिअउ वद्दलि लुक्कु मियंकु।
अन्नु वि जो परिहविय-तणु सो किंव भमइ निसंकु ॥११॥

निअ-मुह करहिं वि मुद्ध कर अंधारइ पडिपेक्खइ।
ससि मंडल चंदिमए पुणु काइं न दूरे देक्खइ ॥१२॥

जिव तिव तिक्खा लेवि कर जइ ससि छोल्लिज्जंतु।
जो जइ गोरिहे मुह कमलि सरिसिम का विलहंतु ॥१३॥

फोडेंति जे हिअडउ अप्पणउ,
ताहं पराई कवण घण ?
रक्खेज्जउ, लोअहो, अप्पणा
बालहे जाया विसम थण ॥१४॥

अन्नु जु तुच्छउ तहे धणहे त अक्खणह न जाइ।
कटरिथणंतरु मुद्धडहे जे मणु विच्चि ण माइ ॥१५॥

अन्ने ते दीहर लोअण, अन्नु त भुअ जुअलु।
अन्नु सु घण-थण हारु त अन्नु वि मुह-कमलु ॥
अन्नु जि केस कलावु सु अन्नु जि प्राउ विहि।
जेण णिअंबिणि घडिअ स गुण-लायण्ण णिहि ॥१६॥

---

८ वंकी दिट्ठी=बाँकी नजर। सवण्णा भल्लि=सवर्ण भाली की तरह।
९ असुजले=आँसुओं के जल में। प्राइम्व=प्राय। उव्वत्ता=गीले या भीगे हुए। नयण-सर=नयनरूपी बाण। १० उअ=देखो। कणिआर=कनेर।
११ वद्दलि=बादल में। मियंकु=मृगांक। १३ सरिसिम=समानता। लहंतु=प्राप्त करती है। १४ घण=क्या। अप्पणा=अपनी। १५ धनहे=धन्या का। अक्खणह न जाइ=कहा नहीं जा सकता। कटरि=आश्चर्य है ? विच्चि=बीच में। ण माइ=नहीं समाती।
१६ गुण लायण्ण णिहि=गुणलावण्य निधि।

(२) प्रेम

कहिं ससहरु कहिं मयरहरु कहिं बरिहिणु कहिं मेहु ।
दूर-ठिआहँ वि सज्जणहँ होइ असड्ढलु नेहु ॥१७॥

देसुच्चाडणु सिहि-कढणु, घण-कुट्टणु जं लोइ ।
मंजिट्ठए अइ-रत्तिए सव्वु सहेव्वउ होइ ॥१८॥

अगलिअ-नेह-निवट्टाहँ जोअण-लक्खु वि जाउ ।
वरिस-सएण वि जो मिलइ सहि, सोक्खहँ सो ठाउ ॥१९॥

सुमरिज्जइ तं वल्लहउँ जं वीसरइ मणाउ ।
जहिं पुणु सुमरणु जाउ गउ, तहो नेहहो कइँ नाउ ॥२०॥

तिलहँ तिलत्तणु ताउ पर जाउ न नेह गलंति ।
नेहि पणट्ठइ ते ज्जि तिल तिल फिट्टवि खल होंति ॥२१॥

(३) संयोग श्रृंगार

बिंबाहरि तणु रयण-वणु किह ठिउ सिरिआणंद ।
निरुवम रसु पिएँ पिअवि जणु सेसहो दिण्णी मुद्द ॥२२॥

अइ-तुंगत्तणु जं थणहँ, सो छेअउ न हु लाहु ।
सहि जइ केवइ तुडि-वसेण अहरि पहुच्चइ नाहु ॥२३॥

भण सहि निहुअउँ तेवँ मइं जइ पिउ दिट्ठु सदोसु ।
जेवँ न जाणइ मज्झु मणु पक्खावडिअं तासु ॥२४॥

जइ न सु आवइ दूइ घरु, काइँ अहो मुहु तुज्झु ?
वयणु जु खंडइ तउ सहिए सो पिउ होइ न मज्झु ॥२५॥

केम समप्पउ दुट्ठु दिणु, किध रयणी छुडु होइ ।
नव-वहु-दंसण-लालसउ वहइ मणोरह सोइ ॥२६॥

---

१७ बरिहिणु=बर्हि मयूर । दूरट्ठिआहँ=दूरस्थितों का । असड्ढलु=असाधारण
१८ देसुच्चाडणु=देश से उच्चाटन । सिहि कढणु=आग में उबालना । घण कुट्टणु=घन से पीटा जाना । सव्वु सब कुछ सहन करना है ।
१९ अगलिअ अगलित स्नेह से भरपूर ।

२२ रयणन्वणु=रत्न वन=रत्न का घर । मुद्द=मुद्रा मुहर । २३ तुडिवसेण=त्रुटि से भूल से । पहुच्चइ=पहुँचता है । २४ पक्खावडिअं=पक्षपाती है । तासु=उसका । २५ वयणु=वचन मुख ।
२६ किध=किस प्रकार । रयणी छुडु होइ=रात शीघ्र हो ।

अम्मीए सत्थावत्थेहिँ सुधि चिंतिज्जइ माणु।
पिए दिट्ठे हल्लोहलेण को चेअइ अप्पाणु ॥२७॥

अगहिँ अगु न मिलिउ, हलि, अहरें अहरु न पत्तु।
पिअ जोअतिहे मुह कमलु एम्वइ सुरउ सचत्त ॥२८॥

मान

ढोल्ला, मइ तुहु वारिआ, मा कुरु दीहा माणु।
निद्दए गमिही रत्तडी, दडवड होइ विहाणु ॥२९॥

चंचलु जीविउ, ध्रुवु मरणु पिअ रूसिज्जइ काइ।
होसहिँ दिअहा रूसणा दिव्वइ वरस-सयाइ ॥३०॥

अम्मडि, पच्छायावडा, पिउ कलहिअउ विआलि।
घइ विवरीरी बुद्धडी होइ विणासहो कालि ॥३१॥

वियोग शृंगार

मइ जाणिउ बुड्डीसु हउ पेम्मद्रहि हुहुरुत्ति।
नवरि अचिंतिय संपडिय विप्पिय नाव झडत्ति ॥३२॥

ढोल्ला एहे परिहासडी, अइ भण कवणहिँ देसि ?।
हउं झिज्जउ तउ केहिं पिअ, तुहु पुणु अन्नहि रेसि ॥३३॥

महु हिअउ तइं, ताए तुहु, स वि अन्ने विनडिज्जइ।
पिअ, काइ करउ हउ, काइ तहु, मच्छे मच्छु गिलिज्जइ ॥३४॥

एक्कु कइअह वि न आवही, अन्नु वहिल्लउ जाहि।
मइ, मित्तडा, पमाणियउ पइ जेहउ खलु नाहि ॥३५॥

विप्पिअ आरउ जइ वि पिउ तो वि त आणहि अज्जु।
अग्गिण दड्ढा जइ वि घरु, तो तें अग्गि कज्जु ॥३६॥

---

२७ सत्थाव०=स्वस्थ=अवस्था वाले। सुधि=मुखसे। २८ एम्वइ=इस समय। सुरउ=सुरति समत्त=समाप्त है। २९ दडवड=शीघ्र। विहाणु=सवेरा। रत्तडी=रात। निद्द=नींद में। ३० काइ रूसिज्जइ=क्यों रूसता है। वरस सयाइ=सौ रस। वर्षों सब ३१ पच्छायावडा = पश्चाताप। विआलि=विकाल सन्ध्या समय। घइ = प्राय विवरीरी=उल्टी। विनाश काल विपरीत बुद्धि ३२ बुड्डीसु=डूब जाऊंगा। पेम्मद्रहि=प्रेम समुद्र में। हुहुरुत्ति=हह हहर कर। विप्पिय नाव=वियोग की नौका। ३३ अन्नहिँ रेसि=दूसरे के लिए। ३४ वहिल्लउ=शीघ्र ही। पमाणियउ=प्रमाणित कर दिया

जइ तहे तुट्टउ नेहडा, मइ सहुँ न वि तिल-तार ।
त किहे वंकेहिँ लोअणेहिँ जोइज्जउ सय-वार ॥३७॥

पइ मेल्लन्तहो ? महु मरणु मइ मेल्लन्तहो तुज्झु ।
सारस जसु जो वेग्गला, सो वि कृदन्त हो सज्झु ॥३८॥

अन्न वि नाहु महु जि घरि सिद्धत्था वन्देइ ।
ताउ वि विरहु गवक्खेहिँ मक्कड-घुग्घिउ देइ ॥३९॥

जाउ, म जन्तउ पल्लवह, देक्खउ कइ पय देइ ।
हिअइ तिरिच्छी हउ जि पर पिउ डंबरइ करेइ ॥४०॥

रवि अत्थमणि समाउलेण कंठि विइण्णु न छिण्णु ।
चक्के खडु मुणालिअहे नउ जीवग्गलु दिण्णु ॥४१॥

वाह विछोडवि जाहि तुहुँ हउ तेवइ को दोसु ।
हिअअ ट्ठिउ जइ नीसरहि, जाणउ मुञ्ज, सरोसु ॥४२॥

विरहाणल जाल-करालि अउ
पहिउ को वि बुड्डिवि ठिअउ ।
अणु सिसिर-कालि सीअल जलहु ॥४३॥
धूमु कह विहु नट्ठिअउ ? ॥४३॥

विरहाणल जाल-करालिअउ
पहिउ पथि ज दिट्ठउ ।
त मेलवि सव्वहिँ पथिअहिँ
सो जि किअउ अग्गिट्ठउ ॥४४॥

हिअट खुडुक्कइ गोडो, गयणि घुडुक्कइ मेहु ।
वासा-रत्ति-पवासुअह, विसमा सकडु एहु ? ॥४५॥

पहिआ दिट्ठी गोरडी, दिट्ठी मग्गु निअत ? ।
असू-सासेहिँ कचुआ तितुव्वाण करत ॥४६॥

---

३७ तिल-तार=तिल की तरह स्वच्छ । जोइज्जउ=देखा जाता हूँ ।
३८ वग्गला=छोडा । कृदन्त हो सज्झु=कृतान्त का साध्य है । ३९ मक्कड घुग्घिउ=बन्दर घुड़की । ४० डम्बरइ=आडम्बर । ४१ विइण्णु=दत्त । जीवग्गलु=जीवार्गल द दा । वाह=बाहु । ४४ अग्गिट्ठउ=अग्नि स्थित ।
४५ वासा रत्ति=वर्षा की रात म । पवासुअह=प्रवास करने वालों का
४६ कचुआ=कचुकी । तितुव्वाण=गीला । करत=करती हुई ।

जइ स सणेही तो मुइअ, अह जीवइ निन्नेह ।
बिहिँ वि पयारे हिँ गइअ धण, कि गज्जहि, खलमेह ॥४७॥

अब्भा लग्गा डुंगरिहिँ, पहिउ रडंतउ जाइ ।
जो एहा गिरि-गिलण-मणु, सो किं धणहे धणाइ ॥४८॥

लोणु विलिज्जइ पाणिएण, अरे खल मेह, म गज्जु ।
वालिउ गलइ सु झुंपडा गोरी तिम्मइ अज्जु ॥४९॥

जइ पवसंतें सहुँ न गय न मुअ विओएँ तस्सु ।
लज्जिज्जइ संदेसडा देंतेहिँ सुहय-जणस्सु ॥५०॥

एक्कहिँ अक्खिहिँ सावणु, अन्नहिँ भद्दवउ ।
माहउ महिअल-सत्थरि, गंडत्थले सरउ ॥
अंगिहिँ गिम्ह सुहच्छी तिल वणि मग्गसिरु ।
तहे मुद्धहे मुह-पंकइ आवासिउ सिसिरु ॥५१॥

वलयावलि निवडण भएण धण उद्धब्भुअ जाइ ।
वल्लह विरह महा-दहहो थाह गवेसइ नाइ ॥५२॥

बप्पीहा पिउ पिउ भणवि केत्तिउ रुअहि, हयास ।
तुह जलि महु पुणु वल्लहइ, बिहु वि न पूरिअ आस ॥५३॥

हिअडा, फुट्टि तडत्ति करि, काल-क्खेवें काइं ?
देक्खउं हय विहि कहिँ ठवइ पइं विणु दुक्ख सयाइं ॥५४॥

हिअडा, पइं एहु बोल्लिअओ महु अग्गइ सय-वार ।
फुट्टिसु पिए पवसंति हउं, भंडय ढक्करि-सार ॥५५॥

जे महु दिण्णा दिअहडा दइएँ पवसंतेण ।
ताण गणंतिए अंगुलिउ जज्जरिआउ नहेण ॥५६॥

मइं जाणिउं, पिअ विरहिअहं क वि धर होइ विआलि ।
णवर मिअंकु वि तिह तवइ जिह दिणयरु खय गालि ॥५७॥

---

५७ तिम्मइ=भीगी होती है। ५१ भद्दवउ=भादो। ५२ उद्धब्भुअ=ऊँची भुजाएँ करके जाइ=जाती है। गवेसइ=खोजती है। ५३ बिहु वि=दोनों की। ५४ काल-क्खेवें काइं=समय बिताने से क्या? ठवइ=रखता है। दुक्ख सयाइं=सैकड़ों दुःख। सयवार=सौ बार ५७ विआलि=विकाल=सन्ध्या समय।

अवगुण लाइवि जे गया पहिअ पराया केवि ।
अवम न सुअहिं सुन्हिअहिं निव अम्हइ तिव ते वि ॥५८॥

रत्तमइ मा विम हारिणी ने वर चुविवि जीव ।
पडिविंविअ मु जातु जलु जेहिं अडोहिउ पीव ॥५९॥

चूडुल्लउ चुण्णी होइसइ, मुद्धि, कवोलि निहत्तउ ।
सासानल जाल-झलक्किअउ बाह-सलिल-संसित्तउ ॥६०॥

जाइज्जइ तहिं देसडइ, लब्भइ पिअहो पमाणु ।
जइ आवइ तो आणिअइ, अहवा त वि निवाणु ॥६१॥

सदेसे काइ तुहारेण, ज सगहो न मिलिज्जइ ? ।
सुइणतरि पिएँ पाणिएण, पिअ पियास किं छिज्जइ ॥ ॥

जइ केवइ पावीसु पिउ, अकिआ कोड्डु करीसु ।
पाणिउ नवइ सरावि जिव सव्वंगें पइसीसु ॥६३॥

उमी पिउ, रुसेसु हउं, रुट्ठी मइ अणणेइ ।
पग्गिम्व एइ मणोरहइ दुक्करु दइउ करेइ ॥६४॥

पिअ-सगमि कउ निद्दडी पिअहो परोक्खहो केम् ।
मइ बिन्नि वि विन्नासिया निद्द न एम्व न तेम्व ॥६५॥

एइ गृण्हेप्पिणु ध्रु मइ जइ पिउ उव्वारिज्जइ ।
महु करिएव्वउ किंपि ण वि, मरिएव्वउ पर देज्जइ ॥६६॥

अब्भड-वंचिउ बे पयइ पेम्मु निअत्तइ जाव ।
सव्वासण रिउ-संभवहो कर परिअत्ता ताव ॥६७॥



५९ जहिं जिन हाथा से जाकर पिया ६० निहित-निहित रखा हुआ। वाह वाष्पजल से गाला। सासा श्वास की अग्नि ज्वाला से प्रज्वल। ६१ निवाणु=निर्वाण। ६२ सुइणतरि =स्वप्नान्तर में।

६३

मेरुतुंगाचार्य द्वारा संकलित

अम्मीणउ सन्देसडउ नारय कन्ह कहिज्ज ।
जगु दालिद्दिहिं डुब्बियउ बलिबन्धणह मुइज्ज ॥१॥
सउ चित्तह सट्ठी मणह बत्तीसडा हियाह ।
अम्मी ते नर ढड्ढसी जे वीससइ तियाह ॥२॥
झोली तुट्टवि किं न मूउ किं हूउ न छारह पुञ्जु ।
हिण्डइ दोरी दोरियउ जिम मङ्कडु तिम मुञ्जु ॥३॥
चित्ति विसाउ न चिंतीयइ रयणायर गुण पुञ्ज ।
जिम जिम वायइ विहि पडहु तिम नच्चिजइ मुंज ॥४॥
सायरु खा (खा) इ लंक गढु गढवइ दस सिरु राउ ।
भग्गखा (ख) इ सो भज्जि गउ मुंज म करसि विसाउ ॥५॥
गय गय रह गय तुरय गय पायक्कडा निभिं ।
सग्गट्ठिय करि मतडऊ मुहुता रुद्दाइच्च ॥६॥
च्यारि बइल्ला धेनु दुइ मिट्ठा बुल्ली नारि ।
काहूं मुंज कुडंवियाह गयवर बज्झइ बारि ॥७॥
जे वरया गोला नईं हूं बलि कीजू ताह ।
मुंज न दिट्ठउ निहलउ रिद्धि न दिट्ठ खलाह ॥८॥

---

१ अम्मीणउ=हमारा । स देसडउ=संदेसा । कहिज्ज=कहिए । मुइज्ज=छोड दो ।

२ स्त्रियों के सौ चित्त साठ मन और बत्तीस हृदय होते हैं, वे नर नष्ट हो जाते हैं जो स्त्रियों का विश्वास करते हैं ।

३ झोली=शरीर । दोरी दोरियउ=डोरी से बंधा हुआ । छारउ पुंजु=धूल का ढेर ।

४ मुंज, मन में खेद न कर, विधाता जैसा २ नगाडा बजाता है वैसा २ तुझे नाचना है ।

५ भजि गउ=भग्न होगया । विसाउ म करसि=विषादमत करो ।

६ पायक्कनि=पदन निपात । मित्त=मृत्य=नौकर । सग्गट्ठिय=स्वर्ग स्थित । रुद्दाइच्च=रुद्रादित्य ।

७ बारि=द्वार पर । बज्झइ=बांधता है ।

जा मति पच्छइ सम्पजइ सा मति पहिली होइ।
मुञ्ज भणइ मुणालवइ विघन न वेढइ कोइ ॥९॥

जइयह रावणु जाइयउ दहमुह इक्कु सरीरु।
जणणि वियम्भी चिन्तवइ कवणु पियावउ खीरु ॥१०॥

सइस नहीं स राणु न कुलाइ नहु लाइउ।
सउ पगारिहिं प्राणरि न वट्टमानरि होसीइ ॥११॥

राणा सव्वे वाणिया जेसलु वड्डउ सेठि।
काहू वणिजडुं माण्डीयउ अम्मीणा गढहेठि ॥१२॥

तइ गरुआ गिरनार काहू मणि मत्सरु धरिउ।
मारीता खंगार एकु सिहरु न ढालियउ ॥१३॥

जेसल मोडि म बाह वलि वलि विरूअ भावियइ।
नइ जिम नवा प्रवाह नवघण विणु आवइ नहीं ॥१४॥

वाढी तउ वढवाण वीसारता न वीसरइ।
सूना समा पराण भोगावह तइ भोगवइ ॥१५॥

---

११ जा मति=जो बुद्धि। पच्छइ=बाद में। सम्पज्जइ=उत्पन्न होती है। वेढइ=घेरता है। १२ वियावउ=पिलाऊं। खीर=दूध। १४ ... =... न थे। माण्डीयउ=माना=रचा बनाया। वणिजडुं=वाणिज्य।

१६ मत्सर=ईर्ष्या। मारीता खंगार=खंगार के मरने पर। ढालियउ=गिरा दिया।

स्वयभूच्छद

मित्तु मक्कडु सत्तु वहुयरणु [1]
रअ सायरू दुप्पगमु
सो वि वधु पाहाण-खण्डहिं
जह रामहो तह लच्छि ववसायवन्त हो।
भाई-वियोए जिह जिह करइ विहीसणु सोओ
तिह तिह दु खेण रुवइ णाणर लोओ।
सव्व गोविउ जइवि जोएइ।
हरि सुट्ठवि आयरेण,
देई दिट्ठी जहि कहिं राही
को सक्कवि सवरेवि
दड्ढ़णयण णेहें पलोट्टउ [2]
ठाम ठामहिं घास संतठ रत्तिहिं परिसठिआ
रोमयणरस चलिअ ग डिआ
दीसन्ति धवलुज्जला
जो्हा-णिहाण गोहना [3]
पहु सद्दमु णहु मणोअ
महि सरम, सलिल सरस
सरव मेह दिसि वहूल विज्जुल
पहिअ-णण-मण मोह-अरु सवरिचारू पाउसु [4]



---

१ मित्र वदर। शत्रु रावण सामने अगम्य सागर। उस भी वाध लिया पत्थर-खडा से। जिस प्रकार राम को उसी प्रकार दूसरे यवसाय करने वाले नर को ही लक्ष्मी मिलती ह।

२ हरि सब गोपियो का आदर स देखने हैं पर उनकी दृष्टि वहीं है जहा राधा है। स्नहसिक्त आखा को कौन रोक सकता है।

३ ठोर ठोर पर घास रक्खी है। रात म बठो है जुगाली करती हुई गायें। उनके गाल हिल रहे है एव सफद गोरी चादनी के समूह के समान गोधन।

४ पथ कीचडभरा है आकाश गुस्स स भरा है धरती सरम है पानी सरस है बादल गरजन है है दिशाओ म बिजली है पथिको क लिए सुन्दर पावस आ गई।

स्वयंभुदेव १

रामकथा का उद्गम और कवि की आत्मलघुता

(१)

रामकथा और नदी

वद्धमाण—मुह—कुहर—विणिग्गय
रामकहा—णइ एह कमागय ॥
अक्खर—वास—जलोह—मणोहर
सु—अलङ्कार—छन्द—मच्छोहर ।
दीह—समास—पवाहावङ्किय ।
सक्कय—पायय—पुलिणालङ्किय ॥
देसीभासा—उभय—तडुज्जल
कवि दुक्कर—घण—सद्द—सिलायल ॥
अत्थ—बहल—कल्लोलाणिट्ठिय
आसासय—समतूह—परिट्ठिय ॥
एह रामकह—सरि सोहन्ती
गणहर—देवहिं दिट्ठ वहन्ती ॥
पच्छइ इन्दभूइ—आयरिएं
पुणु धम्मेण गुणालङ्करिएं ॥

कवि, अपने प्रसिद्ध काव्य पउम चरिउ में स्वीकृत रामकथा का नदी का रूपक देता है और हर प्रकार अपनी रामकथा की परम्परा को चौबीसवें तीर्थंकर महावीर से जोड़ता है।

(२) वद्धमाण—वर्द्धमान, महावीर का नाम। मुहकुहर=मुखकुहर। कमागय—क्रमागत। अक्खरवास=अक्षर व्यास। जलोह=जलौघ=जल का समूह। मच्छोहर=मत्स्यधर, मछली धारण करने वाली। सक्कय=संस्कृत प्राय... पायय=घन शब्द शिलातल।

जासु पसें संमाणाराउ
दिसिदरेण अणुत्तरवाउ ॥
पुणु रविसेणायरिय पसाए
बुद्धिए अवगाहिय कइराए ॥
पउमिणि जणणि गब्भ-संभूए
मारुयएव—रूव—अणुराए ॥
अइ—तणुएण पईहर—गत्तें
छिव्वर—णासें पविरल—दन्तें ॥

घत्ता

णिम्मल-पुण्ण-पवित्त-कह-कित्तणु आढप्पइ ।
जेण समाणिज्जन्तएण थिर कित्ति विढप्पइ ॥

(२)

णाम जिणय—

णउ संधिहे उप्परि बुद्धि थिय ॥
णउ णिसुयउ सत्त विहत्तियउ
छव्विहउ समास—पउत्तियउ ॥
छक्कारय दस—लयार ण सुय
वीसोवसग्ग पच्चय बहुय ॥
ण बलाबल धाउ णिवाय—गणु
णउ लिङ्गु उणाइ वक्कु वयणु ॥
णउ णिसुणिउ पञ्च-महाय कव्वु
णउ भरहु णेउ लक्खणु वि सव्वु ॥
णउ बुज्झिउ पिङ्गल—पत्थारु
णउ भम्मह—दण्डि-अलङ्कारु ॥
ववसाउ तो वि णउ परिहरमि
वरि रड्डावद्धु कव्वु करमि
सामण्ण भास छुडु सावडउ
छुडु आगम-जुत्ति का वि घडउ ॥
छुडु होन्तु सुहासिय—वयणाइं
गामिल्ल—भास—परिहरणाइं ॥
एहु सज्जण—लोयहो किउ विणउ
जं अबुहु पदरिसिउ अप्पणउ ॥
जइ एम विरूसइ को वि खलु
तहों हत्थुत्थल्लिउ लेउ छलु ॥

घत्ता

पिसुणें किं अब्भत्थिएण जसु को वि ण रुच्चइ।
किं छणचन्दु महागहेण कम्पन्तु वि मुच्चइ॥

सत्त विहत्तियउ=सात विभक्तियाँ। छव्विहउ=छः विध। छक्कारय=छः कारक।
वीसोवसग्ग=बीस उपसर्ग। पच्चय=प्रत्यय। उणाइ-वक्कु=उणादि वाक्य।
महाय कव्वु=महाकाव्य। पत्थारु=प्रस्तार। सामण्णभास=सामान्य भाषा।
गामिल्ल भास—ग्रामीण भाषा। पिसुण=पिशुन, दुष्ट।

हनुमान सीता संवाद—

प्रस्तुत गीति पंचम चरित्र के सुन्दर कांड में है। पंचम चरित्र-हनुमच्चरित रामचरित, राम का सम्बन्ध सूत्र बन न है पद्म-कमल का भी सम्बन्ध सूत्र न है, सारा प्रसंग भाषा में रामचरित का पञ्चम चरित्र इसीलिए कहा गया ? हनुमान के पंचम चरित्र में कांड हैं। विद्याधर, अयोध्या, सुन्दर, युद्ध और उत्तर कांड। सीता का अपहरण अयोध्या कांड में हो चुका है। विराधित और सुग्रीव के सहयोग से हनुमान को दूत बनाकर सीता के पास भेजा जाता है। प्रस्तुत पाठ में उन दोनों की बातचीत है। हनुमान से राम के प्रति आश्वस्त होकर सीता भोजन ग्रहण कर लेती है, इसके पूर्व वह भोजन से विरत थी। विषय का रूप देती है जिसका पद है राम की भावना मोह।

गत मन्दोदरि प्रिय पहों
हनुमन्तु वि सीयहे सम्मुहु।
आगए थिउ अहिसिय कह
णं सुरवर-वन्दिहें मत्त-गउ॥

(२)

मांसल—पवर—पीवर—थणाए
कुवलय-दल-दीहर लोयणाए।
पहु लिविय-हार-कलणाएगए
हणुवन्तु पवुच्चिउ हि-गमणाए॥'

त णिसुणेंवि सिरसा पणमन्ते
अविचलय कुसल मत्त हणुवन्तें ॥
माए माए करें धीरउ णियमणु
जीवइ रामचन्द्र स-जणद्दणु ॥
णवरि परिट्टिउ लोह-विसेसउ
तउमि व सत्त-सङ्घ-परिसेसउ ॥
चन्दु व बहुल-पक्ख-खय-खीणउ
णिवइ व रज्ज विहोय विहीणउ ॥
रुक्खु व पत्त रिद्धि-परिचत्तउ
मुरउ व मुक्कर सइ चिन्तन्तउ ॥
तरणि व णिय किरणेंहि परिवज्जिउ
जलरुहु व तोय तुसार परज्जिउ ॥

घत्ता—

इट्टु व चवण-काले रइसिउ कमसिहिं आगमणें जेम जलहि
खाम-खामु परिखीण-तणु तिह तुम्ह विओए दासरहि ॥

(४)

लक्ष्मण आपकी याद करता है—

अयण वि मयरहरावत्त करु
सिर-सिहर चडाविय कमय-करु ।
णिय णामं णि वि णउ ण अणुसरइ
सोमित्ति जेम पइ सभरइ ॥'

(पद्धडिया दुवई)

परिवज्जिउ=परिवर्जित । चवण-कालें=चयनकाल प्रस्थान के समय ।
परिखीण तणु=परिक्षीण तनु ।

(४) मयर हरावत्त कर ।
अणुसरइ=अनुसरति अनुसरण करता है । सुमरइ=स्मरति याद करता है

सुमरइ त्रिय-गन-दसु माया इव
समरइ निद्दि पाउस छाया इव ॥
सुमरइ जणु पहु मगनाया इव ॥
सुमरइ भिच्छु सुसामि दया इव
सुमरइ पाहु सरीर-सया इव ॥
सुमरइ मत्त हत्थि धारा इव
सुमरइ सुगिरक गड-धवरा इव ॥
समरइ निद्धण धण-संपत्ति व
सुमरइ सुयक अमुसत्ति व ॥
सुमरइ भविउ जिणवर भत्ति व
सुमरइ पइवालहा विहति व ॥
समरइ ससि चंदुज्ज पहा इव
समरइ मुद्धगु सुवइ फसा इव
जिम दउ सुमरइ देवि अणुदिणु
रावहो पासिउ सो दूमिय मण ॥

घत्ता

देउ गहाय परवज्झ, धण्णोहवु विसु-गुणहो सामि
धाउ रणि धणवइ दिणु सोलिलिहै सोवन्न वहि हामि ॥

(४)

सीता की प्रतिक्रिया और रावण की धमकी—

जो सुगन्ध-आनित महाराइहे
रावणु पपंजुल उच्चरइ।

पच्छुत्त फुरंति मयच्छहु गउ
एं मज्जु अलद्धु निसिट्ठ-मउ ॥१

(पद्धडिया दुवई)

पढमु सरीरु ताहँ रोमंचिउ
पच्छए णयर विमाण खंचिउ ॥
दुक्करु रामचन्दु पहु आइउ
मच्छुडु अण्णु को वि सपाइउ ॥
अत्थि अणेय एत्थु विज्जाहर
जे णाणाविह रूव भयंकर ॥
मण्णइँ मइ स-भाव गिरिक्खिय
घल्लणहिँ वि चिरु ताहि परिक्खिय ॥
ए वण-देवय थाणहों चुक्की
'मइ परिणहों' पभणन्ति पढुक्की ॥
णवर णियाणें हूअ विज्जाहरि
किलिकिलन्ति थिय अम्हहँ उप्परि ॥
लक्खण-खग्गु णिएवि पणट्ठी
हरिणि व वाह-सिलीमुह-तट्ठी ॥
अण्णेक्कए किउ णाउ भयंकरु
इउ सि छलिय विच्छोइउ हलहरु ॥

घत्ता

जहिँ लक्खणु जहिँ दासरहि आयहों दूअत्तणु कहिँ तणउ ।
मायारूवें पिउ करे वि मग्गु जोअइ को वि महु तणउ ॥

थाती (थगिया) । फुरंति=फूट कर । दुक्कर=दुष्कर कठिन । मच्छुडु=शायद । सपाइउ=संप्राप्त आया है । एत्थु=यहाँ । विज्जाहर=विद्याधर । मइ=मुझे । वण देवय=वन देवता । थाण हो चुक्की=स्थान से चूक गई । पढुक्की=पहुँचा । णियाण=निदान में, अन्त में । खग्गु=खड्ग-तलवार । तट्ठी=व्याध के मुँह के भय से । विच्छोइउ=वियुक्त किया । कहिँ तणउ=किसका कहा ।

(६)

हनुमान की दृढ़ परीक्षा—

आरुसवि सेण्णु वरि पत्त मड्ढु
पेसन्तु पवणसुअ एइ मड्ढु ।
मायरिण हरि आसंकियउ
किह मयरु-महोवहि लंघियउ ॥
पच्चारिउ तिरि-कन्तें गिलगिण
'अइ दुट्ठ राम-दूउ किंतु भणिउ ॥
सो किह वलिउ पण्ड पइ सायर
जो सो उग्ग-वाह मयरहर ॥
कल्लोल-सल्ल-भाड-दुमाउड
संसुमार-करि-मयर-भयाउड ॥
दीव-सण्ड मम जम सियल्ह
किच्छ-विसीउ पेम पहु-दुणए ॥
एवहु महोवहि दुत्तरगारो
अण्णु वि आसाली-सालो ॥
सो महयड दुमहु संगाह प
लंघइ किरणड पव्वाइयए व ॥
मही वलेवडु दरिवरिय दरियड
वयगाहु वयग्गाह-आलियड ॥
अण्णु महाउवे विन्तुरिय हरि
णम साणउव सवणत्तिय ॥

घत्ता

आयइँ मच्छइँ पडिहरेंवि तुहुँ लङ्का-णयरि पइट्ठु किह ।
अट्ठ वि कम्मइँ णिद्दलेंवि वर सिद्धि-महापुरि सिद्धु जिह ॥

(७)

हनुमान का प्रत्युत्तर—

तं णिसुणेवि वयणु मच्छरियउ
विसेहविणु अंजणेउ चविउ ।
परमेसरि अज्ज वि भन्ति तउ
जाणेहि वज्जाउहु समरे हउ ॥१॥

जोएहि वमिसिय लङ्कासुन्दरि
लइय मारि हुव्वरगु व सुन्दरि ॥
णिहयामालि महोयहि लङ्घिउ
सुरहिं गयणि वि आसङ्किउ ॥
एउ वि जइण पत्तिज्जहि
तो राहव मङ्गेय सुणेज्जहि ॥
जइयहुँ वणवासहो णीसरियइँ
दसउर-कुब्बर पुर पइसारियइँ ॥
णम्मय विञ्झु तावि अहिणाणइँ
अरुणगाम रामउरि पयाणइँ ॥
जयवइ णन्दावत्त णिहाणइँ
वंसत्थलि-यमउल ठाणइँ ॥
गुत्त सुगुत्त-महारि णिवेसइँ
खग्गु सम्बु चन्दणहि पएसइँ ॥

---

(७) मच्छरिउ = मत्सरित = कुपितीय या क्रुध्यवान् । अंजणेउ = आंजनेय । चविउ = कहा । पत्तिज्जहि = विश्वास करती हो । जइण = यदि । वणवास हो = वनवास के लिए । दसउर = दशपुर = मन्दपुर-मन्दसौर । णम्मय = नर्मदा

पर-तिय मग्गु मंगु महु पच्चहों
जें घुरुहहा ममार-पयच्चहों ॥

घत्ता

म,*जाणेज्जहा पहरू गउ जमरायहो फेरउ आउ-तरु ।
णिसरोहिं णाडि-कुढारएहिं दिवे दिवे छिज्जइ आउ-तरु

(१०)

स्वप्न दर्शन-

णिसि-पहर पच्छिम नाहियाउ
णं जग-कवाड उग्घाडियए ।
जहिं तइए पाल पगासियउ
ठियइए सिविणउ णिय्गसियउ ॥
हले हले लयलिए लइए लयङ्गिए
सुमणे सुराहिए तार तरङ्गिए ॥
हले फरंलिए कुवलय-लोयणे
हले गन्धारि गोरि गोरोयणे ॥
हले विज्जुप्पहे जालामालिणि
हले हयमुहि गयमुहि कङ्कालिणि ॥
सिविणउ अज्जु माए मइँ दिट्ठउ
एक्कु जोहु ज्जनाणेँ पइट्ठउ ॥
तरु तं सच्चु तेण आरोसिउ
थज्जे निह पण मञ्झ पइरिसिउ ॥
सो वि णियइउ इन्द-राए
पाय विण्डु ण गज्ज-कमाए ॥
पट्टणे पइसाहिउ वहेविणु

८ रयणासवि=रत्नश्रवा एक विद्याधर । गइगमण=अप्रतिहतगति । वइगा धारियउ=बढाया । मणुप्पवलण=प्रबल । पइट्ठउ=प्रविष्ट । पउम्मदण=बोया । जम-णयरहो=यम पुरी=यम का नगर । छिज्जइ=काटा जाता है । आउ-तरु=आयुरूपी वृक्ष ।

१० उग्घाडियए=उद्घाटित होने पर । पगासियउ=प्रकाशित हुआ । णियइए=निरखती । वइरिसणु=घर घर । सावऽच्छरेँ=सब एक ओर न । आवट्टिय=आवर्तित कर ली गई हो ।

घत्ता

एहु सिरिणउ सीयहें सहतु जसुरामहो विनउ जणहणहों।
सहु परिवारे सहु पलेण सयवालु पटुष्कु दसाणण हो ॥

(१२)

लंका सुन्दरी का प्रवेश—

तहिं अवसरे पीण पत्रोहरिए
अरुणुग्गमे लङ्कासुन्दरिए।
इर अइरउ विण्णि मि पेसियउ
हणुवन्तहो पासु गवेसियउ ॥
जहिं उज्जाणे परिट्ठउ पाणवि
सयल णरिन्द विन्द चूडामणि ॥
तहिं संपत्तउ विण्णि वि जुवइउ
ण सिय सामय तवसिरि सुगइउ ॥
ण समन्दयउ जिणागमे दिट्ठउ
जयकारेप्पिणु पासे णिविट्ठउ ॥
तेण वि ताहिं समउ चिउ पम्पेवि
पण्ठउ कञ्ची-दामु समप्पवि ॥
पुणु विण्णत्त हलीस मणोहरि
'भोअणु तुम्ह वेम परमेसरि ॥'
अक्खइ सीय समीरण पुत्तहों
'वासर एक्कवीस मइँ भुत्तहो ॥
जाम ण पत्त वत्त भत्तारहो
ताम णिवित्ति मज्झु आहारहो ॥
अज्जु णवर परिपुण्ण मणोहर
त जे भोज्जु ज सुअ रामहो केह ॥'

घत्ता

त णिसुणेवि पवणहो सुएण अवलोइउ मुहुअइरहे तणउ
"गम्पिणु अक्खु विहीसणहो वुच्चइसीयहें करि पारणउ ॥

---

११ पीण-पत्रोहरिए=पीन पयोधरा । अरुणुग्गमे=अरुण उद्गमे=सूर्योदय होने पर। इर अइरउ=चिरा, अचिरा । तवसिरि=तपश्री । णिविट्ठउ=बैठा। विण्णत्त=विज्ञप्त, निवेदित किया। पत्त=प्राप्ता=पायी।

(१४)

सीता का यौवन—

तं तेहउ सुन्दरि जोव्वणउ
पुणु कवि थयण-पक्खालणउ ।
मयणहवि मच्छु वर पच्चणेय
जिल्लाग दवि मह-गुन्दपुल ॥'
घर महु तणु णवे परमेसरि
रावि तेणु अहि राहव-केसरि ॥
जिमहो वे वि पुरनु मणोरह
पिहउ अवण रामायण-कह ॥'
तं तिहुणेवि देवि गम्भीरिय
सादुरस कर्नि पराल्लिय ॥
सुन्दर तिय पर गयगुण पहुमहे
पहु ण तिमि होइ पुन-पहुमहे ॥
गम्मइ चन्द अइ रि णिय सुलहक
वि समणारे गमणु सहुरक ॥
अणवेइ होइ दुगुणदुण-सीमउ
गनमहाइ तिय वित्ति मइमउ ॥
अहि मे णणु अहि मे भामदूर
मणु कोवि मवइ विणु मवहइ ॥
णिहए दमाउइ अर अव मई
मइ जागवइ सहु पमहइँ ॥

क्रमा

(१५)

हनुमान की गापथी और प्रतिवेदन—

अएणु वि आलिङ्गे वि गुण पणउ
स-देसउ अक्खु महु त्तणउ।
"चल तुम्हु विओए जणय सुय
थिय लीह-विसेस ण रइ विगुअ॥'
भीए मयङ्क-लेइ गइ-गहिय व
मीए सुरन्द रिद्धि तव-रहिय व।
मीए कुदेस-मज्झे वामाणि व
मीणाऽजुइ मुहें सुकइ सुवाणि व॥
मीए रिवायरम्-रसणें रत्ति व
मीए कु-नरवर विणवर भत्ति व॥
मीए दुभिक्खे अत्थ-सपत्ति व
मीए वुड्ढत्तणेण बल-सत्ति व
मीए, चारत्त विहूणहो कित्ति व
मीए कु-कुलहरें कुमरहु णित्ति व।"
अएणु वि दसरह-नम पगासहो
वच्छत्थल जय-लच्छि णिवासहो॥
रणे दुव्वार-वइ रि विणिवारहो
तहो स देमउ णेहि कुमारहो॥
वुच्चइ' पडें हो तण वि लक्खण
अच्छइ मीय रुयन्ति अलक्खण॥

घत्ता

णउ देवेहिं णउ णाणेंहिं णउ रामेणहरि वियारएण।
पर मारेव्वउ दहवयण सइ मुअ जुअलेण तुहारएण॥



झिज्जइ कुमारु सुसियाणणउ ।
ण करिणि विरहे वण वारणउ ।
जउ जउ सीमंतिणि संचरइ ।
तउ तउ चडुयार-सयइं करइ ॥
सक्कहिं दिणि णयणाणंदणिए ।
णिब्भच्छिउ दुमयहो णंदणिए ॥
एत्थु कराल पुरि गंधव्व पच महु पेसणु ।
जइ जाणंति पइं त लेंति, पाव नम-मासणु ॥१॥

जोएप्पिणु दोवइ मुह-कमलु ।
पभणइ णर-णाय-सहास-बलु ॥
हउं सुहड-सएहिं पडिवज्जियउ ।
पइ, सुंदरि णवर पराज्जियउ ॥
पडिमल्लु ण हरि-हर-चउरयणु ।
पचहिं गंधव्विहिं का गणणु ॥
लहु करि पसाउ जीवावि महं ।
सु जाणमि पसुमइ-अप्पु पइं ॥
अवहेरि करिवि गय दुमय-सुय ।
सहो णयरी वामा-हत्थ हुय ॥
णिय-ममहे वड्ढिज्जइ सहसहे ।
मगु रत्तहिं आयहे तीमइहे ॥
जहिं अच्छमि हउ एयग-मगु ।
तहिं पट्टवि लहि ममालहणु ॥

को पज्जलइ=प्रज्वलित=जलना है । मयण सिहि=काम की ज्वाला । झिज्जइ=क्षीण होना है । सुसियाणणउ=शोषित मुख वाला । वण वारणउ=जंगली हाथी । चडुयार-सयइं=सैकड़ों चाटुकारताएं । एक्कहिं दिणि=एक दिन । णयणाणंदणिए=नेत्रों को आनंद देने वाली ने । विब्भच्छिउ=डांटा । पसण=प्रेषण=सेवा, आज्ञा ।
जोएप्पिणु=देखकर । पभणइ=प्रभणति=कहता है । णर णाय-सहास-बलु हजारों नरनागों (गज) के बल वाला । सुहड-सएहिं=सैकड़ों सुभटों द्वारा । उ=मैं । णवर=केवल । गणण-गणना=गिनती । पसाउ=प्रसाद । लहु=शीघ्र । जीवावि=जिलाओ । पइं=तुम्हें । अवहेरि=अवहेलना उपेक्षा ।

म-वि पेसिय तट-त्रि परिय फरे।
रद्द-सामसेण पर्वत-परे॥
मीदहो दरिसि त्रिदं पिय-पुरुषेहिं केस-त्रि पुरुषी।
दंड विराड उहिं.... ..रुउ हरसि पहुल्ली ॥२॥

द्रौपदी का भीम के पास पहुँचना—

पिय-भीमहं मन्दुडु कहि मि गय।
हउ सेल विक्रिमि दहुद-हय॥
उद्द पंपहं दप्पु वि होवुपुरि।
है. जुपद रग-मर-परए-पुरि॥
पसाद्द दान उंवद पपनु।
गड दान दिवापड पयपगु॥
पडिदन्ग रवगि, वितपति गनु।
कारईवर-कगरी—दरग—गनु॥
किम्बीर—पंर—अन—गोपर हो।
गय दोसइ पास विमोपर हो॥
ए गग—नहा—गइ गायर हो।
एं गग—हर—परिन दिवायर हो॥
एं पांगी करिहो करहुमार हो।
ए दाहर—दम्परि मर—पाहो॥

णिणअेण णिउन्नाविउ ममुद्दु ।
ण सीद किसोअरि पच मुद्दु ॥
रोवइ दुमय—सुय परिभाविउ णिण्किय—हत्था ।
पइ जीवतअेण महु अेही भइय अवत्था ॥३॥

भाग्य की आलोचना—

तो भणइ विम्मीयरु अरि—दमणु ।
कहि, वाद माअे, किउ आगमणु ॥
परिभमिय केण, रहो वणउ दुद्दु ।
पक्खालहि लोयण लुदहि मुह ॥
त णिसुणिवि दुमय—राय—दुहिय ।
पभणइ द्धण—दुद्ध—हीर—सुहिय ॥
महु कवणु सुद्द अन्नउ कवण णिरि ।
जहिं तुम्ह वि अच्छइ एह विहि ॥
जो सा म—मातु महि—मंडल हो ।
णिउ हरिवि लच्छि आहंडलहो ॥
सो विहि—परिणामें रचरइ ।
घरि मन्छ हो णिच्च सेव करइ ॥
जो मुट्ठि—पहारें दलइ गिरि ।
ज खणु वि ण मेल्लइ सुन्ड—सिरि ॥

अंगार्यों के अंतराल को बाना बनाने म समय । विम्मीर=एक राक्षस । विमाग्हो=वक्कोदर क । विउन्नाविउ=ममकाया । पचमु हैं=सिंह । णिण्किय-हत्था=चलित हस्त । भयइ=हुई । अवत्थ=अवस्था ।

४ परिभाविउ=परिमार्जित किया । कहो रणाय=रोरमा । पक्खालहि=प्रक्षालयति= धोंद ला । द्धण-दुद्ध हीर सुहिय=स्तन म चमकत हीरों के समान शुभ्रवाली । णिहि=भाग्य । वहां=चेत है । महि-मातु=पृथ्वि श्रेष्ठ । विहि-परिणामें= भाग्य क परिणाम स । मच्छहो=मत्स्य (राज) क । मुट्ठि पहारे=मुट्ठी के

ন বসু হিহিমু হিমদীধ নিত ।
সো শত বিচি—পবিত মহানিত ॥
জা বচু—মদ—ধন ক্ষণ-মধু—দানব—পীত ।
কহই বিচ্ছিবিত সো জয়ই মদন মহীপ ॥৮॥
নয়না অলসায়—পদ—দান বহি ।
মঙ্গলিয় দুর্গ—নি হৃদু কলসু বহি ॥
দহি-বংশি মালি নবিগুচাহ ।
বন বিনম দুহু দিগুচাহ ॥
দুগ দুর্গম মনিনাই ।
দশি বারহ বসিলই নমিনাই ॥
বহিন্দ মালিহি বনারহিহি ।
কনরহি বামর-পন্না নহিহি ॥
সা বি দুবন-বিনদহী দুর দবি ।
বরি-মরহু ন দীনবি সু-দ্রম ক নি ॥
শীমন্দ মীমু ম-পবন-বসু ।
মোহু-বিঙ্কবিপর-পুহ-বমহু ॥
দ্ব পন মাহ হৃদি মানদ ।
নন-পুবন-বিনদহ আনন্দ ॥

संसार धम्मु ण णिरिक्खियउ ।
सुहु पेक्खिउ, पेक्खिउ दुक्खियउ ॥
देइ दुग्गि वि फलइ पंचालि पुराइय रुक्खु ।
जहिं णिय रायणिय किं सीयहिं थोडउ दुक्खु ॥४॥

भीम की प्रतिज्ञा—

अइक्कन्त दिवसि अ णिसीयम्बेण ।
परिभविय, माइ, ज पीयम्बेण ॥
तं तहिं जि कालि सिर णिट्ठवमि ।
पाहुणउ कयंतहो पट्ठवमि ॥
हउ ताम णरिंदहे सम्पिणयउ ।
णिय-रोसु तेण अब गणियउ ॥
जइ कइ वि चुक्कु अज्जोणियहें ।
मारमि रयणिहे कल्लोणियहे ॥
घुट्ठु तेण समउ संकेउ करि ।
पइसारहिं णच्चण साल घरि ॥
तहिं तु गिहे को वि ण सचरइ ।
तहिं कल्लइ कीयउ महु मरइ ॥
त णिसुणि वि पुलउब्भिण्ण भुय ।
गय णियय णिहेलणु दुमय सुय ॥

पेक्खिउ दुक्खियउ=दुःख कितना । पुराइय रुक्खु=पुराना वृक्ष ।

७ अइक्कन्त दिवसि=दिन के बीतने पर । णिट्ठवमि=नष्ट करूँगा । कयन्तहो=कृतान्त के । पट्ठवमि=भेजूँगा । सम्पिणउ=आश्रित ब्राह्मण रसोइया । अज्जोणियहे=आज दिन । कल्लोणियहे=कल के दिन । णच्चण सार घरि=

धिइ नाम भीउ परियलिय गिमि ।
मइ जेण न चिय पुण्ण दिमि ॥
कल्लइ दोवइहे जे कढ्ढिउ केस-कलावउ ।
सो मउ कि ण मउ, णं दिट्ठ-मरि आउ विहावउ ॥५॥

द्रौपदी का कीचक से सम्वाद—

दहिवयणइ पभणइ विवय-मय ।
पंचालि कुमारहो पासु गय ॥
कीचाविय तरु मराल-गइ ।
कुम आय पइम्वउ विमलमइ ॥

कीचक की कूट स्वीकृति एवं कीचक का भीम के पंजे में फँसना—

पडिवण्णु सव्वु तं भेयइत्ते ।
दुव्वार-वार मारण मइहि ॥
आलिंगइ नच्चण-साल तुहुं ।
तं माणहु निच्चिंत वि सुरय सुहुं ॥
गय तेत्थहो कहिउ विओयरहो ।
थिउ णियडि इहि दिट्ठी गोयरहो ॥
भीमेण वि तं पडिवण्णु रणु ।
अहिमुह पउ तान गउ अप्पवणु ॥
सेणा-हउ लेवि पसाहणउ ।
सकेय-भवणु गउ अप्पणउ ॥
तहिं भीमसेणु थिउ पइसरिवि ।
तहिं सीहु कुरंगहो रसु करिवि ॥
तहिं धणु थिरयणु पइट्ठु थिउ ।
ण-उ जाणइ अहिउ मरण-चिंधु ॥
रायाणुएण तिहुयणि धरिउ ।
णं कालें पढम कवलु भरिउ ॥
चिंतिउ कीयएण, लइ हउ पवनें मारिउ ।
ण-उ महलियि-रूव पहु कालें हरतु पसारिउ ॥८॥

---

८ दुव्वार-वार मारण मग्गि=दुवार जार का मारने की गरज से । सेणावइ=सेनापति । पसाहणउ=प्रसाधन । धणु=योधा रायाणुगएण=राजा के अनुगामी ने । विहुयहिं=बाला से । पसारिउ=फैला दिया ।

[illegible] পদ—

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ॥৪॥

कीचक वध—

सेणाइ पेक्खिवि अ-तुल-बलु।
ओहुल्लिउ भीमहो मुह-कमलु॥
किय होसइ मह्नु जस-हाणि रणि।
वज्जेसइ अयस-पडहु भुवणि॥
किय होसइ जणे वत्ते जणणउ।
वह-कट्ठय थि धीरवि अप्पणउ॥
आयासु करिवि णिय-भुय-जुयलि।
हउ मुट्ठि-पहारि वच्छ-यलि॥
घाएण तेण वइरस णयरु णिउ॥
सो कीयउ कुम्भागारु किउ॥
पइसारिय हत्थ-पाय उयरि।
णं पुंजिउ आमिस-पुंजु घरि॥
णीसारिवि भीमु महा भुयओ।
जाणाविउ दुमय-राय सुयओ॥
गंधव्विहिं विड मड्डु णिद्दारिउ।
पेयाहिव पुरि पट्ठविउ॥
घाइय पवर भड, मरु-मारिउ कीयउ जेण।
पच णवाहिअेण धरु वेढिउ भाय-सएण॥१०॥

---

१० पेक्खिव=देखकर। ओहुल्लिउ=नीचे झुक गया। वज्जेसइ=बजेगा। अयस पडहु=अपयश का डंका। जणणउ=निन्दा। कुम्भागारु=कूर्माकार। उयरि=पेट में।

भायों द्वारा इन्दारे की खोज पर द्रौपदी की बिदाई हुई—

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥११॥

द्रौपदी का चीत्कार और भीम का प्रकट होना—

णिसुणंती कन्हइ दुमय सुय ।
गंजोल्लहु धावहु, धाइ मुअ ॥
अहो जय जयन्त विजयन्त नरि ।
जयसेण जयानन्द-रमण करि ।
हो भी सुण कुट्टिणिहि माइयउ ॥
भणिवि पायारु पराइयउ ।
अण्णेत्तहे जेत्तहे णइरि ण वि ॥
उप्पाडिय कोक्खी णाग कवि ।
मुक्कलिय केसु उक्खाय-तरु ॥
पच्चक्खु णाइ थिउ रयणि यरु ।
सवडम्मुहु भीमइ कीयएहिँ ॥
जमु दंड-पाणि ण भीयएहिँ ।
छड्डिज्जइ महया णाणु रडि ॥
णउ णाय पणट्ठ पइट्ठ कहिँ ।
पल्लट्टु विओयरु णिय-मरणु ॥
पडिवण्णु णिसायरु उग्गमणु ॥
सक्कप णट्ट मणि तहो मन्दहो अ णिद्दय-मल्लहो ।
कइग्गइ सिरसावइ, सग्गिधि णिणामहो घल्लहो ॥१२॥

---

१२ सवडम्मुहु=सामने मुख । छड्डिज्जइ=छोड दी गई । पणट्ठ=नष्ट हो गए । पइट्ठ=कहाँ चल गए । पल्लट्टु=पलटा ।

राजा की प्रतिक्रिया—

हरि चपमारि दुमनन्दनि सुघ ।
दसरानिव-प्रताप सुघ ॥
सचिवतबह मपन अनेग दिह ।
पहुँगि पडमनि भरिगि गिह ॥
निव दमदान दिदबरनमहो ।
गय गन्धदमु पान दिह्दमहो ॥
दन्दन्दू-नयनिहि दरगारिवि ।
दरादह मनातु रन्दु बविवि ॥
धनानाह निहेनतु जाइ दिर ।
इन्दमह मुनेरूदो गान दिर ॥
ला-डाहि मनादिप पाद-निजु ।
रासहो म-न्नारहो दादि मुह ॥
मदूनदुत-ननद मन्दुनरत ।
बोल्हिवहह गेन-थर्म मचेत ॥
जाइ नदि पानिवर बद-विनह ।
रो पुर पानबह सन्दु मह ॥
सह दुनु गनि मद्दनादि गेदि दिवरा देगहु ।
दुन्द-मन्दगाहि पको रतु मह बजपहु ॥१३॥

[२]

महाकवि पुष्पदन्त

आत्मलघुता और दुर्जननिंदा

(१)

अकलंक कविल कणयर मयाइं
दियसुगय पुरंदरणयमयाइं ।
दत्तिल विसाहिलुद्धारियाइं
णउ णायइं भरहवियारियाइं ।
णउ पीयइं पायंजल जलाइं
अइहासपुराणइं णिम्मलाइं ।
भावाहिउ भारवि भासु वासु
कोहलु कोमलगिरु कालियासु ।
चउमुहु सयंभु सिरिहरिसु दोणु
णालोइउ कइ ईसाणु बाणु ।
णउ धाउ ण लिंगु ण गणु समासु
णउ कम्मु करणु किरियाविसेसु ।

---

१ अकलंक कपिल जैनाचार्य अथवा कवि सांख्य शास्त्र कणयर वैशेषिक दार्शनिक द्विज ब्राह्मण सुगत=बौद्ध पुरंदरणय=चार्वाकमत के सम्पादक पुरंदर) के सिद्धान्त । दत्तिल=दत्तिल और विसाहिल संगीतकारों की रचनाएं भरह=भरत के रचे शास्त्र । पायंजल जल=पतञ्जलि का शास्त्र इतिहास और निर्मल पुराण । भावाहिय भारवि नाटककार भास, महाभारतकार व्यास कवि कोहल चतुर्मुख पद्धड़िया बद्ध काव्य का रचयिता स्वयम्भू कोमल वाणी का कालिदास श्री हर्ष, द्रोण ईशान और बाण आयमु=आगम ।

भरत बाहुबलि युद्ध

'आदि पुराण'—आदि तीर्थंकर ऋषभ का जीवन चरित है। यह महापुरुषों का एक महत्वपूर्ण चरित्र रहा है। ऋषभ देव १४ वें कुलकर नाभिराय के पुत्र थे। उनका युग—देवभूमि की समाप्ति और कर्मभूमि (कृषि सभ्यता) के आरम्भ का युग था। ऋषभ की दो पत्नियां थीं यशोवती और सुनन्दा। यशोवती से १०० पुत्र और एक कन्या ब्राह्मी, भरत उनमें बड़ा था। सुनन्दा से सुन्दरी और बाहुबलि। ऋषभ राज्य का बेटों में बंटवारा कर वन में जा कर तपस्या करते हैं। भरत, दिग्विजय के बाद अयोध्या लौटता है उसका चक्र नगर सीमा में प्रवेश नहीं करता इसका कारण था—बाहुबलि का अभी तक उसकी अधीनता नहीं स्वीकारना। भरत, दूत द्वारा अधीनता का प्रस्ताव भेजता है जिसे बाहुबलि ठुकरा देता है फलस्वरूप, सेनाएं आमने सामने आ डटती हैं। लेकिन वृद्ध मन्त्री हिंसा को टालने के नाम पर दोनों भाइयों को द्वन्द्व युद्ध के लिए आह्वान करते हैं। दृष्टिजल और मल्लयुद्ध में भरत को हराकर बाहुबलि दीक्षा ग्रहण कर लेता है। जबकि भरत को मन्त्री अयोध्या ले जाते हैं।

(२)

आरणाल

रविणिहकण्णकुंडला रयणमेहला मउडपट्टधारा ।
चलिया मंडलसरा समरसुरणरा कड वद्धहारा ॥

भरत की सेना के कूच का वर्णन—

होइ निरंतरु णिमिसे समंतरु
छिण छिण सिर रुहमियउ जलु।

---

१ रविणिहकण्णकुंडला=रवि निभ कर्ण कुंडल सूर्य के समान कानों के

चक्र का अवरोध—

(१)

थक्कइ चक्कु ण पुरि पइसरइ
सुक्कइँ पइ बुह णाइ णिम्मरइ ।
ण दोयणु पावइ मइतु
णं पुरलच्छिइ परिहिउ बलु ।
भरहपयावें धाविउ जायउ

आरणाल

णउपइसरइ पुरउरे रयणमयद्दरे जयसिरीवरग ।
भंगुर भामरायं णिसियधारय राइणो रहगं ॥
माणुसिंतु ण छज्जइ आयउ ।
इन्दह पडिकूलण मोलउ
घणघणतु मयहूयवहलो लउ ।
सहु नि चक्कवट्टि अवलोयहु
णयरे णीतु धरिउ ण लोयहु
मणिमउडमाला येलालु
रायदिसायरि पुरणयकमलु ।

(धांवन) चक्र । जमिवद=पगट्ट ि िजज्जतउ=दुराए जाते हैं। उज्झहि=अयोध्या म । णरिवरि=नाठ ताला म ।

१ परिहिउ=पहन लिया है। जयसिरीवरग=विजयश्री के रग वाला। भंगुर भामुराय=चमक किरणों का समूह । णिसियधारय=पनी धार वाला। राइणो=राजा का। रहग=चक्र। मयहूय वह लाउ=प्रलयकाल की आग के समान लौना वाला। णि=हो। मणि मउड=मणिमयूख । समसलु=भ्रमर सहित। णहमणि=नभमणी न। स। विणिगउ=निकल गया। रत्तपंकु= लाल कमल। मङ्नायदु=सुन्दर कीर्ति वाला। अवसें=अवश्य ही। आयहु= इसको। णिराणा=नराज न। म्हरायणा=प्रसिद्ध राजा न। रहगप=

सुरहिगंधु सिरिसेविउ सभसलु
ण णाहसरि विहसिउ रत्तुप्पलु ।
वलयायारहु णिरु सच्छायहु
अवसें देइ धरणि कर आयहु ।

घत्ता

त चक्कु ण णयरिहि पइसरइ वेमहि जणियवियारउ ।
हियउल्लय कलडसहयं भरिउ णानइ धुत्तह केरउ ॥

(४)

आरणाल

ता भणिय णिराइणा रूढराइणा चडवाउवेय ।
किं थियमिह रहगय णिच्चलगयं तरुणतरणितेयं ॥

मन्त्रियों का सुझाव—

त णिसुणेप्पिणु भणइ पुरोहिउ
जेणेयहु गइपसरु णिरोहिउ ।
अक्खमि त णिसुणहि परमेसर
देवदेव दुज्जय भरहेसर ।
भुयजुयनलपडिनलनिद्दलणह
पयभ रथिरमहियलकपवणह ।
तेओहामियचंददिणेसह

---

४ णिराइणा=नृराज ने । रूढराइणा=प्रसिद्ध राजा ने । रहगय=चक्र । णिच्च लगय=निश्चलाग । गइ पसरु=गति प्रसार । पुरोहिउ=पुरोहित=मन्त्री । तेओहामियचंददिणेसह=अपने तज से चन्द्रमा और सूर्य को झुका देने वाले । कित्तिसत्ति जणमेत्ति-सहायइ=कीर्ति शक्ति और

जणणदिएणमहिलन्द्धिविलासइ ।
कित्तिसत्तिनणमेत्ति सहायइ
को पडिमल्लु एत्थु तुह भायहं ।
सेव करंति ण णहमाईनइ
णउ णवंति तुह पयराईवइ ।
देंति ण करभरु केसरिकंधर
पर मुंजियइ भुजंति वसु धर ।
अज्ज वि ते खिज्जंति ण जेण जि
पइसइ पट्टणि चक्कु ण तेण वि ।

घत्ता

रइयर परमेस रु चक्कधरणु धरणिहरणरणपरियरु ।
कामयतणुरुह णयणलिणमुह सुरगुरुहरणधुरधरु ॥

(५)

आरणाल

दूतों से भाइयों का निवेदन—

ता विगया वहुयरा जणमणोहरा खिरधुमारवास ।
दुमदललुलियतोरण रसियवारण छिण्णभूमिदेस ।।
तेहिं भणिय ते णिणउ करप्पिणु
सामिसालतणुरुह पणवेप्पिणु ।

लोगों की सीमित संख्या की सहायता पर निर्भर रहने वाले । णह माई वइ=नख चन्द्र का । पयराईवइ=चरण कमलों को (सेवा नहीं करते ।) ण तेण वि=इसी कारण से ।

५, विगया=चले गए । ता=तब । वहुयरा=बहुत से चर । रसियवारण=द्वार पर हाथी गरज रहे हैं । छिण्णभूमिदेस=जिसका भूभाग ढका हुआ है ।

सरणर णिसद्दरभयह जणेरी
करहु केर णरणाहहु केरी।
पणवहु किं बहुवेण पलावें
पुहइ ण लब्भइ मिच्छागावें।
व णिसुणेवि कुमारगणु घोसइ
तो पणवहु जइ वाहिरि दीसइ।
तो पणवहु जइ सुसुइ कलेवरु
तो पणवहु जइ जीविउ सुदरु।
तो पणवहु जइ जरइ ण भिज्जइ
तो पणवहु जइ पुट्ठि ण भज्जइ।
तो पणवहु जइ बलु णोहट्टइ
तो पणवहु जइ सुइ ण विहट्टइ।
तो पणवहु जइ मयणु ण तुट्टइ
तो पणवहु जइ कालु ण खुट्टइ।
कहि कयतवासु ण चुहुट्टइ
तो पणवहु जइ रिद्धि ण तुट्टइ।

घत्ता

जइ जम्मजरामरणइं हरइ चउगइदुक्खु णिवारइ।
तो पणवहु तासु णरेसहो जइ ससारहु तारइ॥

जणेरी=उत्पन्न करने वाली। केर=आज्ञा। णरणाहहु केरी=राजा की। मिच्छागावें मिथ्याभाव से। णोहट्टइ=नष्ट नहीं होता। विहट्टइ=नष्ट नहीं होता। तुट्टइ=टूटता है। खुट्टइ=नहीं छुटता। चुहुट्टइ=नहीं पहुँचता, नहीं लगता।

(६)

आरणाल

पणरनि तेहिं गहिरयं मयणमहुरयं णरिस पउत्त ।
आणापसरधारणे धरणिकारणे पणनिउ ण जुत्त ॥

पारतन्त्र्य की आलोचना—

पिढिरांदु महिगाडु महेप्पिणु
किह पणविज्जइ माणु मुएप्पिणु ।
वक्कलणिवसणु कंदरमंदिरु
वणहलभोयणु वर त सु दरु ।
वर दालिद् सरीरहु दंडणु
णउ पुरिसहु अहिमाणविहंडणु ।
परपयरयधूसर किंकरसरि
असुहाविणि ण पाउससिरिहरि ।
णियपडिहारन्डसघट्टणु
को विसहइ करेण वरलोट्टणु ।
को जोयइ मुहु भूभगालउ
किं हरिसिउ किं रोसें कालउ ।
पहु आमण्णु लहइ धिट्ठत्तणु

---

६ सवण महुरय=श्रवण को मधुर । पउत्त=प्रोक्त=कथन । आणापसरधारण=आज्ञा के प्रसार को धारण करने के लिए । महेप्पिणु=आदर करके । वक्कलणिवसणु=वल्कलों का पहनना । कन्दरमन्दिर=गुफा का घर । वणहलभोयणु=वनफल का भोजन । परपयरय धूसर=दूसरा की पदरज से धूसरित । किंकरसरि=सेवक रूपी नदी । पाउससिरिहरि=पावस की शोभा धारण करने वाली । मोणें=मौन से । खन्ति=शान्ति से । अज्जवु=ऋजु=सरल सीधा । पलाविर=प्रलाप करने वाला । महुर पयपिर=मीठा

परिहरेवि मणु णिम्मोहचणु
मोह वहु मह माविर अवर
[illegible] पहु पडिम [illegible] ।
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
केन वि गुणि ण होइ [illegible] ।

घत्ता

[illegible] ।
को णारइ [illegible] ॥

(७)

आरणाल

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]

बोलने वाला । [illegible] का [illegible] ।
[illegible] के [illegible] ।
[illegible] के घर में । [illegible] हो सकता है ।

७ [illegible] करता है । [illegible]

कोइवदेवहु वइ पारंभइ ।
विलम्बु पयइ डहिवि चन्नणतरु
सिसु गेण्हइ सप्पहु दोयसिरु ।
पीयइ कसणइ लोहियसुक्कइ
वत्थें सिक्कइ सो माणिक्कइ ।
जो मणुयत्तणु भोए णासइ
तेण समाणु हीणु को भीसइ ।
चित्तु ममत्तणि णेय णियत्तइ
पुत्तु कलत्तु मित्तु मचितइ ।
मरइ रसणफसणरमदड्डउ
मे मे मे करतु निह मेढउ ।
गज्जइ पलयकालमहल्लें
डज्झइ दुक्खहुयासणजालें ।
मजरु वि जर महिमउ मडतु
होइ जीउ मक्कडु माहुडतु ।

घत्ता

केलासहु जाइवि नवयरणु ताए भामिउ सिज्जइ ।
जेयेइ सुट्ठसहतापडिर समारिणि तिम टिज्जइ ॥

के लिए । मुत्तणिमित्तु=मुक्ति के लिए लिए हुए मणि को छोड़ता है ।
कप्पूरायरुक्खु=कपूर और अगरु के वृक्षों को नष्ट करता है ।

(८)

आरणाल

ज दिण्ण महेसिणा दुरियणासिणा णयरदेसमेत्त।
त मह लिहियसासण कुल निट्ठसण हरइ को पहुत्त॥

बाहुबलि का उत्तर—

केसरि केसरु वरसइ थणयनु
सुहडहु सरणु मज्झु धरणीयलु।
जो हत्थेण छिवइ सो केहउ
किं कयतु कालाणलु जेहउ।
हउ सो पणवमि को सो भण्णइ
महिलडेण कवण परमुण्णइ।
किं जम्मणि देवहिं अहिसिंचिउ
किं मदरगिरिसिहरि समच्चिउ।
किं तहु भग्गइ सुरवइ णच्चिउ
सिरिसइ रिणियइ किं रोमचिउ।
चक्कु दडु त तासु नि सारउ
मह पुणु ण कु भारहु केरउ।
करिमूयरदहरुडिमयरहं

---

८ दिण्ण=दत्त दिया। दुरियणासिणा=दुरित नाशी-पाप का नाश करने वाले। वरसइ थणयनु=वर सती का स्तनतट। सुहडहु-सरणु=सुभट की शरण। केहउ=कैसा। जेहउ=जैसा। मायगु=गज।

९ खज्जोए=खद्योत स जुगनू से। भण्णाणे=भनान से। वायसेण=कौए से। विज्झइ=बैधा जा सकता है? वसहण=वपम=वन से। वग्घु=

फोडइ छेत्तहु घडु पारंभइ ।
विणसवतु पयइ कड्ढिवि चंदणतरु
थिसु गेण्हइ मण्डु ढोयविकरु ।
पीयइ कसणइ लोहियसुन्कइ
तक्कें विक्कइ सो माणिक्कइ ।
जो मणुयत्तणु भोए णासइ
तेण समाणु हीणु को मीसइ ।
चित्तु ममत्तणि णेय णियत्तइ
पुत्तु कलत्तु मित्तु मचितइ ।
मरइ रमणफसणरसदड्ढउ
मे म मे करतु जिह मेंढउ ।
खज्जइ पलयकालमद्दूलें
डज्झइ दुक्खहुयासणजालें ।
मनुयहु जइ महिमउ मकलु
होइ जीउ मक्कडु माहु कलु ।

घत्ता

केलासहु जाइवि तवयरणु ताए भासिउ किज्जइ ।
जेणेह सुलसहुतापवरि ससारिणि तिस ठिज्जइ ॥

के लिए । मुत्तिणिमित्तु=मुक्ति के लिए, लिए हुए मणि को छोड़ता है ।
कप्पूरायरवत्तु=कपूर और अगर के वृक्षों को नष्ट करता है ।

(८)

आरणाल

ज दिएए महेसिणा दुरियणासिणा णयरदेसमेत्तं ।
त मइ लिहियसासण कुल विहूसण हरइ को पहुत्त ॥

बहुबलि का उत्तर—

केसरि केसरु वरसइ थणयलु
सुहडहु सरणु मज्झु धरणीयलु ।
जो हत्थेण छिवइ सो केहउ
कि क्यतु कालाणलु जेहउ ।
हउ सो पणवमि को सो भणणइ
महिखडेण कवण परमुण्णइ ।
किं जम्मणि देवहिं अहिसिंचिउ
किं मदरगिरिसिहरि समच्चिउ ।
किं तहु अग्गइ सुरवइ णच्चिउ
सिरिसइ रिणियइ किं रोमचिउ ।
चक्कु दडु त तासु जि सारउ
महु पुणु ण कु भारहु केरउ ।
करिसूयररहवरुडिंभयरहं

---

८ दिण्ण=दत्त दिया । दुरियणासिणा=दुरित नाशी पाप का नाश करने वाले । वरसइ थणयलु=वर सती का स्तनतल । सुहडहु-सरणु=सुभट की शरण । केहउ=कैसा । जेहउ=जैसा । मायगु=गज ।

९ खज्जोए=खद्योत से जुगनू से । भण्णाणे=मनान से । वायसेण=कौए से । विज्झइ=बैधा जा सकता है ? वसहेण=वपम=बल से । वग्घु=

णर णिहणमि रणि जे वि सहारइ ।
भरहु दरइ कि मज्झु भयायरु
तइ घुस्सइ जइ झुयरइ णिरायरु ।

घत्ता

तहु मेहणि महु पोयणणयरु आइजिणिंदें दिण्णउ ।
अहिमद्दउ पइउ असि मिहिसिहहिं जइ ण सरइ पडिवण्णउ ॥

(१)

आरणाल

ता तूणं जंपिय किं सुणिप्पिय भणमि भो कुमारा ।
वाणा भरहपमिया विद्धभूमिया होंति दुण्णिवारा ॥

दूत को फटकार—

पच्चरेण किं मेरु टलिज्जइ
किं खरेण मायगु खलिज्जइ ।
खज्जोएं रवि णित्तेइज्जइ
किं घुट्टेण जलहि सोसिज्जइ ।
गोप्पएण किं णहु माणिज्जइ
अण्णाणें किं जिणु जाणिज्जइ ।
वायसेण किं गरुडु णिरुज्झइ
णयरसलेण कुलिसु किं भिज्जइ ।
हरिणा किं मयारि मारिज्जइ
किं वसहेण रामु मारिज्जइ ।

बाप । मयकु=मानो चन्द्रमा, टेंटुएण=गला से । जिप्पइ=जीया जा सकता है ।

किं दूसें ससकु धवलिज्जइ
किं मगुएग कालु कवलिज्जइ।
डेंडुहेग किं सप्पु डसिज्जइ
किं चम्मेग सिद्धु वसि किज्जइ।
किं णीसासें लोउ णिहिप्पइ
किं पइ भरहणराहिउ जिप्पइ।

घत्ता

हो होउ पहुप्पइ अविणए राउ तुहुप्परि वग्गइ।
करवालहिं सूलहिं सव्वलहिं परइ रणंगणि लग्गइ॥

(१२)

आरणाल

ता दूउ विणिग्गओ णियपुर गओ तम्मि णिवणिवासें।
सो विण्णवइ सायर सारसायर पणविउ महीस।

भरत का दूत से प्रतिवेदन—

विसमु देव बाहुबलि णरवरु
णेहु ण संधइ संधइ गुणि सरु।
कज्जु ण वधइ वधइ परियरु
संधि ण इच्छइ इच्छइ संगरु।
पइ णाउ पेच्छइ पेच्छइ वग्गलु
आण ण पालइ पालइ णियछलु।

१२—परियरु=परिकर=सेना साज सामान। संगरु=युद्ध। आण=आना, कड्ढइ=निकलता है।

णर णिहणमि रणि जे वि महारइ ।
भरहु हरइ किं मज्झु भयामरु
तइ चुक्कइ जइ सुयरइ जिणवरु ।

घत्ता

तहु मेइणि महु पोयणणयरु आइजिणिंदे दिण्णउ ।
अब्भिडउ पडउ असि सिहिसिहहिं जइ ण सरइ घडि पयण्णउ ॥

(६)

आरणाल

ता दूएण जंपियं किं सुविप्पिय भणसि भो कुमारा ।
वाणा भरहपेसिया विद्धभूसिया हाति दुण्णिवारा ॥

दूत की फटकार—

पत्थरेण किं मेरु दलिज्जइ
किं खरेण मायगु खलिज्जइ ।
खज्जोएं रवि णित्तेइज्जइ
किं घुट्टेण जलहि सोसिज्जइ ।
गोप्पएण किं णहु मापिज्जइ
अण्णाणे किं जिणु जाणिज्जइ ।
वायसेण किं गरुडु णिरुम्भइ
णवकमलेण कुलिसु किं भिज्जइ ।
करिणा किं मयारि मारिज्जइ
किं चमहेण वग्घु मारिज्जइ ।

वाघ । ससहु=शशाङ्क चन्द्रमा, छेट्टेण=क्षार स । जिप्पइ=जीया जा सकता है ।

किं हसें ससकु धवलिज्जइ
किं मणुएण कालु कवलिज्जइ।
डेंडुहेण किं सप्पु डसिज्जइ
किं कम्मेण सिद्धु उसि किज्जइ।
किं णीसासें लोउ णिहिप्पइ
किं पइ भरहणराहिउ जिप्पइ।

घत्ता

हो होउ पहुप्पइ अविएण राउ तुहुप्परि वग्गइ।
करवालहिं सूलहिं सव्वलहिं परइ रणगणि लग्गइ॥

(१२)

आरणाल

ता दूउ णिग्गओ णियपुर गओ नम्मि णिरणिवास।
सो विण्णवइ सायर सारसायर पणविउ महीस।

भरत का दूत से प्रतिवेदन—

विसमु देव बाहुबलि णरेसरु
णेहु ण सधइ सधइ गुणि सरु।
कज्जु ण वधइ वधइ परियरु
सधि ण इच्छइ इच्छइ सगरु।
पइ णउ पेच्छइ पेच्छइ यमलु
आण ण पालइ पालइ णियछलु।

१२—परियरु=परिकर=सेना साज सामान। सगरु=युद्ध। आण=आना। बढइ=निकलता है।

माणु ण छड्डइ छड्डइ मयणु
दप्पु ण चिंतइ चिंतइ पोरिसु।
मंति ण मण्णइ मण्णइ कुलकलि
पुट्ठइ ण देइ देइ णाणावलि।
तुज्झु ण गणइ गणइ भुयदंडइ
अग्गु ण कड्ढइ कड्ढइ खग्गइ।
देव ण देइ माइ तुह पोयणु
पर जाणमि देसइ रणभोयणु।
ढोयइ रयणइ णउ करिरयणइं
ढोण्णइ मणु णरवरवयणइं।

घत्ता

सट्ठाणु कुलक्कमु कुलकहिं मच्छरमु पर उम्मड।
मच्छरविविजिउ सामरिसु अरसें णाइं तुम्भउ॥

(१३)

आरणाल

आमोसियन्वमारमो मणिरयणरसो तरंगिणिमग्गाओ।
ण खरलंपि ण माणओ णिसुहि याइआ सहइ मयणगओ॥

सध्या का चित्रण—

मज्झपरक्कमु जो भणियउ
सो वमनलक्कलोलहिं समियउ।

---

१३ कलागय अच्चु=कलागत उत्तम। मल्लागपुडिपु=कलापरा कली केयर। मल्लाराय विदवि=मद राग नहीं जो दूर किया है। तमोह

सम्भारायघुसिणु ज सकिउ
त तमोहमयणाहें ढकिउ ।
सम्भारायनिडवि जो फुल्लिउ
सो तमतवेरसनइपेल्लिउ ।
चदमइ दें तमकरि भग्गउ
कि जाणहु सो तासु जि लग्गउ ।
मयणिद्देण दीसइ सुहयारउ
तप्पवेसु वइरिहिं भल्लारउ ।
निसइ गवक्खहिं थणयलि घोलइ
वहुहारु व ससितेउ णिहालइ ।
रधाघारु थियउ अवारइ
दुद्धसक पयणइ मज्जारइ ।
रइपासेयनिंदु तेणुज्जलु
दिट्ठु भुयगहि ण मुत्ताहलु ।
दिट्ठउ कत्थइ दीहायारउ
घरि पइसत्तउ किरणुक्केरउ ।
मोरें पडरु सप्पु नियपिवि
मुद्धे घट्ट व ण गहिउ भडप्पिवि ।

घत्ता

गयणसरि हसपक्खदलइ पियविरहि णिगडयलइ ॥
लायइ ससियरपक्खालियइ धवलाइ जि णिरु धवलइ ॥

मयणाहें=तम समूह रूपी मगेन्द्र । तमतवेरनवइ=प्रधिकार रूपी महागज । चदमइदें=चन्द्र मृगेन्द्र । तमकरि=अन्धकार रूपी गज । जाणहु=पुनः से । तप्पवसु=तल्पभेष । गवक्खहिं=गवाक्षों गोखों से ।

(१५)

दृष्टि युद्ध में भरत की पराजय—

> इय चिंतिवि इन्दिय मंतिमंतु
> वुड्ढाणुगामि णीसेसु मंतु ।
> अवगण्णिवि रोसु णु परियणेहिं
> आयरकमण मियलोयणेहिं ।
> सकमायभार आमएणु ढुक्कु
> गोहिं मि अवलोइउ एक्कमेक्कु ।
> उड्ढाणणु पहु भयवलिहिं तोंडु
> पेच्छइ रविबिंबु व किरणचंडु ।
> हेट्ठिल्ल दिट्ठि उवरिल्लियाइ ।
> णिज्जिय दिट्ठिइ अविहल्लियाइ
> णं हारि कुमइ पचमगईइ
> विमयामा इव मुणिवरमईइ ।
> णं तावसि भग्गी विरहईइ
> णं सैलभित्ति गंगाणईइ ।

---

१५ वुड्ढाणुगामी=वृद्धानुगामी । परियणेहिं=परिजनों ने । आयर कमण मिय लोयणेहिं=नाग सहेत आगों वाले । उड्ढाणणु=ऊंचा मुख पेच्छइ प्रेक्षते=दिखाई देता है । हेट्ठिल्ल दिट्ठि=नीची दृष्टि । उवरिल्लियाइ= ऊपर की दृष्टि । अवहल्लियाइ=अविचलित । पचम गईइ=पंचम गति= मोक्ष । विरहईइ=विरहिया दुष्ट के प्रेम से । सेल भित्ति=शैल भित्ति= हिमालय रूपी दीवार । ससियरवईइ=चन्द्र मरीचि=चन्द्रमा की किरणों द्वारा । उपमा बाहुबलि ने उसकी अविचलित दृष्टि से भरत की दृष्टि को बल ही जीत लिया जैसे मोक्षगति कुमति को । मुनि की बुद्धि विषयाशा को, दुष्ट का प्रेम तपस्वी को, गंगानदी हिमालय की दीवार को जीतती इत्यादि । ससी हरिहिरण इवकमीह=चन्द्रमा के प्रतिबिम्ब में हरिण का लक्षण जिसमें

ण कमलपत्ति ससियरतईइ
कुमुओलि व मउलिय रविरुईइ ।

घत्ता

ठिउ हेट्ठामुहु चक्कनइ णिजिनउ पडिभडदिट्ठिपहावहिं ।
घल्लियणवकुसुमनलिहिं णन्तणुरुहु सथुउ देवहिं ॥

(१५)

सरोवर का वर्णन—

मओमत्तमायगलीलावहारा
रमावासवच्छत्थलोलव्हारा ।
पणिदेण नादेण इ देण दिट्ठा
पुणो दो वि राया सरते पइट्ठा ।
सरतेहि आलोइय सच्छणीर
विसाल गहीर तुसारोहतार ।
महावीमसुत्ताहिमाणिक्कदित्त
मरुध्धूयतिं गिच्छिधूली विलित ।
महीरगर गतकल्लोलमाल
मरालीपहालग्गलीलामराल ।
सिंगीणेउरालावणच्चन्त मोर
मिसाहारपूर तनाधूचउर ।
तरतामर देयरारद्ध कीत

सिंह दोऽ रहा है । समुत्तुंग=ऊंची उछलती हुई फेनराशि से जिसके किनारे ढक गए हैं गुंजन करते भ्रमरों का जिसम कोलाहल हो रहा है सारसों से भरा हुआ । सूर्य की मुक्त किरणो म पूत्र जिसम खिले हुए हैं जिसम पक्षीन्द्र मोर यक्षेन्द्रो के शब्द सुनाई दे रहे हैं नहाते हुए हाथियों की सूडो म जिसका पानी मथा जा चुका है ? (सरोवर का वर्णन)

१५ सुंदरानु=सुदर मे । दीसइ=दरयने दिखाई देती है । तारालो=तारावली ।

णलु भ तमीए लयावत्तणील ।
ससीहाहिसार गईवतमीई
समुत्त गफेण वलीहणग्गनूहं ।
भुणतालिकोलाहल सोरमिल्ल
इणुमुक्कपायावली फुल्लफुल्ल ।
सुयाणेय परिस्विद जस्सिन्नमइ
पमज्जत दूरिथदसोहामिमद ।

घत्ता

रहिं विण्णि वि जण श्रोयरिय पट्टणा थित्त जलनलि भायहु ।
थियलइ उप्परि मेहलहे एं मदाइणि हिमइरिरायहु ।।

(१६)

जल युद्ध—

वडियल धावती सु दरासु
दीसइ तारालि व मन्दरासु
ए मरगय महिहरि नाक्कति
ए णील महोरहि हमपति
देयती दीमइ सलिलधार
ए वट्टमइ वठिय सुतार
ए सुरसरि चवल तरग फार
गयणुल्ललत मसमु सुमार
श्रानसिवि पुणु भरहहु विमुक्क
एदा वणए गुम्नल मलक्क

मरगय महिहरि=मरकत महीधर गुज्जल का झुलम्म=भारी जल का धारा
१६ तम्रो=नदा=नव । मुयमहणि=बाहुयुद्ध मे । माए महल्ल=मान म श्रेष्ठ।

सलिलें णरमोत्तड पूरियाइ
बहु परियण सयणइं जूरियाइ
उग्घोसिउ णिवउ महासरेहिं
बाहुबलि णराहिव किन्नरेहिं

घत्ता

सीसु धुणतु सुयतु छलु सरवर वारि पवाहें सित्तउ।
पडि ओसारियउ पुदइनइ णाइ करिंदु करिंदें जित्तउ॥

(१७)

मल्ल युद्ध—

तओ भुयभडणि भायर लग्ग
णरिंदसिरोमणि घट्टपयग्ग।
कुलीण कुमारणि माणमहल्ल
पहाण महाबल णिरुण नि मल्ल।
सुरुचण कुंडल मंडियगंड
पसारियबाहु सरोसपयंड।
चिराउस चट्चडावियणाम
सुणिक्कमनंत णराहिवकाम।
समत्थ सिरीए रईए णिकेय
महारह भारह भक्खरतेय।
मिलंति मिलेप्पिणु हत्थि धरंति
धरेप्पिणु देहु घडेरि पडति।

---

१७ बडे भाई भरत को बाहुबल ने उठा लिया इस पर कवि की उपेक्षाए हैं मानो शुभ परिणाम ने जीव का उद्धार किया हो, सज्जन समूह ने सुकवि को का य का, मुनिवर ब्रत विशद का किसी महान् राजा ने देश का, इत्यादि। णिय कुल पईउ=निज कुल प्रदीप। सूस धुरिा धिराणबट्टि=नाम की धूनता

पदन नि णाणिरिंतरगु टेंति
फडीयलु फड्ड णिरु भिंदिंति ।
णिद्ध वि गाढ थणेण सुयंति
सुण्णिणु रहिडंति भमि चलंति ।
अलसुयलुद्ध विहाणमयाइ
पचप्पणकद्दमपंकणयाइ ।
घरंति वि धीर अविहरिया
णिरुड्ढम गाइ णयन णयण ।
दओ हयमाणिगिमाणण
सरामरमगलद्धवण ।
सुणिच्छरी क्वथीर भुणगु
अणिरंचिणिर सुणर सुणगु ।
पड्डम वरेणु करा परमाति
परणु थिरणु नरणु रमाति ।

घत्ता

कुअरें राए मसुद्दासि णायणिरंतरिणिमेसिदकरह ।
कयइन्दाकोरहलेण कि ण पुरन्दरु गिरि सरह ॥

(१८)

पहरि सुपुत्तें ण सुयसु
कमलायरणु ण रायस्सु ।

म कइन विन भा इन्द्रजन कौन कर सकता है ?

१८ हिमालय कायन्दमिनीनर गाय, और कमल-सरोवर का पाता मार द्व=
हो। न्वरदुर स्वद=गान्न्न में अना हुआ है। मार्ड्नर मुग

बाहुबलि ने भरत को उठा लिया—

ण सुद्दपरिणामें जीव भव्वु
ण सुयणसमूहें सुकइकव्वु ।
ण मुणिवरणाहें णयविसेसु
ण णरवरिन्दणाएण देसु ।
ण गमणवियारें बालभाणु
ण वाए चापयकुसुमरेणु ।
ण कामुयसत्थें कामचारु
ण सो जि तेण ससारसारु ।
ग्वयरामरमाणविमद्दणेण
पढमेण पढमजिणणंदणेण ।
अट्टलुद्धें बहुमण्णियधणेण
कुद्धें अवगण्णियसज्जणेण ।
परिपालियसयल वसु धरेण
ता चिंतिउ चक्कु सुरुधरेण ।
जमदाढाकलयहु अणुहरंतु
उद्धाइउ चचलु विप्फुरंतु ।
रविबिंबेण व जियविसमवेउ
तें परियचिउ बाहुबलिदेउ ।
थिउ दाहिणभुयदंडहु समीउ
जो एद्दइ किर णियकुलपईउ ।

को सुरयसुत्तिचित्ताणुवट्टि
को एम जिणइ जगि चक्कवट्टि।

घत्ता

णिमिउ भरहणराहिवइ बाहुबलीसु जएण पसमिउ।
गयणमाउ सुरसुन्दरियहिं पुप्फन्धपन्तिहिं सु पहसिउ॥

(१२)

बाहुबलि की आत्मग्लानि—

ण कमलसरु हिमाहयछायउ
दवदड्ढउ रुक्खु व विच्छायउ।
जं ओहुल्लियमुहु पहु दिट्ठउ
तं बलि भणइ हउं जि णिकिट्ठउ।
चक्कवट्टि णियगोत्तहु सामिउ
जेण महंतु भाइ ओहामिउ।
हा किं किज्जइ भुयबलु मेरउ
जं जायउ मुणिदुण्णयगारउ।
महि पुंसलि व केण ण भुत्ती
रज्जहु पडउ वज्जु समसुत्ती।
रज्जहु कारणि पिउ मारिज्जइ
बंधवहं मि विसु संचारिज्जइ।

प्रयोजन। हउं जि=मैं ही। णिकिट्ठउ=निकृष्ट। सामिउ=स्वामी। ओहामिउ=पराजित किया। मुणिदुण्णयगारउ=मुनियों के प्रति दुर्नय करने वाला। पुंसलि=पुंश्चली=कुलटा। भुत्ती=भोगी। समसुत्ति=समीचीन सूक्ति। रज्जहु पडउ वज्जु=राज्य पर वज्र पड़े। बंधवहं=बांधवों को

जिह अलि गर्ये गउ सयारहु
तिह रज्जेण जीउ तवारहु।
भइसामतमतिकयभायउ
चिंतिज्जतउ सव्वु परायउ।
तडुलपसयहु कारणि राणा
णरइ पडति काइ अयाणा।
डज्भउ रज्जु जि दुक्खु गुरुक्कउ
जइ सुहु तो किं ताए मुक्कउ।
सुहणिहि भोयभूमि सपययर
कहिं सुरतरु कहिं गय ते कुलयर।

घत्ता

दुल्लघहु दुक्कियलक्खणहो दूसहदुक्खदुरतहो।
भणु दाढापजरि पडिउ णरु को उव्वरिउ कयंतहो॥

(१३)

भरत की प्रतिक्रिया—

सज्जणकम्मेँ सज्जणु कयइ
त णिसुणिवि भरहाणुउ जपइ।
जइयहु हुउ सिसुत्ति सहकीलिउ
तइयहु पइ वि किं ण परितोलिउ।
मज्झु वि तुज्झु वि कवणु पराहउ
मज्झु वि तुज्झु वि कवणु महाहउ।

प्राप्त होता है। दाढपिंजरि=दाढ़ों पंजर में। उव्वरिउ=उबर सका।

१३ सज्जणकम्मेँ=सज्जन की करणा से। भरहाणुउ=भरतानुज। पराहउ=

जे गय ते सयल वि मग्गिवि मिगु
भावइ भोउ ताहं णावइ विसु ।
तेत्थु ण पाइ वि दोसु तुहारउ
पंइणिज्जु तुहु जगि गरुयारउ ।
जइ गयहिं घरित्ति ण समिच्छहिं
ता जं दिण्णी तहु वि पयच्छहिं ।
तहिं अवसरि वयणेहिं णिरोहिउ
मंतिहिं भमिणाहु संबोहिउ ।
सुउ सनाणि थवेवि महाबलि
गउ केलासु परायउ भुयबलि ।

घत्ता

घणु जेतु सुयंतु णरिंदभिरि महि महंतु अहिमाणिउ ।
सारेयहु राउ निसण्णमणु मंतिहिं मड्डइ आणिउ ॥



पराभव । महाइउ=महाहव । पयच्छइ=दो । णिरोहिउ=निरोधित, रोका ।
संबोहिउ=संबोधित संबोधित किया । परायउ=परायात=पहुँचा । मड्डइ=
बलपूर्वक । मंतिहिं=मन्त्रियों के द्वारा ।

महाकवि पुष्पदन्त

'श्रीकृष्ण का चरित्र, पुष्पदन्त के महापुराण का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण चरित्र है पाडवों और कृष्ण से सम्बन्धित घटनाओं में कुछ भिन्नता होते हुए भी जहा तक कृष्ण बाल यौवन लीलाओं का सम्बन्ध है, हिन्दू परम्परा से बहुत समानता है काव्य और मार्मिकता की दृष्टि से भी यह बेजोड है इसमें कृष्ण चरित्र के कई नए सन्दर्भों का सूचना है उदाहरण के लिए कृष्ण के 'ग्वाल रूप' का वर्णन, राधा का उल्लेख उपालम्भ इत्यादि।

कृष्ण की बाल लीलाए

(१)

दुवई

ण हरिवसवसणवजलहरु ण रिउणयणतिमिरओ।
जोइउ दीवएण हरि मायइ ण जगकमलमिहिरओ॥

रात में चुपचाप बालक कृष्ण को ले जा रहे हैं—

कण्हुमासि सत्तमि सजायउ
मारण कसिरू कसु ण आयउ।
हउ जाणमि सो दइव मोहिउ
महिहरहलक्खणलक्खपसाहिउ।
लइयउ वासुएव वसुएवें
धरिउ वारिवारणु बलएवें।

---

१ हरिवस वस णवजलहरु=हरिवश रूपी वश (बास) के लिए=नए मेघ की तरह। रिउ णयण तिमिरओ=शत्रु की आखों के लिए अधकार। जोइउ=

णिसि संचलिय छुडुतमणियर
ण वियाणिय णिरु धूरें इयरें ।
अग्गइ परिमिय तिमिरविहणिहि
पच्छइ ससहरु फुर तहिं सिगहिं ।
सो वि पराइउ अमरविसेसउ
फालहिं फालिहि मग्गपयासउ ,
देवइ पोढइ आवयखुटइ
लग्गइ माहवचरणगुन्ठइ ।
जमलकवाडइ गाढविइण्णइ
विहडियाइ ण वइरिहि पुण्णइ ।
कुलिसायसथलयरियपाए
पेल्लिउ कुमहुक महुराराए ।
छत्तालविए वा विर णिग्गइ
सो णिसिसमइ दुवारहु लग्गइ ।
सामर मीरि समि य सुहद्दमणु
जो तुह णिविडणियलविद्ध मणु ।
जो वीवंतमनइविहारणु ।
पोमावइ छरसरिमेल्लावणु ।

दसा । दीवएव=दीपक से । जो कमल सिहिगधा=अग्नि को कमल के लिए सूप । कण्हु=कृष्ण । सत्तमि=सातवें । मारग पयास=मार्ग का प्रकाश करने वाला । महिहर पसाहिय=पर्वतो व नगरो से प्रमाणित । वाहि वारणु=सगजन । बलणवें=बलराम ने । छुडतमणियरें=रात्रि के अन्धकार के समूह से । इयरें=इतर=दूसरा । अग्गइ=आगे । पराइउ=पराया=आया । मग्ग पयासउ=मार्गप्रकाशक । आवय खुटइ=आपत्ति को खुटित करने वाला । माहव चरणगुन्ठइ=माधव के चरण का अंगूठा । महुराराए मथुराराज ने (उग्रसेन) । णिसि समइ=निशा के समय । सुह ?मणु=सुभ स्थान । णिविड णियल विद्ध मनु=निविड निगड विद्धमन=सघन बेडियों

सो णिग्गउ तुह सोक्खजणेरउ
उग्गसेण नृव भन्छहि सेरउ।

घत्ता

पउ भणत गय ते हरिमें कहि मि ण माइय।
णयरहु णीसरिवि जउणाणइम्क त्ति पराइय ॥१॥

(२)

यमुना का वर्णन—

दुवई

ता कालिंदि तेहिं अवलोइय मथरवारिगामिणी।
ण सरिरूवु धारविथिय महियलि घणलमनोणि जामिणी ॥

णागयणतणुपहपती विव
अजणगिरिवरिंदरती विव।
महिमयणाहिरइयरेहा इव
बहुतरंग जरह्यदेहा इव।
महिहरदति दाणरेहा इव
कसरायनीनियमेरा इव।
वसुहणिलीणमेहमाला इव
साम समुत्ताहल वाला इव।
ण सेवालजाल दक्खालइ
फेणुप्परियणु ण तहि घोलइ।

को मारने वाला। जीवजस वइ विद्दावणु=जीवयशा पति विद्रावक=जीवयशा के पति (कंस) को मारने वाला। सोक्खजणेरउ=सुख उत्पन्न करने वाला।

२ कालिंदी=यमुना। मथर वारि गामिणी=जिसका जल धीरे धीरे बह रहा था। झत्ति=शीघ्र। जउण नदी=यमुना नदी। सरि रूवु धरि=नदी का रूप

गेम्यरत्तु लोउ रत्तनह
ण परिहइ चुयकुसुमहिँ कंचुउ।
किणरिथणमिहुरइ ण गायउ
वि-भमेहिँ ण समउ भावउ।
फणिमणिकिरणहिँ ण उज्जोयउ
कमलन्विहिँ ण कण्हु पलोयइ।
भिमिरिणिरत्तथालेहिँ सुणिम्मल
च्चाइय ण जलकणनटुल।
खलखलति ण मगलु घोसइ
ण माइनहु पकनु सा पोसइ।
णउ कासु वि मामलणहु अण्णहु
अवसें तूसइ जनण मवण्णहु
निहि भाइहिँ थक्कउ तीरिणिनतु
ण नरणारिनिहत्तउ कज्जनु।

घत्ता

नरिमिउ ताइ तनु वि जाणहु णाइहु रत्ती।
पेक्खिवि महुमहणु मयणें ण मरि वि विगुत्ता ॥२॥

(३)

दुवई

णउ उत्तरिवि नावयोवतरु जनि ममीहियामए।
दिट्ठु णट्टु नहि सो पुच्छिइ णिक्कुडिल ममामए॥

धारण कर। विव व=ममान। जरट्पञ्च इवे=बुढ़ापे से ग्रसित शरीर की तरह। उज्जोयइ=ध्यान करता है। =प्रकाश करता है। पलोयइ=प्रलोकयति=देखता है। भिमिणिपत्त थालहिं=कमल पत्ते की थाली में। विगुत्ती=ठगी गई।

२ उत्तरिवि=उतर कर। जेव=जब तक। णिक्कुडिल=निष्कपट भाव से।

नन्द की पुत्री का श्रीकृष्ण से विनिमय--

महु कतइ देवय ओलग्गिय
धूय ए सु दरु पुत्तु नि मग्गिय ।
देविइ दिण्णी सुय किं किज्जइ
तहि केरी लइ ताहि जि दिज्जउ ।
जइ सा तणुरुहु पडि महु देसइ
तो पणइणिहि आस पूरेसइ ।
ए तो गयधूयचरफुल्लइ
चारुभक्खरूवाइ रसिल्लइ ।
देमि ताम जा देवि णिरिक्खमि
ता हलहेइ भणइ सुणि अक्खमि ।
लइ लइ लच्छिविलासरवण्णउ
एहु पुत्तु तुइ देविइ दिण्णउ ।
भंति म करहि काइ मुहु जोवहि
मेरइ करि तेरी सुय ढोयहि ।
ता हियउल्लइ णंदु वियप्पइ
णरवेसेण भडारी जपइ ।
लेमि पुत्तु किं पउरपलावें

आलग्गिय=सेवा की । मग्गिय=मागी । धूय=लडकी, कन्या । दिण्णी=दी । तहि केरी=उसकी । पडिमहु देसइ=प्रति दास्यति=फिर देगा । पणइणिहि=प्रणयिनी की । चारु=सुन्दर खाद्य रूपा मे । रसिल्लइ=रसीले । हलहेइ=बलराम । अक्खमि=कहता हू । लच्छि=लक्ष्मी के विलासो से रमणीय । देविइ=देवी न दिया । जोवहि=देखते हो । मरइ=मेरी । तेरी सुय=तुम्हारी कन्या । हियउल्लइ=हृदय म । णंदु=नन्द । वियप्पइ=विकल्पयति=विकल्प करता है । पउर पलावें=प्रचुर प्रलाप स क्या । चवग्गिणु=वह कर। कम्ल

परिपालमि सणेहसब्भाव ।
एम भणेप्पिणु अप्पिउ बालो
बलकरकमलि कमलसोमालो ।
कण्ह विण्हु भाणुहें गुहें
मेहु व आलिंगियउ णिरिंदें ।
हुउ सकयत्थउ गउ सो गेहहु
जणय तणय अहिमाणा राउतु ।

घत्ता

छुध छणससियवयणु देवइयहि पुरउ णिवेसिय ।
वेण वि किंकरिए णरणाहहु वत्त समासिय ॥३॥

बाल लीलाएँ —

दुवई

धूलीधूसरेण वरमुक्कसरेण तिणा मुरारिणा ।
कीलारसवसेण गोवालयगोवीहिययहारिणा ॥

रंगतेण रमंतरमंतें
मथउ धरिउ ममंतु अणंतें ।
मंदीरउ तोडिवि आवट्टिउ
अद्धविरोलिउ दहिउ पलोट्टिउ ।
का वि गोवि गोविंदहु लग्गी

सोमालो=कमल की तरह सुन्दर । विण्हु=विष्णु । सकयत्थउ=सकृतार्थ । गेहहु=घर । छणससियवयणु=पूर्णचन्द्र समान मुखवाला । वत्त=वार्ता=बात । समासिय=कहा ।

४ तिणा मुरारिणा=उन मुरारी ने । गोवालयगोवि हिययहारिणा=गोपालक

णं महारी मथणि भग्गी ।
थयहि मोल्लु देउ आलिंगणु
णं तो मा मेल्लहु मे अंगणु ।
काहि वि गोविहि पंडुरु चेलउ
हरितणुतेएं जायउ कालउ ।
मूढ जलेण काइं पक्खालइ
णियडत्तु सहियहिं दक्खालइ ।
थणरसिच्छिरु छायागत्तउ
मायहिं समुहु पारधावंतउ ।
महिससिलंबउ हरिणा धरियउ
णं करिणिवधणाउ णीसरियउ ।
दोहउ दोहणहत्थु समीरइ
मुइ मुइ माहव कीलिउ पूरइ ।
कत्थइ अंगणभमणातुद्धउ
बालवच्छु बालेण णिरुद्धउ ।
गुंजाफलुयरइयपओए
मेल्लाविउ दुक्खेहिं जसोए ॥
कत्थइ लोणियपिंडु णिरिक्खउ
कण्हें कसहु ण जसु भक्खिउ ।

की गोपी का हृदय चुराने वाले । रंगतेण=रँगते हुए । मद्द विरोलिव=मावा विलोया हुआ । दहिउ=दही । पलोट्टिउ=पलोट दिया=उलट दिया । मा मेल्लहु=मत छोड़ो । हरितणुतए=कृष्ण के शरीर के तेज से । पंडुर चेलउ=सफेद कपड़ा । थणरसिच्छिर=थन के दूध की इच्छा रखने वाला । दोहउ=दूहने वाला । बाल वच्छु=छोटे बछड़े को । महिससिलंबउ=भैंस के बच्चे को । गुंजा=गूंजा की । मेल्लाविउ=छुड़ाया । लोणियपिंडु=नवनीत का

घत्ता

पसरियसरयलेहिसइ तिहिं सुइसुहकारिणिहिं ।
महिइ णियडिथिए घरयम्मु ण लग्गइणारिहिं ।।४।।

दुवई

गउ सु जंति गोव कयसंमय णिजियणीलमेहउ ।
केसरकायकंतिपविलित्तउ रहियउ अवरणाहउ ।।

गोपियों से बाल लीलाएं —

घयभायणि अवलोइवि भायइ
णियपडिबिंबु विहुड बोल्लावइ ।
हसइ णट्टु लेप्पिणु अवरुंडइ
तहु उरयलु परमेसरु मंडइ ।
अम्माहीरएण तढिज्जइ
णिइ घइयउ परियंदिज्जइ ।
हल्लरु हल्लरु जो जो भण्णइ
तुज्झु पसाए होसइ उण्णइ ।
हलहरभायर वेरिअगोयर
तुहु महु सुयहि देव णामोयर ।
तहु घोरत्तु णहयतु गज्जइ
सुत्तनिउद्ध ण केण लइज्जइ ।

---

४ ... पिउ । महिइ=कृष्ण के । णियडिथिए=समीप रहने पर ।

५ केसर ... कांति से लिप्त । घयभायणि=घृतभाजन । णिय पडिबिंबु=अपने प्रतिबिम्ब को । बोल्लावइ=बुलाता है । हल्लरु हल्लरु= धीरे धीरे । उण्णइ=उन्नति । वेरि अगोयर=शत्रु के लिए अदृश्य । महुरहि=

पुहइणाहु किर कासु ण वल्लहु
अन्छउ णरु सुरह मि सो दुल्लहु ।
वियलियपयकिलेससंतावें
पमरत तहु पुण्णपहावें ।
णदहु केरउ गोन्लु णदइ
महुरहि णारि मसाणइ कदइ ।
माँह कपइ पडंति णक्खत्तइ
सिविणतरि भग्गइ नृपछत्तइ

घत्ता

णियवि जलति दिस कसें विणएण णियच्छिउ ।
जोइससत्थणिहि दिउ वरुणु णाम आउच्छिउ ॥५॥

दुवई

कहिय देवयाहि जो णदणिहेलणि वसइ वालओ ।
सो पइ नृवण भ ति क न्सिसु णिमारइमच्छरालओ ॥

पूतना वध—

जाणिइ अरिवरि	ता तहि अवसरि ।
कसाएसें	मायावेसें ।
बल मायाविणि	धाइय जोइणि ।
वच्छरवाउलु	गय त गोउलु ।

मथुरा म । मसाणइ=मरघट म । णक्खनइ=नक्षत्र । सिविणतरि=स्वप्न म ।
नवछत्तइ = रपछत्र । णियच्छिउ=पूछा ।

६ मच्छरालओ=मत्स्यराज को । जोइणि=योगिनी । वच्छरवाउलु-बछडो के
दाम्भ से व्याकुल । पवणी=पहुची । पूयण=पूतना । दुद्धरगिल्लउ=दूध से

नयसिरितण्हहु णवमहु कण्टहु ।
पासि पवण्णी कत्ति णिमण्णी ।
पभणइ पूयण हे महुमूयण ।
पियगरुडद्धय आउ धणद्धय ।
दुद्धरसिल्लउ पियहि थणुल्लउ ।
त आयण्णवि चगउ मण्णिवि ।
चुयरयपडरि लग्गु पओहरि ।
हरिणा णिहियउ राहु गहियउ ।
ण ससिमंडलु मोहट नणयलु ।
सुरहियपरिमलु ण णीलुप्पलु ।
सियकलसुप्परि विभिउ मणिहरि ।
कडुए खीरें जाणिय नीरें ।
जणणि ण भेरी विप्पियगारी
जीवयहारिणी रक्खसि वइरिणि ।
अज्जु वि मारमि पलउ समारमि ।
इय चिंतंतें रोसु वहंतें ।
माणमहंतें भिउडि करंतें ।
लच्छीकंतें देवि अणंते ।
दंतहि पीडिय मुट्ठिउ ताडिय ।
विट्ठिट तज्जिय थाम णिज्जिय ।
अणु वि ण मुक्की णहहि विलुक्की ।
खलहि रसंतहि सुण्णु हसंतहि ।

रिसउ । चगउ=चगा भला समझ कर । चुयरयपडरि=रिसत दूध से सफेद । णिहियउ=पकड़ लिया । कडुए खीरें=कड़वे दूध से । विप्पियगारी=बुरा करने वाली । सिटंहि चरंत=नहीं चबाते हुए । लच्छीकंतें=लक्ष्मीकान्त ने, तज्जिय=डांटा । थामें=स्थान से । णहहि विलुक्की=आकाश में छिप गई ।

भीमे वालें | कयकल्लोलें ।
लोहिउ सोसिउ | पलु आकरिसिउ ।
दाणरसारी | भणइ भडारी ।
हियहहिरासव | मुइ मुइ केसव ।
णदाणंदणु | मेल्लि जणद्दणु ।
कसु ण सेरमि | रोसु ण दारमि ।
जहिं तुहु अच्छहिं | कील समिच्छहि ।
तहिं णउ पइसमि | छलु ण गवेसमि ।

घत्ता

इय रयति कलुणु वइ वइ व गोविंदें मुक्की ।
गय देवय वहिं मि पुणु णद णिवासिण ढुक्की ॥६॥

दुवई

वरकाहलियरसखरहिरिए गाइयगेयरससए ।
रोमथवथक्कगोमहिसिउलसोहियपएसए ॥
अण्णहिं पुणु दिणि | तहिं णियपंगणि
जणमणहारी | रमइ मुरारी ।
घोट्टइखीर | लोट्टइणीर ।
भजइ कुभ | पेल्लइ डिंभ ।

पलु=मास । आकरसिउ=खीच लिया । मुइ मुइ=छोडो छोडो । छलु ण गवेसमि=अब कोई छल नहा करूगी । ढुक्की=पहुची ।

● वरकाह-काहल वासुरी से बहरे । गाइय ससए=पकडा गीत रस गाए जा रहे थे डिंभयजण=बच्चे को । चलाच्च=जलता आग को । द वालि=दुष्काल योग समय । राहे=लोगो की शोभा से ।

छड्डइ मड्डिय	चक्खइ इड्डिय।
कड्ढइ चिन्चि	धरइ चलच्चि।
इच्छइ केलि	करइ दुवालि।
तहि अवसरए	कीलाणिरए।

गरुडा का षड्यन्त्र—

कयनरणराहे	पक्कयणाहे।
रिद्धणासिट्ठा	देवीदिट्ठा।
अवरा घोरा	मयडायारा।
पत्ता गोट्ठ	गोवइदट्ठ।
चक्कचलगी	दलियभुयगी।
उप्परिए ती	पलउ करती।
दिट्ठा तेणं	महुमहणेण।
पाए पड्या	णासिवि निगया।
रविकिरणावहि	अवरदिणावहि।
इन्दाइणिए	पियचारिणिए।
दिट्ठिचोरेण	दढढोरेण।
पजलजलालो	वड्ढो वालो।
उद्खलए	णिहियउ णिलए।
सीयसमीर	तीरिणितीर।
सिसुकयछाया	निगयगामाया।
ता सो न्चिचो	अच्चो अन्नो।
इय सह तो	परियड्ढतो।

सयणयारा=नकटआकार वाली। गाठ=गोठ में। गोवइ-दट्ठ=गोपोत के लिए इव। चक्क चलगी=चक्र से अंगों को चलाती हुई। दलियभुयगी=साथ को कुचलती

तमुदूद्दलय पयणियपुलय ।
णयक्यक्णद्दहु जयनसतयद्दहु ।
जाणियमग्गो पच्छइलग्गो ।
अरिनिज्नाए गयणयराए ।
ता परिमुक्क णियडे ढुक्क ।
मारुयचवल तरुवरजुयल ।
अगेघुलियं भुयपडिखलिय ।
नीलतेण विहसतेण ।
वलनतेण सिरिकतेण ।

घत्ता

होइवि तालतरू रगतहु परि तडितरलइ ।
रक्खसि केसवहु सिरि घिवइफढिणतालहलइ ॥७॥

(८)

राक्षसी का तालफल गिराना—

दुवई

सिरिरमणीविलासकीलाघरिनन्छयले घडतइ ।
ण अरिवरसिराइ विहिलुक्कइ दसदिसिवहि पडतइ ॥ '
ताइ इन्दुए सो पडिच्छुए ।
पनलीयरो कीलणायरो ।
गयणसंचुए णाइ फिंदुए ।

हुई । उद्दूखलए=उलूखल स । णिलए=वडी म । तडितरलइ=विजली की तरह फडकते हुए । घिवइ=डालता है । तालतलइ=तालफल । रक्खसि=राक्षसी ।

८ सिरिरमणी वन्छयले=लक्ष्मी रूपी रमणी के लिए, जिनका वक्ष, विलास का

घिवइ महिय चमखइ दहिय ।
कड्ढइ चिन्चि घरइ चलञ्चि ।
इच्छइ केलि करइ दुआलि ।
तहिं अवसरए कीलाणिरए ।

शक्रा का षड्यन्त्र—

कयनएाराहे पक्कयणाहे ।
रिउणामिट्ठा देवीट्ठा ।
अवरा घोरा मयडायारा ।
पत्ता गोट्ठ गोवइट्ठ ।
चक्कचलगी दलियभुयगी ।
उप्परिएतो पलउ करती ।
दिट्ठा तेणं महुमहणेण ।
पाए पट्टया णासिवि णिगया ।
रविकिरणावहि अवरदिणावहिं ।
इन्दइणिए पियचारिणिए ।
दिट्ठिचोरेण दढहोरण ।
पवलवलालो घट्ठो बालो ।
उड्डखलए णिहियउ णिलए ।
सीयसमीर तीरिणितीर ।
सिसुरुयछाया णिगयगामाया ।
ता सो णिवो अन्नो अन्नो ।
इय सह तो परिचड्ढंता ।

सयणयार ।=शकटआकार वाला । गोट्ठ=गोठ में । गोवइ—ट्ठ=गोगोत के लिए इव । चक्क चलगी=चक्र से अगा को चलाती हुई । दलियभुयगी=सापा को कुचलनी

तमुदूहलय पयणियपुलय।
णयरुयरुण्हहु जयजसतण्हहु।
जाणियमग्गो पच्छइलग्गो।
अरिविण्णाए गयणयराए।
ता परिमुक्क णियडे ढुक्क।
मारुयचवल तरुवरजुयल।
अगेघुलियं भुयपडिखलियं।
णीलतेण णिहसतेण।
बलवंतेण सिरिकंतेण।

घत्ता

झोइवि तालतरु रंगतहु परि तडितरलइं।
रक्खसि केसवहु सिरि घिवइ कढिणतालहलइं ॥७॥

(८)

राक्षसी का तालफल गिराना—

दुवई

सिरिरमणीविलासकीलाघरविच्छयले घडतइं।
ण अरिवरसिराइं णिद्दलियक्कइ दसदिसिवहिं पडतइं ॥

ताइ इच्छए सो पडिच्छए।
पजलीयरो कीलणायरो।
गयणसचुए णाइ भिंदुए।

हुई। उद्दूखलए=उलूखल से। णिलए=वेडी में। तडितरलइं=बिजली की तरह चमकते हुए। घिवइ=डालता है। तालतलइ=तालफल। रक्खसि= राक्षसी।

८ सिरिरमणी वच्छयले=लक्ष्मी रूपी रमणी के लिए, जिनका वक्ष, विलास का

ता महारवा	तिम्नभेरग्रा।
पु छलालिरी	कण्णचालिरी।
धाइया म्वरी	निम्मिश्रो हरी।
उल्ललिया	एहि मिलिया।
वेयन्तिया	दीह न्तिया।
उत्तरि ए तिया	धाउन्तिया।
एन्दामिणा	जाइत्तेसिणा।
श्राद्दया उरे	धारिया खुरे।
मेहसगहे	भामिया एहे।

गधी का उत्पात—

सुट्ठुचावरी	कमन्किरी।
दीह ताडिश्रो	महिहि पाडिश्रो।
तालुरुक्खश्रो	पुणुविरस्वश्रो।
जगि णमाइश्रो	तुरउ धाइश्रो।

तालवृक्ष के रूप में दानव का आना—

गहिरहिसिरो	जीवहिसिरो।
वकियाणणो	णाइ टुन्नणो।
हिलिहिलतश्रो	महि दलतश्रो।
कात्तचोइश्रो	ए तु जोइश्रो।
लन्दिधारिणा	चित्तहारिणा।

घर था। दमन्मिवहि=न्धा निाश्रों क पय म। कीनणायरो=कौडा म नागर, चतुर। मिन्ट्ए=गेंद म। पुच्छालिरी=पू छ हिलाने वाली। कण्णचालिरा=कान हिलाती हुई। धाइया खरा=गधा दौड़ी। कमन्किरी=कस की दासी।

घुसिणपिंजरे बाहुपंजरे।
छुहिवि पीलिओ गयणि चालिओ।
मोडिओ गलो पत्तभच्छलो।
रणि हओ हओ णिग्गिओ गओ।

घत्ता

ता जसोय भणिय णइपुलिणइ पाणियहारिहिं।
णंदणु कहिं णियइ जायउ तुम्हारिसणारिहिं ॥८॥

(६)

उदूखल से बाँधा जाना—

दुवई

मरुहयमद्दिरुहेहिं पहिचप्पिउ गइह तुरय चूरिओ।
अवरु उदूहलम्मि पइ नद्धउ जाणहु बालु मारिओ ॥

धाइय तासु जसोय विसठुल।
करयलजुयलपिहियचलथणयल।
बद्धउ उक्खल मेल्लिवि घल्लिउ।
महु जीविएण णियहि सिसु बोल्लिउ।
फणिणरसुरहं मि अइअइसइयउ
हरि मुहि चुंबिवि कडियलिउ।
कि खरेण किं तुरए दट्ठउ

छुहिवि=छूकर। पीलिओ=पीडित। मोडिओ=मोड दिया। णइ-पुलिणइ=नदी के किनारे। पाणिय हारिहिं=पनहारिनों ने। तुम्हारिस णारिहिं=तुम्हारी जसी स्त्रियों से। जायउ=उत्पन्न हुआ।

६ विसठुल=अस्तव्यस्त। अइअइसइयउ=अति अतिशयित=अत्यन्त बढ बढ कर। परियट्ठउ=टटोल हुए। अरिट्ठदउ=अरिष्ट देवता। विपवेसें=वृष के

मायइ सयलु अग्गु परिमट्ठउ ।
अण्णहिं दिणि रुन्धइं कीलतहु
बालहु बालकील दरिसंतहु ।
दुट्ठ अरिट्ठदेउ विसवेसें ।
आइउ महुरायइ आएसें ।

वृषभ रूप में अरिष्ट देव का आगमन—

सिंगजुयल मचालिय गिरिमलु ।
खरखुरग्ग उक्खयधरणीयलु ।
सरवरगोल्लिनालसिल्लियगलु
कसणिवायकपाविधनलथलु ।
गज्जियरवपूरियभुवणतरु ।
हरयरयसहणिवद्दकयभयनरु ।
ससहरकिरणणियरपडुरयरु ।
गुरुरेलामसिहरसोहाहरु ।
सिर मउ णिणिह दइ आगेप्पिणु
ता करहे भूयदंडे लेप्पिणु ।
मोडिउ कहु कड त्ति विसिंन्दहु
को पडिमल्लु तिजगि गोविंदहु ।

घत्ता

ओहामियधवलु हरि गोउलि धवलहिं गिज्जइ ।
धवलाण वि धवलु कुलधवलु केण ण थुणिज्जइ ॥६॥

रूप मे । उक्खय=उखाड लिया है । कसणिवाय धनु=परा की चोट से जल धन को कंपा देने वाला । ओहामियधवलु=बल का पराजित करने वाले । धवलहिं=धवल गीतों से । थुणिज्जइ=प्रस्तुत की जाती है ।

(१०)

मा यशोदा की प्रतिक्रिया—

दुवई

ता कलयलु सुणति गोवालह पणयजलोद्दवाहिणी ।
सुयविलसिउ मुणति णिग्गय णियगेहहु णदगेहिणी ॥

भणइ जणणि णदुआलिहि धायउ
पुत्तु ण रक्खसु कुच्छिहि जायउ ।
किह बलइ मोडिउ ओत्थरियउ
दइवबसें सिसु सइ उव्वरियउ ।
हरिखरवसहहिं सहु सुउ जुज्झइ
जणु जोवइ महु हियवउ डज्झइ ।
पेत्तिउ मइ कुमार सतावहि
आउ जाहु घरु बोल्लिउ भावहि ।
तेयवतु तुहु पुत्त णिरुत्तउ
रक्खहि अप्पाणउ करि वुत्तउ ।
परमहि भडकोडिहि आरूढउ
बाहुबलेण बालु जणि रूढउ ।
महुरापुरि घरि घरि वण्णिज्जइ
णदगोट्ठि पत्थिवहु कहिज्जइ ।
तहु देवइमायरि उक्कठिय
पुत्तसिणेहें खणु णिणसठिय ।
गोमुहहूवउ सहइ चउत्थी

---

१० णियगेहहु=अपने घर से । दुआलिहि=दुष्काल मे । कुच्छिहि=कोख मे । बलइ=वन । णदगोट्ठि=नन्द की गोठ मे । देवइमायरि=मा देवकी ।

लोयहु मिसु मंडिवि वीसत्थी।
चलिय णंदगोउलि सहु णाहें
सहु रोहिणिसुएण चवाहें

घत्ता

मायइ मट्टमट्टणु बहुगोमहं मज्झि णिरिक्खिउ।
पयपरिगोवियउ कलहंसु जेम ओलक्खियइ ॥१०॥

कृष्ण की गोपमंडली का देवकी और बलराम द्वारा स्वागत—

(११)

दुवई

हरि भुयजुवलवलियणाणवलु णवणीयणिराइओ।
उग्गइपउरपुलय पहहन्दें वसुएवेण जोइओ ॥
मायए सिसुकीलारयरंगिउ
हलहरेण दिट्ठिइ आलिंगिउ।
भुयजुयलउ पसरंतु णिरुद्धउ
जायउ हरिसें अगु सिणिद्धउ।
चिंतिउ तेण कंसपेसुण्णउ
आलिंगणु तेण ण दिण्णउ।
गाढसिणेहरसेण ण तइ

उक्कण्ठय=उत्कण्ठा से भर गई। गोमट्टव्वउ=गोमुख कूप नाम का व्रत। वउत्थी=व्रतस्था।

११ सिसुकीलारयरंगिउ=शिशु क्रीडा की धूल से रंगे हुए। सिणिद्धउ=स्निग्ध। कंस पसुण्णउ=कंस की दुष्टता। णाणाविय=न आई। मल्लय=माद्य धीजों

आणाविय रसोइ गुणनतइ ।
गधफुल्लदीवउ सजोइउ
भोयणु मिट्ठउ मायइ ढोइउ ।
अल्लयदलदहिँओल्लियकूरहिँ
मइयपूरणेहिँ घियपूरहि ।
णाणाभक्खविसेसहिँ जुत्तउ
सरसु भाविभूणाहेँ भुत्तउ ।
सिरि णिउद्धवेल्लीदलमालहु
कचणदड दिण्णु गोवालहु ।
सुण्हइ मउदेवगइ वत्थइ
भूसणाइ मणिकिरणपसत्थइ ।
पुणु जणणिइ तिपयाहिण देतिइ
तणयहु उप्परि खीरु सवतिइ ।

घत्ता

पोरिसरयणणिहि गुणगणविभावियग्रामउ ।
कुलहरलच्छियइ ण सइ अहिसित्तउ केसउ ॥११॥

थे नाम । सुण्हइ =सूक्ष्म । मउदेवगइ =रेशमी दिव्य वस्त्र । तिपयाहिण= तीन प्रदक्षिणाए ।

(१२)

गोवर्धन उठाना—

दुवई

ता सुरवेसरहिं दामोयरु वासारत्तरुधणो ।
गोवद्धणु भणेवि हक्कारिउ कयगोजूहरक्खणो ॥

फणिहिं थाहुद्दवरियरिउ
गिरि छत्तु व उच्चाइवि धरियउ ।
जल पवहन्तु जतु ण विरक्खउ
धारावरिसे गोउलु रक्खियउ ।
परन्नयारि मनीरिउ न्तहं
दीणुद्धरणु विहूसणु मतहं ।
पविमल कित्ति भमिय महिमंडलि ।
हरिगुणकह हुई आहंडलि ।
कालि गलन्तइ कतिइ अहियइ
कलिमलपकपडलपवियरहियइ ।
महुरापुरवरि अमरहिं महियउ
अरहंता नउ रयणइ णिहियउ ।
तिण्णि वाउ तलोक्कपसिद्धउ
मदकारदेहमुहणिवद्धउ ।
त रयणत्तउ कहि मि णिरिक्खउ
पुन्विउ कमें वरणें अक्खिउ ।

---

१२ वासा=वर्षा को रोकने वाले । गोवद्धणु=गोवर्धन । हुई=हुई । अक्खिउ=कहा । वण्णें=वर्ण के ज्योतिषी ने । आकरइ=आपूरति । दाव=

णायामिज्जइ विसहरसयणें
जो जलयरु आऊरइ वयणें।
जो सारंगकोडि गुणुपावइ
सो तुज्झु वि जमपुरि पहुचावइ।

घत्ता

उग्गसेणसुयणु विहुरधरासि तारिव्वउ।
तेण णराहिवइ जरसिंधु समरि मारिव्वउ॥१२॥

(१३)

दुवई

भाणु सुभाणु णाम रिसकंधर वरजरसिंध णंदणा।
सपत्ता तुरंत जउणायडि थिय खचिय सिसंदणा॥

मथुरा के लिए कूच—

अरिकरिदंतमुसलहयकलुसिय
जइ वि थो नि अरविंदहिं वियसिय।
काली कंतिइ जइ वि सुहावइ
तो वि तउ जणघुसिणें भावइ।
जइ नि तुरगहिं चवलहिं वच्चइ
तो नि तुरगहं साण पहुच्चइ।
जइ नि तीरि वेल्लीहर दावइ
तो वि ण दूसइ सपय पावइ।
पभिउत्तु दिट्ठउ सिविरु पमुक्कउ

देता है। सारंगकोडि=धनुष्कोटि। तारिव्वउ=तारेगा। मारिव्वउ=मारेगा।

१३ सिविर=शिविर।

गोवनिंदु माणदु पइक्कउ ।
तणकयवलयविहूसियथिरकरु
वणकणियारि कुसुमरयपिंजरु ।
ससुसिरवेणुसद्दमोहियजणु
काणण घरणिधाउ मंडियतणु ।
कूरणिबधणोद्धियरल्लु
चंदलल्लपोमियमहिसीगलु ।

घत्ता

गुंजाहलवद्धियडंडयविहत्थु सचल्लिउ ।
महिवइतणुरुहेण आमणु पइक्कउ गोल्लिउ ॥१३॥

(१४)

दुवई

भो आया किमत्थु किं जोयइ दीसइ पवर दुज्जया ।
पभणइ कंसपुत्तु के तुम्हइ कहिं गतु ससुज्जया ॥

नन्द गोप का ग्राम परिचय—

अम्हइ णंदगोव कुडु वुत्तउ
आया पुच्छइ भणइ णिरुत्तउ ।
भणइ सुभाणु जणणु अम्हारउ
अद्धमहीसरु रिउमधारउ ।

ससुसिर वेणु=सस्वर वेणु के स्वर से मोहित जन ।
काणण तणु=वनभूमि की धातुओं से मण्डित शरीर ।
गुंजाहल विहत्थु=घुंघचियों से जड़े हुए डंडे अपने हाथ में लिए हुए ।
१४ वुत्तउ=कहा । सुभाणु=जरासंध का बेटा । हालिउ=प्रहार । यमुना के तट पर । वच्चइ=व्रजति जाता है । वण कणियार=वन कनेर कुसुमों का रज से रंजित शरीर ।

घढ आएसहु महुराघट्टणु
सखाऊरणु फणिंदलवट्टणु ।
तहिं विरयवि सरासणचप्पणु
कण्णारयणु लयसहु घणथणु ।
पुलयरसेणुग्गयरोमचुय
त णिसुणिवि जोयते णियभुय ।
हुउ सि जामि गोविंदें भासिउ
करमि तिविहु ज पइ णिद्देसिउ ।
तरुणि ण लहमि लहमि विहि जाणइ
हालिउ किं नूपघीयउ माणइ ।
त णिसुणेप्पिणु बालें बालउ
जोयउ कसहु अयसु य कालउ ।

घत्ता

माहवपयजुयलु उद्दिट्ठु सुभाणु रत्तउ ।
दिसकरिकुंभयलु सिंदूरें णावइ छित्तउ ॥१४॥

(१५)

दुवई

णदं णदणिज्जु णियणदणु ससणेहें णिहालिओ ।
पाहुणयाइ जाहु सुयमघुहु इय वज्जरिवि चालिओ ।

अलौलिक सफलताए —

तावग्गइ पारद्ध णिहेलणु
तहिं मि परिट्ठिउ महिवइरक्खणु ।
मिलिय जुवाण अणेय महाबल
पायपहरकपावियमहियल ।

को वि ण सचालइ जे थामें
ते महुमहणें उयमिरिकामें ।
उच्चाइवि सुरदरिकरचडहिं
पत्थरखंभणिहिय भुयदंडहिं ।
अरिवरणरणियरें परियाणिउ
णन्दगोउ लहु जणणिए णीणिउ ।
आए जाहु हो पुत्त पहुच्चउ
गोउलु सुप्पाउ सुइरु ण मुच्चइ ।
एव भणेप्पिणु कण्हपयावें
परिमुक्काइं ताइं भयभावें ।
मलवज्जिउ महिदेसि समाणइ
पुणरवि तेत्थु वि ठाणि चिराणइ ।
आणिवि गोविंदु वि गोविंदु वि
थियइं ताइं दइउ वि अहिणंदिवि ।

घत्ता

सुपसिद्धउ भरहिं सो णन्दगोट्ठ गुणणाहहिं ।
पच्छण्णउ समहिं गणिज्जइ वरणरणाहहिं ॥१५॥

---

१५ थामें=स्थाम । उच्चाइवि=उठाकर । सुइरु=सुचिर ।

(१६)

कृष्ण का प्रशस्ति—

कण्हेण समाणउ को वि पुरु
सनणउ जणणि विद्दवियसत्तु ।
दुद्धरभररणधुरदिण्णखंधु
उद्धरिय जेण णिवडत बंधु ।
भज्जिवि णियलइ गयवरगईइ
सहु माणिणीइ पोमावईइ ।
अहिणंदिय जिणवरपायरेणु
महुरहि सणिहियउ उग्गसेणु ।
कइवयदियहहिंरइ कीलिरीहिं
बोल्लाविउ पहु गोवालिणीहिं ।
पंगुत्तउ पइ माहव सुहिल्लु
कालिंदितीरि मेरउ कंबिल्लु ।
एवहिं महुराकामिणिहिं रत्तु
महु उप्परि दीसहि अथिरचित्तु ।
क वि भणइ दहिउ मथंतियाइ
तहु मइ धरियउ उब्भंतियाइ ।
लवणीयलित्तु करु तुज्झु लग्ग
क वि भणइ पलोयइ मज्झु मग्गु ।

---

१६ कण्हेण समाणउ=कृष्ण के समान । विद्दवियसत्तु=शत्रु को नष्ट करने वाले । दुद्धरभ ररण=कठोर मार वाले युद्ध की धुरी अपने कंधे पर उठाने वाले । महुरहि=मथुरा में । कइवइ=कितने ही दिनो तक । रइकीलिरीहिं=रत क्रीडा करने वाल ।गोवालणिहि बोल्लाविउ पहु=ग्वालिनो ने प्रभु कृष्ण से

तुहुं णिसि णारायण छुयहि णाहि
आलिंगिउ अवरहिं गोवियाहिं।
सो सुयरहि किं ण पइएणरत्तु
संकेयकुडंगुड्डीणरिंदु।

कृष्ण के शौरीपुर जाने पर गोपियों की प्रतिक्रिया—

घत्ता

का वि भणइ णामेण उद्धरिवि गोरसिंगारउ।
किं वीसरियउ अज्जु न मइं मित्तु भडारउ ॥१६॥

(१७)

इय गोवीयणवयणइं सुणंतु
कीलइ परमेसरु दरहसंतु।
समासिउ मेल्लिवि णंदभाउ
हलहरहु मइं तुहुं ताय ताउ।
परिपालिउ थणथण्णेण जाइ
वीसरमि ण मणु वि जसोय माइ।
कइवयदियहइं तुहुं जाहि ताम
पडिवक्खकुलक्खउ करमि जाम।
इय भणिवि तेण चिंतविउ विण्णु
णरणसुद्धारइं णालिट्टु दिण्णु।
आलाविय भाविय णियमणेण
गोवालय पूरिय कंचणेण।

बहा। दरहसंतु=थोडा मुसकाते हुए।

पट्ठविउ णदु महुसूयणेण
श्रोहामियदेवयपूयणेण ।
सहु वसुएवें सहु हलहरेण
सहु परियणेण हरिरिजणेण ।

घत्ता

सउरीणयरि पइट्ठु अहिसुरणरेहिं पोमाइउ ।
भरहधरित्तिसिरीइ हरि पुप्फयतु अवलोइउ ।।१७।।



---

१७ सउरीणपरि=शौरी नगरी । पइट्ठ=प्रवेश किया । पोमाइउ=पद्मावती

[३]

धनपाल

कुरुजांगल के गजपुर का नगर सेठ धनवइ। उसका पुत्र भविस अकारण परित्यक्ता माँ कमला के साथ मामा के घर रहता है। सयाना होने पर वह सौतेले भाई बंधुदत्त के साथ द्वीपान्तर में वाणिज्य के लिए जाता है। भाई उसे अकेला छोड़ कर साथियों के साथ चल देता है। कुमार भटक कर तिलकद्वीप जा पहुँचता है। वहाँ उसे प्रचुर सम्पत्ति के साथ भविष्यानुरूपा मिलती है। लौटते में उन्हें फिर बंधुदत्त का काफिला मिलता है। वह उनका सत्कार करता है। बंधुदत्त फिर धोखा देकर भविष्यानुरूपा का अपहरण कर गजपुर जाकर उससे विवाह करना चाहता है। दुःख का मारा भविस मणिभद्र यक्ष की सहायता से गजपुर पहुँचने में सफल हो जाता है, वह दरबार में जाकर अपनी फरियाद करता है। प्रस्तुत संधि में यही वर्णन है।

दरबार में कुमार भविस का प्रतिवेदन

रायंगणि[1] गंपि पयडिवि दुट्ठहो दुच्चरिउ।
तं निसुणहु जेम भविसयत्ति जसु वित्थरिउ।

भविस का राजभवन के लिए कूच—

दाइय दप्पुच्चु आयन्निवि
माणकसायसल्लु मणि मन्निवि।
हरियत्तहो संकेउ समासिवि
कमलदलच्छि लच्छि मंगामिवि।
नियवनरेसरियण संपेसिवि
पुव्वायरसंकेउ गवेसिवि।
घट्ट नवल्ल पाहुडइ समारिवि

---

१ रायंगणि=राजा के प्रांगण में। गंपि=जाकर। दाइय=दुष्ट सौत पुत्र।

चउप्पहु निग्गम जयक्कारिवि ।
निग्गउ वणिवरिन्दु पहुबारहो
मउथडनिवह विसमसंचारहो ।
जहिं गय गुलगुलवि पिहु
उगम हिलिहिलवि तुक्खार तुरंगम ।
जहिं मंडलियसक्कसामन्तहं
निवडइ कणयन्डु पइसंतहं ।
गलइ माणु अहिमाणु न पुज्जइ
नियसच्छदलील नउ लुग्गइ ।
जहिं अभोट्टजट्टजालंधर
मारुअटक्ककीररखसम्भर ।
मरुनेयगकु गौराडवि
। ज्नरगोडलाडकन्नाडवि ।
इयणमाइ अउव्व वसु धर
अनसरु पडिगालवि महानर ।

घत्ता

सामंतसएहिं असेसजणइ रत्तिम्मि ।
व रायदुवारु पिक्खिवि भासु न खुहइमणु ॥१॥

पाहुडई=आमन्त्उपहार । पहुवारहो=राजा के द्वार से । पिहु=पृथु=विशाल
नियसच्छंदलील=निज स्वच्छंद लीला । अभोट्ट-जट्ट-जालंधर माल्व
टक्क आदि प्रदेशों के नाम ।

(२)

दरबार में उपहार देकर स्थान ग्रहण करना—

तं भडथडबमालु आसंघिवि
वन्निवि सीहुवार गउ लंघिवि ।
दिट्ठु नरिंदत्थाणु दुसंचरु
सावलेवनरनिवहु निरंतरु ।
नरवइ सव्वावसरपरिट्ठिउ
दिट्ठु कणयसिंहासणि संठिउ ।
परिमिउ निविडविविहपरिवारिं
जहिं ओसासु वि नउ सिंगारिं ।
तं अत्थाणु अलीढइ लंघिउ
पुणु पहुपायमूल आसंघिउ ।
करिवि पणाउ पणयसिरकमलिं
पाहुडु पुरउ समप्पिउ अमलिं ।
किउ सम्माणदाणु सभासणु
सइं राएं दवाविउ आसणु ।
चामरगाहिणीउ अवलोइउ
पहुपरिवारु सयलु आमोइउ ।

घत्ता

तो भणइ नरिंदु करहिं नयणु सलेयगउ ।
सो आणमि इत्थु जेण समउ सनयु वउ ॥२॥

---

२ जासु मणु न खुट्टइ=जिसका मन क्षुब्ध नहीं होता । नरिंदत्थाणु=राजा का स्थान । पाहुडु=प्राभृत=उपहार । अमलिं=स्वच्छ । सइं=स्वयं । दवाविउ=दिलाया । आमोइउ=आमोदित=प्रसन्न ।

(३)

धनवइ को बुलाए जाने की राजा से प्रार्थना और विवाह के कारण धनवइ की आने की असमर्थता—

तो करकमलकयंजलि हत्यें
पहु विन्नविउ विणयसुकयत्थें ।
पुर पउरालंकारनियत्तें
धणवइ बुक्कानहो सिउ पुत्तें ।
त निसुणेविणु वयणु कुमारहो
लहु आएसु दिन्नु पडिहारहो ।
पहुआएसि सोवि पधाइउ
धणवइ पुत्तसहिउ निज्झाइउ ।
आवहु पउरु लएविणु मारउ
राउलि अत्थि तुम्ह हक्कारउ ।
वाइउ कोवि आउ सुनिबद्धउ
वहु तुम्हहं समाणु सबधउ ।
पभणइ रायसिट्ठि अविसन्नउ
अम्हह निरु विवाहु आसन्नउ ।
राउलि पवरकम्म सखेज्जउ
वित्तइ पाणिग्गहणि करिव्वउ ।
तिं वयणि विणियत्तु अखेइउ
वयण गपि नरवइहिं निवेइउ ।
सिट्ठि विवाहारंभि समाउलु
न सरइ खणु वि सरसहो राउलु ।

---

३ निज्झाइउ=देखा । राउलि=राजकुल । हक्कारउ=बुलाया । वाइउ=वादी । सम्बधउ=सम्बन्धी । पवरकम्म=प्रवर कर्म । समाउल=समाकुल ।

घत्ता

तो वयणु फुरंतु भणियसयणु भिन्नवइ पहु ।
पइसारहो इत्थु तुमभि विवाहारंभु नहु ॥३॥

धनदत्त को दरबार में उपस्थित होने के कठोर आदेश

(४)

त णिसुणेवि चमक्किउ राणउ
पहु आएसु मरणसमाणउ ।
पेसिउ कुरडु समच्छरु दूयउ
सोवि ताहं आमनीहूयउ
धणवइ सयलु पउजु आमिल्लहो ।
मह पउरि राउलि संचलहो ।
त निसुणेवि मिट्ठि आहल्लिउ
कामदवयणवियप्पि सल्लिउ ।
सम्माणिरि दूयउ वइसारिउ
अप्पुणु बंधवत्तु ओसारिउ ।
दीसइ कारणु किंपि असारउ
आइक्खम्हु राउलि दरबारउ ।
जइ परपसि किंपि मित्र पुच्छिउ
तो कहि करइं कज्जु को णच्छिउ ।
पइसिवि राउलि समउ सहायहो
पहु परिओसहु लग्गिवि पायहो ।

---

४ चमक्किउ=चौंक गया । कुरडु=कठोर । समच्छरु=समत्सर । आमनी हूयउ= आमनी भूत । वइसारिउ=बैठाया । ओसारिउ=हटा दिया । पुच्छिउ= पुच्छित । फुडु=स्फुट ।

घत्ता

फुडु कारणु किंपि महु नियमयि उप्पन्नु भउ।
एहइ दूएण नउ इक्कारिउ वहिमि हउ ॥४॥

(५)

धनवइ की अपने पुत्र बधुदत्त से पूछताछ—

त निसुणिवि परिचिंतइ दाइउ
पयहं सयहं मज्झि को याइउ।
जपइ मम्मच्छेय सहु राए
करण गहणु महु तेण वराए।
दुक्कमि तेण समउ इक्कतरु -
इउ चितत दिन्नु पडिउत्तरु।
आगउ वयणु तुम्ह परिपुच्छिउ
मइ परएसि काइं किउ कुच्छिउ।
घरि अप्पणइं ताम कलि किज्जइ
पच्छइ पुणि राउलि पइसिज्जइ।
पयहिं सयहिं समउ जपत्तउ
तेण समाणु गणति निदत्तउ।
कोवि राउलि पइट्ठ पहु रनिवि
पच्छइ त सम्माणु निहजिनि।
जइ त वाहं निहजिनि दिज्जइ
तो नि राउलि वि नाहिं पइसिज्जइ।

---

५ मम्मच्छेय=मम का रहस्य। वराए =बेचारे।

धरणु गहणु किर एहिं नरायहिं
काउरिसहं अइदुट्ठ पडिवायहिं।
भंजिवि पंचसयहिं जो पम्मुहु
पट्टमिवि राउलि करइ परम्मुहु।
घल्लिवि पंच वि सय ण्हाणहु
जो जणइ वहो सिरु मंडाणहु।

घत्ता

तो भणइ पुरमु नट्ठइ ताम पए करहु।
रायंगणि गपि विसुणहो पिसुणत्तणु हरहु ॥५॥

(६)

धनवइ की पुत्र के साथ राज दरबार में उपस्थिति—

तो नंदणपनचमोहियमइ
सयलु पजरु मेलावइ धणवइ।
गउ राउलहो गरुयसम्मोहिं
असुणिय कज्जाकज्ज विमोहिं।
सहु पुत्ति पट्टपुरउ परिट्ठिउ।
माईकारु विसाउ अणिट्ठिउ।
थिउ नरवइ आवेसु धरंतिणु
भविसयत्तु पच्छन्नु करंतिणु।
वणिवरु पणयमणग्गिरु जंपइ
आमच्छ राउलइ समप्पइ।

---

७ पावेसु=प्रवेश। प्रच्छन्नु करविणु=पीछे करके छिपाकर। विग्घु=विघ्न।
पच्चक्खु=प्रत्यक्ष।

जइ अवराहु तोवि नउ जुज्जइ
जइ सुहि तो एह्उ कि किज्जइ।
कज्जारंभि मणोरह्रतए
किज्जइ विग्घु पिसुणि पवहृतए।
विहसिवि बधुयत्तु पडिवक्कइ

बधुदत्त की चुनौती—

अम्ह रिद्धि जो सहिवि न सक्कइ।
सो पच्चक्खु पुरउ बइसारहि
सुदिढवयणसकडि पइसारहि।
किउ पेसुन्नु जेण भयभीसि
अतउ तुलमि अज्जु तहो सीसि।

घत्ता

हुकार मुणवि भविसु परिट्ठिउ तहो समुहु।
इहु सो पडिवक्खु करहि वयणु जइअत्थिमुहु ॥६॥

(७)

कुमार भविस की प्रति चुनौती—

तो हुंकारु करेवि सुनिब्भरु
जोवइ समुहु जाम बहुमच्छरु।
ताम्व कुमारहो वयणु नियच्छिउ
झत्ति विलीणु लहिवि नपुच्छिउ।

---

७ सुनिब्भरु=सुनिभर।

लज्जइ समु हु गिणंति न सक्किय
नियदुच्चरियइं माणकलंकिय
नउ पडिवयणु करइ नउ पणवइ
मउलियनयणकमलु थिउ धणवइ ।
ताए पच वि सय हक्कारिय
कोक्किवि नियडि पुरउ वइसारिय ।
तेहिं वि भविसयत्तु अवलोइवि
लज्जइ मसु हु न सक्किउ जोइवि ।
पच्चारिय सयलवि भूवालिं
अहो कि तुहिं गिलिय कलिकालिं ।
मुहि मरलइ अब्भतरि घोरइ
दीसइ तुम्ह चारउ जं चोरइ ।
पहुनयणि अणिओयणिउत्तहं
पासेइउ सरीरु वणिउत्तहं ।

घत्ता

हुइ छायाभगि थोरपलनुंभियमुहएण ।
पियजयणु चवेवि म भीसिवि धणवइसुहएण ॥७॥

(६)

पाच सौ वणिक पुत्रों का बयान—

देव देव णवहं अविहावहं
न करिज्जइ अवराहु वरायहं ।

---

८ कोक्किव=बुलाकर । कलिकालें=कलिकाल से । अणिओयणिउत्तहं=अनियोग मे नियुक्त बुरे काम मे फसे हुए । पासेइउ=प्रस्वदित=पसीना पसीना हो गया । छायाभगि=छायाभग=कान्ति भग । हुइ हुइ=हो गयी । वुच्चइ= उच्यते=कहा जाता है । पुन्नहिं=पुण्य से, भाग्य से । हुअ=हुए ।

जामहिं पहु अवहिए परिसक्कइ
तामहिं भिच्चु धरेवि न सक्कइ।
तो पुच्छिय पियवायए राए
तेहिंमि कहिउ सयलु अणुराए।
पुरउ परिट्ठिउ विन्नि महंतर
तेहिं निवेइय वाय निरंतर।
अहो रायाहिराय परमेसर
सम्हइ कुलि जाणिज्जइ नरवर।
सुअउ न सुणइ न दिट्ठउ देक्खइ
किम परवहू वयणु तउ अक्खइ।
ज किय एण कम्मु अवियारिउ
त जणवइ लज्जणउ निरारिउ।
पियरितुल्लु जो वधउ वुच्चइ।
सो किम्व वणि वचेविणु मुच्चइ।
ताहिंमि एहु पुनहिं न समत्तउ
हुउ सक्लत्तु महासियवत्तउ॥

घत्ता

अम्हइमि भनंत निद्धण निव्ववसाय हुअ।
गय त जि परसु दुम्मण दुम्मारुएण धुअ॥८॥

(६)

पांच सौ वणिक् पुत्रों का बयान—

तं पियवयणु चववहो आयहो
खामिउ एण वहुविणयसहायहो।

णियमज्जणसमिद्धि दरिसाविय
पच्चवि सय भोयणु भुंजाविय।
सम्माणिवि परिहाविय वत्थइ
नियधणहो भरियइ बोहित्थइं¹।
पुणरवि सअणु¹ तहिं नि पल्लोविणु
आयउ अनुलु महाधणु लेविणु।
अह पहु परउ एउ किम्प मीसइ
छेयवरि पेसुन्नउ¹ होसइ।
चिन्तवि तुह मणनयणाणंदण
कमलाएविसम्बहिं नन्दण।
होसइ त जि तम धरि तुम्हइ
धज्जन्छु निवडेसइ¹ अम्हइं।
त निसुणिवि विहसिउ नरनारिं
पियसुन्दरि वरविलयहिं अवलोइउ
सत्तों पहुपरिवारिं चोइउ।

घत्ता

आलिंगिउ लेवि राए नेहनिरंतरिए।
अद्धासणु दिन्नु पुत्तसणेह गुणंतरिए ॥९॥

(१०)

राना की भविस से बचपन की पहचान—

पुणु पुणु पहु दरिसइ नियलोयहो
अहो नरूल्लु पडिवाउ जोअहु।

¹ बोहित्थइ = जहाज। सअणु = स्वजन। पेसुन्नउ = पिशुनता, दुष्टता। निवडेसइ = पड़ेगा।

एहु सु घणनइ पुत्तु महवउ
कमलहित्तणउ सुट्ठु गुणवतउ ।
मइ कालंतरेण भउ नायउ
अहो लोयणहो दिन्नु अणुरायउ ।
चालउ इत्थु एहु कीलंतउ
चरियइ सुट्ठु सुरानउ होंतउ ।
पोढविलासिणीहि रुज्झंतउ ।
एक्किक्कइ समाणु जुज्झंतउ
वहुसिहारतार तोडंतउ
सुनियत्थइ वत्थइ मोडंतउ ।
सिंहासणसिहरोवरि थंतउ
चुम्बिजंतु कवोलइ मंतउ ।
वड्ढिउ मामइ सालि असंगमु
वहुकालहो सजाउ समागमु ।
एम्वहिं करमि तेम सविसेसणु
जेम कयावि न होइ थन्नसणु ।
तो पियसुंदरीहिं अवलोइवि
थियनियदुहियहिं वयणु पलोइवि ।

घत्ता

तहिं काले सुमित्त राए तासु परिट्ठविय ।
सम्माणिवि लोय नियनियनिलयइ रट्ठविय ।।१०।।

---

१० पोढ विलासिणीइ=प्रौढ़ विलासिनियां को । वहुसिय हारतार=वहु श्र
हार तार ।

(११)

धणवइ बंधुयत्त रुक्खाविय
जणि गयउरराहु लक्खाविय ।
मंदिरि कच्चयमुद्द सचारिय
विहडप्फड सरूव ओसारिय ।
भविसहो मयणगिंदि दिट्ठि दरिसिवि
परमुच्छवि घणु हियइ पहरिसिवि ।
राए पउरूप मुद्द बोल्लाविउ
तुम्हहं एउ कज्जु संभाविउ ।
एहु सिट्ठि पुरपउरि महंतरि
आयउ चोरु छुहिवि घरंतरि ।
दिट्ठु तुम्हि धिट्टत्तणु आयहो
तवि करेवि घडिउ परिछेयहो ।
मडिवि अज्जु अतुलु भयभीमहो
दरिसिय सिद्धिमि मंधि नियसीसहो ।
एयहिं थिय अयहेरि करेविणु
जं रुच्चइ त भणइ मिलेविणु ।

घत्ता

तो भणिउ समूहु मिरु विहुणइ घुम्मइ चवइ ।
अहो देसहो तुम्हि कम्मइत्तणिय विचित्तगइ ॥११॥

---

११ कम्मइत्तणिय=कर्मों की । विचित्तगइ=विचित्र गति ।

भविस का सम्मान—

सो कारणु परिचिंतिवि भाविउ
मइयरतेहिं समु हु ओसारिउ।
करइ वयणु समवायसमुच्चइ
एहइ कालि काइं पहु वुच्चइ।
जपइ कोवि पुराइयकम्महु
अइयारि पहु जाउ परम्मुहु।
भविसयत्तु अहिए सम्मणिउ
सहुँवि छायाभंगहो आणिउ।
कोवि भणइ अवियाणियखत्तें
अहु अजुत्तु कीयउ वधुयत्तें।
परिण विढत्तु हरेवि असारउ
किम वुच्चइ धणु एहु महारउ।
अन्नें वुत्तु पउर माहप्पें
अइकम्महो किर काइं वियप्पें।
एवहिं वयणु किंपि तं वुच्चइ
जेण सिट्ठि सहुं पुत्तिं मुच्चइ।

घत्ता

परिचिंतिवि कज्जु एक्कायारु करेवि लहु।
पडिगाहिवि सिट्ठि पुणु पउरिं निवत्तु पहु ॥१२॥

---

१२. ओसारिउ=हटाया। अइयारि=अतिचार, अतिवादी, आचरण। परिण विढत्तु=दूसरे का कमाया।

(११)

घणणइ धंधुअत्त रज्जाविय
जणि गरुयाणराइ लक्खाविय ।
मंदिरि कलयमुद्ध सचारिय
विहडप्फड मज्झ ओसारिय ।
भणिमहो मयणणिंदि दिहि दरिसिवि
परमुच्छवि पणु हियइ परिसिवि ।
राए पउत्थ मुद्ध बोल्लाविउ
तुम्हहं एउ कज्जु संभाविउ ।
पहु सिटि ठ पुरपउरि महंतरि
आयउ घोरु छुहिवि कप्पतरि ।
दिट्ठु तुम्हि धिट ठत्तणु आयहो
तवि करेवि चडिउ परिछेयहो ।
मह्वियि अगु अतुल भयभीमहो
दरिसिय विहिमि मंधि नियसीसहो ।
एमहिं थिय अयहेरि करेविणु
जं विज्जइ त भणइ मिलेविणु ।

घत्ता

तो भणिउ समुद्द मिरु विहुणइ घुम्मइ चयइ ।
अहो देवहो तुम्हि कम्महतणिय विचित्तगइ ॥११॥

११ कम्महतणिय=कर्मों की । विचित्तगइ = विचित्र गति ।

भविस का सम्मान—

तो कारणु परिचिंतिवि भारिउ
मइवतेहिं समु हु ओसारिउ।
करइ वयणु समवायसमुच्चइ
एहइ कालि काइ पहु वुच्चइ।
जपइ कोवि पुराइयकम्महु
अइयारिं पहु जाउ परम्मुहु।
भविसयत्तु अहिए सम्मणिउ
सट्ठिवि छायाभगहो आणिउ।
कोवि भणइ अवियाणियखत्तें
अहु अजुत्तु कीयउ बधुयत्तें।
परिण विढत्तु हरेवि असारउ
जिम वुच्चइ धणु एहु महारउ।
अन्नें वुत्तु पउर माहप्पें
अइकम्महो किर काइ वियप्पें।
एयहिं वयणु किंपि तं वुच्चइ
जेण सिट्ठि सहु पुत्ति मुच्चइ।

घत्ता

परिचिंतिवि कज्जु एक्कायारु करेवि लहु।
पडिगाहिवि सिट्ठि पुणु पउरिं विनत्तु पहु ॥१२॥

---

१२ ओसारिउ=हटाया। अइयारिं=अतिचार, अतिवादी, आचरण। परिण विढत्तु=दूसरे का कमाया।

(१३)

थाहवि पउरयणु हु पडिजंपइ
देव देव पउरि विन्नपइ ।
धणवइ धुरनगलि निवद्धाणउ
तउ घरि सुट्ठु मणुन्नयमाणउ ।
सो अन्नायगारि जं वुच्चइ
त पउरहो न मणाउ विरुच्चइ ।
जइ अन्नाउ तासु मणि भावइ
ता कि पुर पउरहो वि पहावइ ।
एक्कु सरीरु निभायहिं हुत्तउ
तिहिंमि वाहं सामन्नु निढत्तउ ।
पधुयत्तु चोरत्तणु पावइ
जइ अन्नहो धणु लेविणु आवइ ।
भाइहु पुणु अनिहत्थु हरवइ
दाइयमच्छरु हियइ धरवइ ।
निग्गहु तुम्हि ताहं न परिच्चउ
परनीयावहारि जीवेन्नउ ।

घत्ता

परियाणिवि लेउ भविसयत्त अप्पणउ धणु ।
आमिल्लहि सिट्ठि करउ पुत्तु पाणिग्गहु ॥१३॥

---

१३ निग्गहु=निग्रह ।

पौर प्रवरों का निर्णय—

ज जिनत्तु पउरसघाए
त जि तेम पडियज्जिउ राए ।
वइसहु भविसयत्तु वोल्लावहु
अनरुप्परु संतोसु करावहु ।
तो सगिलिउ पउरु अप्पाहिवि
धणवइ पुत्तसहिउ पडिगाहिवि ।
अहो अहो भविसयत्त बहुमाणउ
तुहु अम्हहु भवालसमाणउ ।
वधुयत्तु ज लेविणु आयउ
त धणु घरि सनरिंभ विहायउ ।
ज वणगहणि खित्तु अणिओयहो
त अवराहु खमहिं पुरलोयहो ।
भणइ कुमारु कयजलि हत्थउ
नहु नियजम्मु अज्जु सकयत्थउ ।
ज पुरलोए वयणु कराविउ
करहु किंपि ज मयरहो भाविउ ।
जे गय तहु सहाय ते पुच्छिवि
पाणिग्गहणु करहु पडियच्छिवि ।

घत्ता

पुरु पुच्छइ तेवि करहु कज्जु ज जेम थिउ ।
तो तेहिं मिलेवि तज्जिवि दिट्ठु सकेउ किउ ॥१४॥

(१५)

गुज्भाचरण सीलसुनिउत्तहिं
दिट्ठु समत्राउ ज्ररिवि वणिउत्तिहिं। .
सुअणत्तण गुणेण जं रक्खिउ
तपि अभउ मग्गेविणु अक्खिउ।
अहो पुरपउरि केम साहारिउ
अज्जवि एहु रज्जु विरु भारिउ।
कहिं विवाहु कहिं सुहु वधुत्तहो।
कहिं निव्वुइ समत्राए गोत्तहो
एह वर जुवइ थाइ जा सारी
सा गेहिणि भविसयत्तहो केरी।
अहो परमेसरि माय महासइ
नामग्गहणि ताहि दुहु नासइ।
काइ न वुत्त पण दुवियप्पें
तोवि न चलिय सीलमाहप्पें।
वुच्चइ तेहो तारि पइव्वय
हुअ पच्चक्ख महानयदेवय।
वयनडु भग्गु भरिवि दुव्वायहो
हरलोहमिउ चित्त सघायहो।
मल्लोभ्भल्लिउ सलिलु रयणायरि
सयलु वि जणु बुड्डउ सायरि।
ताहि मनासि पण साहारिउ
जामहिं वधुयत्त ओसारिउ।

घत्ता

पणवइ लोइ जइ उवसमु न करविसइ।
तो वुड्डइ आसि हुअ सव्वइ सयकालगइ ॥१५॥

---

१५ गुज्भाचरण=गुह्याचरण। सइ=सती।

पाच सौ वणिक् पुत्रों द्वारा-शीला अपहरण का गंभीर आरोप—
बाप बेटे को हथकड़िया जेल—

एहा रत्थनाय जणविंदहो
वेलाउलि उत्तरिवि समुद्दहो।
आए अम्हि घरिनि निरुवज्जिय
थिय कुलकित्ति कलंकहो लज्जिय
कहिमि गो वि काइं मि न पयासइ।
थिय मोयणु परिहरिवि महासइ
अच्छइ दुक्खु दुक्खु तं हाविय।
ओसहमित्तु गासु गिण्हाविय
आगेनिणु सुहिसहयणहिं दक्खिय
पं सुकुमारि भणिवि जणि अक्खिय।
पइसारिय घरि गरुय विहोएं
थिय सघट्टु करिवि पईसोए।
गंभीरत्तणेण नउ अक्खइ
अइदरि कुलहो कलंकउ रक्खइ।
परदूडतरेण जा अच्छइ
सा जि एहु परिणेवइ पच्छइ।
सयणिहिं वह विवाहु पारंभिउ
एत्थंतरि एरिसउ वियंभिउ।
तिलमित्तु वि जइ अलियउ आयहो
तो अच्छइ मिच्छत्त परायहो।
निसुणेविणु वणिउत्तहो वयणइं
थियइं पन्न झंपिवि सुहिसयणइं।

---

१४ ओसहमित्तु=औषधमात्रा। पइ-सोए=पति शोक से। मि[illegible]=मिथ्यात्व।

(१५)

गुज्झायरण सीलसुनिउत्तहिं
निहु समगाउ तरिवि वणिउत्तहिं।
सुअणत्तण गुणेण ज रक्खिउ
तपि अभउ मग्गेविणु अक्खिउ।
अहो पुरपउरि केम साहारिउ
अज्जवि एहु कज्जु निरु भारिउ।
कहिं निवाहु कहिं सुहु नधुत्तहो।
कहिं निव्वुइ समगाए गोत्तहो
एह पर जुवइ थाइ जा नारी
सा गेहिणि भविसयत्तहो केरी।
अहो परमेसरि माय महासइ
नामग्गहणि ताहिं दुहु नासइ।
काइ न वुत्तु एण दुव्वियप्पें
तोवि न चलिय सीलमाहप्पें।
वुच्चइ तेही तारि पइव्वय
हुअ पच्चक्ख महानयदेवय।
थयरडु मग्गु भरिवि दुव्वायहो
इलोहमिउ चित्तु सघायहो।
कल्लोल्लुच्छलिउ सलिलु रयणायरि
सयलु वि जणु बुड्डतउ सायरि।
ताहि मनासि एण साहारिउ
जामहिं वधुयत्तु ओसारिउ।

घत्ता

पणवतइ लोइ जइ उवसमु न करविसइ।
तो बुड्डइ आसि हुअ सव्वइ मयकलगइ ॥१५॥

---

१५ गुज्झायरणु=गुप्ताचरणु। सइ=अवा।

पाच सौ वणिक् पुत्रों द्वारा-शीला अपहरण का गंभीर आरोप—
बाप बेटे को हथकड़िया जेल—

एहाएत्थजाय जणविंदहो
वेलाउलि उत्तरिवि समुद्दहो।
आए अम्हि घरिवि निरुवज्जिय
थिय कुलकित्ति कलंकहो लज्जिय
कहिंमि को वि काइ मि न पयासइ।
थिय भोयणु परिहरिवि महासइ
अच्छइ दुक्खु दुक्खु तं हाविय।
ओसहमित्तु गासु गिन्हाविय
आणेविणु सुहिसहयणहिं दक्खिय
पत्नुकुमारि भणिवि जणि अक्खिय।
पइसारिय घरि गरुय विद्दोए
थिय सघट्ट करिवि पइसोए।
गंभीरत्तणेणं नउ अक्खइ
अइहरि कुलहो कलंकउ रक्खइ।
पयट्टतरेण जा अच्छइ
सा जि एहु परिणेवइ पच्छइ।
सयणिहिं तह निबाहु पारंभिउ
एत्थंतरि परिसउ नियमिउ।
तिलमित्तुवि जइ अलियउआयहो
तो अम्हइ मिच्छित्त परायहो।
निसुणेविणु वणिउत्तहो वयणइ
थियइ पन्न संपिवि सुहिमयणइ।

१४ ओसहमित्त=औषधमात्रा। पत्र-कोष-में नहीं है। ...

पड्डिउ गयआवेसु नरिंदहो
जोइउ समुद्दु कुरुवभरविंदहो।
ओसारवि घेवि भिट्ठु पंचहो
अणुहरतु फलु दुन्नयसंधहो।

घत्ता

गयउरु सविलक्खु अंसुजलोल्लियलोयणइं।
सुहिसयणमणहि घरि घरि कियइं अभोयणइं ॥१६॥

(१७)

प्रजा में प्रतिक्रिया—

घरि घरि हट्टि हट्टि जणु जूरिउ
भग्ग मडप्फरु हियइ विसूरिउ।
हा विहि जाउ सुदट्ठु निच्छायउ
जं जम्महोवि न केणवि नायउ।
हो राउलि पुरपउर महायउ
तासु मलित्तु पेम घरि आयउ।
जणइ कोवि न पयहो अग्गें
पउ सच्चु दुप्पुत्तहो सग्गें।
कोवि चवइ परियड्ढिय रोसउ
पउ पत्तु सरूवहि केरउ।
भविसयत्तु बुल्लाविउराए
सहु माणि वड्ढिय अणुराए।
धरहि किंपि ज जुज्जइ आयहु
दुन्नयदोस विडंबियरायहं।
तं निसुणेविणु वुत्तु कुमारिं

इउ लज्जानमिज्जु अइयारिं ।
अह अम्हहमि एउ किं जुज्जइ
ज इउ एग्डडतरु किज्जइ ।

घत्ता

असमजसु कज्जु एहउ किंपि समावडइ ।
ज थोइलयपि दुत्तरि दुप्पवसिपडइ ॥१७॥

(१८)

निर्णय मे परिवर्तन—

मणमलित्त किं कासुवि भावइ
अह पुव्वकिउ कम्मु करावइ ।
जामहिं कज्जु दुसकडि आवइ
तामहिं सुअणत्तणु न पहावइ ।
दुक्करु कज्जाकज्ज नियारहु
राउलि दप्पमाडु दुव्वारहु ।
जं पहुपुरउ नियारि न भजइ
त इहरत्ति परत्तिनि छिज्जइ ।
एवहिं महु सम्माणि जुज्जइ
निक्कउ पुरपरिवाडिए किज्जइ ।
जइवि तुम्ह पहुसत्तिए छज्जइ
तोवि सु दरु जं पुरु पडिवज्जइ ।
तउ सम्माणु जइवि मइ पानिउ
पुरुष्वराहि जइवि संभाविउ ।
तोवि मज्भु मणु एउ न माणइ
नउ सोहइ निणु पउरपो आणइं ।
न लइमि सुद्धि देइजणिगारिय

निसुहिं पउरि जणणि धवारिय ।
हसइ नरिंदु पलंबियसाउइं
सुहियउ होइ पगाचु किराडइं
न चयहिं किंपि अणज्जु अविचारि
न चलहिं पउवि इक्कु विण निचिहिं ।

घत्ता

सुणिवद्धनिओइ इहपरलोय विसुद्धनइ ।
धणवालवि होंचि न करहिं खणुविपमायमइ ॥१८॥



(४)

मुनि कनकामर

'करकंड चरिउ' का नायक करकंडु, चंपानरेश धाड़ीवाहन और पद्मावती रानी का पुत्र है। पत्नी का दोहद पूरा करने के लिए राजा रानी को वर्षा में हाथी पर घुमाता है। हाथी रानी को ले उड़ता है और एक तालाब में छोड़ता है वहीं, मरघट में कुमार का जन्म। चंडाल रूप में अभिशप्त एक वनपाल, उसे पालता है। बाद में करकंडु नाटकीय ढंग से दंतीपुर का राजा घोषित होता है। वह अनेक असंभाव्य और साहसी घटनाओं का नायक बनता है। प्रस्तुत संधि-करकंडु के दन्तीपुर में प्रवेश से शुरु होती है, जिसमें राज्याभिषेक स्वागत, मदनावली का चित्र दर्शन, प्रेम विवाह, पिता से युद्ध और मिलन आदि घटनाओं का वर्णन है।

रोमांस युद्ध और शांति

(१)

प्रवर्क

पुणु मंतिहिं भणियउ णयइ णिउ तुहु गयवरखंधि समारुहहि।
चलु चलु सुंदर लहु चलहि दंतीपुरि रज्जहो भरु वहहि॥

भावी राजा के रूप में दंतीपुर में करकंडु का प्रवेश—

णिज्झरझरंतमय गिल्लगंडे[1]
करकंडु चडिउ ता करिपयंडे।
क वि लील मणहर अइवहेइ
ण सुरवइ अवराइ सहेइ।
संचल्लिउ सो सहु णरवरेहिं

---

१ णिज्झरझरंत=निर्झर में झरते मद से गीले गंडस्थल। विज्जिज्जमाणु=हवा

विज्जिज्जमाणु चलचामरेहिं ।
लीलाविलास सुइमा मिणाहिं
गाइज्जमाणु धरनामिणीहिं ।
कलयंठिरानस्यद्दीलणेहिं
सथुव्वमाणु वंदीनणेहिं ।
गुणपउररायतग्गयमणेहिं
सेविज्जमाणु णायरजणेहिं ।
परलोयकज्जे उज्जुयगईहिं
मर्णाइज्जमाणु मउनणमईहिं
अन्नरेहिं वि लोयहिं कलियमाणु
गउ सु दरु पुरवरे जणममाणु ।

घत्ता

सो पुरवरणारिहिं गुणणिलउ पइसंतउ दिट्ठउ णयरवइ ।
ण दसरहणन्दणु तेयणिहि उब्भहिं सुरणारीहिं नइ ।

(२)

पुर वनिताओं की प्रतिक्रिया—

तहिं पुरवरि खुहियउ रमणियाउ
माणट्ठियमुणिमणदमणियाउ ।
क वि रहमइ सरलिय चलिय चलिय णारि
विहडफ्फड मठिय का वि नारि ।

किया जाता हुआ चचम चामरों स जिस पर हवा की जा रही है। सथुव्वमाणु=मत्युत चारण, जिसकी स्तुति कर रह हैं। उज्जुयगईहिं=सीधी गति वाल ।

२ माणट्ठियमुणि माउ=ध्यान मे स्थित मुनियों के मन का दमन करने वाल ।

अइमणहरु ण हिमयतसिंगु।
मुत्ताहलमालातोरणेहि
ण विहसइ सियन्तहिं घणेहिं।
किंकिणिरणतु धयवडमालु
ण णच्चइ पवणिणि विहियतालु।
चामीयरमणिरयणेहिं घडिउ
ण मग्गहो अमर विमाणु पडिउ ।
तहिं पइसइ राउणिउ विमलबुद्धि।
पारंभिय गुरुयण जणसिमुद्धि।।
करहेमकु भु मगलु करंति
क वि माणिणि णिग्गय ता तुरंति ।
परिमगलु किउ वरदीवएहिं
जय कारिउ पुणु णारीसएहिं।
सोवण्णकलसकय उच्छवम्मि
पइसाहिउ सो णियमंदिरम्मि।

घत्ता

सो सयलगुणायरु सीलणिहि विणयभारसंजुत्तउ।
सामंतमंतिजणपरियरिउ परिअच्छइरज्जु करंतउ॥

(११)

तहि तेण वि रज्जु करतएण
आणाविय चम तुरतएण।

से ध्यान्तु। सग्गहो=स्वग से।

अइमणहरु ण हिमवतगिरि ।
मुत्ताहलमालातोरणेहिं
ण विहसइ सियत्तहिं घणेहिं ।
किंकिणिरणतु धयवडयमालु
ण णच्चइ पवणविणि गिरियनालु ।
चामीयरमणिरयणेहिं घडिउ
ण मग्गहो अमर विमाणु पडिउ ।
तहिं पइसइ णरवणिउ विमलबुद्धि ।
पारंभिय गुरुयण नणगिसुद्धि ।
करहेमकुंभु मंगलु करंति
क वि माणिणि णिग्गय ता तुरंति ।
परिमगलु किउ वरदीवएहिं
जय कारिउ पुणु णारीसएहिं ।
सोवण्णकलसस्य उच्छवम्मि
पइसाहिउ सो णिवमंदिरम्मि ।

घत्ता

सो सयलगुणायरु सीलणिहि विणयभारसंजुत्तउ ।
सामंतमंतिनयणरियरिउ पुरिअचक्कइरज्जु करंतउ ॥

(११)

तहि तेण नि रज्जु करंतएण
आणानिय वम तुरंतएण ।

से व्याकुन । सग्गहो=स्वर्ग से ।

(५)

मदनावली से विवाह का प्रस्ताव—

णिव हियउ मुणिउ पडधरणरेण
वरु होइह कएणहे एहु भरेण।
इय मुणिवि तो वि पडिलविउ भाय
पइ अप्पहिं अम्हह जाहु राय।
णउ छंडइ सो पइ उल्लसतु
पुणु भणइ णरेसरु णीससतु।
महो सहयर अरसु पयत्तएण
पइ लेवि भमहि कज्जेण वेण।
आयण्णिवि तं वयणाणुमारु
तहो रायहो कहियउ पडिवियारु।
एत्यत्थि देव सोरट्ठु देसु
सुरलोउ विडंबिउ ज असेसु।
तहिं णयरु अत्थि गिरिणयरु णामु
सुरखेयरणरणयणाहिरामु।
तहिं राउ अत्थि अरिमिरवयतु ।
अनवम्मु णाउ अनियगिकतु।

घत्ता

तहे रूवरवडी कलसरिय जा णयणपियारी णरवरहं।
मयणावलि णामइ तेयणिहि सा हूई धीय मणोहरहं॥

१
५ पडिलविउ=प्रतिलपित=प्रत्युत्तर दिया। आयण्णवि=आकर्ण्य सुनकर।
पयत्तएण=प्रयत्न से। पडिवियारु=प्रति विचार। सोरट्ठु=सौराष्ट्र देश।
रूव खरडी=रूप की खान।

घत्ता

जो गीयउ गायउ खेयरहिं मइ सूनउ करकण्डहो तणउ।
तो तेण नियंभिउ महो हियउ पुणु चउदिसु लायउ रणरणउ॥

(७)

विवाह की स्वीकृति—

मइ तुज्झ सहिए पायडिय वित्ति
जइ सक्कहि ता महो करि परित्ति।
विरहग्गिजालपज्जलियमाण
महो णासहिं जाव ण सहिए पाण।
ता दुक्खु वहंतिए णरवरासु
सयरें अक्खिय वत्त तासु।
करकण्डगेयआयण्णणेण
मयणानलि पीडिय कामएण।
आयण्णेवि बालहे तणिय वत्त
राएण लिहाविय हरिणणेत्त।
जयभूसण कुलगयणम्मि चंद
पहु अप्पिउ राए महो णरिंद।
अदिदूसहमोहणमडसहाउ
हउ तुज्झ णयरें पइ लेवि आउ।
पइं पेक्खिवि गन्धइ मोहु जो वि
वरु होइ णरेसर ताहे सो वि।

हुवा म धान्त पन वा तरह। विन्नयन=विलापत । सूनउ=पुत्रगुना।

७ वत्त=वार्ता।

घत्ता

मइ एहउ पिसुणिउ तुज्झ गिव एउ इत्तिउ तम्हामहो सरउ।
सा कमलदलच्छी ससिवयण तउ करयलु करपल्लवे धरउ॥

(८)

विवाह—

तहो सुणिवि वयणु पडधरणासु
पडिवण्णिउ राए सयलु तासु।
तें सरिसा कुलणहससहरेण
सपेसिय णियणर णिववरेण।
दिवहम्मि पसएणए कयसहाय
मयणावलि लेविणु ते वि आय।
किय हट्टसोह घरि तोरणाइ
सबद्धइ तहो करकङ्कणाइ।
णाणाविह वज्जइ वाइयाइ
गीयाइ रसालइ गाइयाइ।
भावड्ढइ णच्चइ णच्चियाइ
गयतुरयह थट्टइ सचियाइ।
उग्घाडिउ मुहवडु विहिं जणाह
ण मोहपडलु तग्गयमणाहं।
घयजलिअजलण भामरिउ सत्त
देवाविय भट्टहिं पढिवि मंत।
करु बालहे अप्पिउ णरवरेण

---

८ सपेसिय=भेजा। हट्टसोह=हट्टशोभा। वाइयाइ=बाद्य। भावड्ढइ=भावाघ। थट्टइ=समूह। उग्घाडिउ=उघाड दिया। घय जलिय सत्त=घी से जलती आग की

कियं सवहृणाइ दाहिणस्रग्गु ।
भउ तारामेलउ णिविडु तम
जम्मे वि ण णिहडइ णेहु जेम ।
पहिलारउ मिलियउमगु-पमग्गु
किउ लोयचारु जणरंजणग्गु ।
मुणिमुहणिग्गइँ रंजियमणाहँ
मामवहिँ रियउ विवाहु ताहँ ।

घत्ता

णरणाहहो हुयउ विवाहु तहिँ मुर णेयर देक्खिवि उत्तसिय ।
णियमोयहो उवरि विरत्तमणु वहोनणिय रिद्धिमणिग्रहिलसिय ॥

(६)

माघी रूप म मा का आगमन और आशीर्वाद—

तहिँ अवसरि पोमावइ वि माय
णियणंदणु दक्खहु तुरिय आय ।
सा दिट्ठी करसेइँ णिवेण
पुणु पणमिय भावें णरवरेण ।
णियपुत्तविवाहेँ हरिसियाए
आसीस पदिण्णी तुरिउ ताए ।
चिरु जीवहु णंदण पुहइणाहु
कालिंदी सुरसरि जाव वाहु ।
यइसारिय विणए सा णवेवि
दिण्णु अण्णु महल्ल पहुउ भणेवि ।

गात भावरें (फेर) । दवाविय-दिलाकर । अप्पिउ=अर्पित करती ।
सवहृणाइ=सपथें ।

सम्माणिय णयणहिं कोमलेहिं
परिहाविय वत्थहिं उज्जलेहिं ।
आसीस देवि मा गय तुरंति
करकंडकित्ति ण विप्फुरंति ।
ता एत्तहिं जणमणजणियराउ
करकंड पुरउ पडिहारु आउ ।

घत्ता

करकमल णिवेसिवि सिरकमले पडिहारु पयपइ पुट्ठसरु ।
चंपाहिवरायहो दूउ णिव सो अच्छइ सिंहवारम्मिवरु ॥

(१०)

चंपा नरेश के दूत का संदेश—

तं सुणिवि वयणु करकंडएण
पडिहारु पउत्तउ तुरियएण ।
लइ जाहिं तुरिउ सो सुहडु जेत्थु
चंपाहिवदूवउ आणि एत्थु ।
तं रायहो वयणु सुणेवि तेण
लहु आणिउ सो पडिहारएण ।
सो देक्खिवि दूवउ राणएण
सम्माणिउ दाणइं आसणेण ।
ससिद्धी मेइणि सयल जासु
भणु कुसलु दूव चंपाहिवासु ।

---

९ तुरिय शीघ्र । धाय=धाई । परिहाविय=पहनाए ।
१० सिंहवारम्मि=सिंह द्वार पर । अणवरउ=अनवरत । विहियसेव=विहित

दूयेण भणिउ नहो सुम्मनु राय
पइ जेहा अन्नहिं जसु सहाय ।
अणगरउ णरिंदहिं निहियसेव
सो सुमरइ तुम्हहं देवदेव ।
जइ चलइ ण भिण्णउ सीयलत्तु
तह चापणरिंदहो तुहु णिरुत्तु ।

घत्ता

लइ पालहि णिव करकंड तुहु चपाहिवरायहो केर धर ।
होएविणु एक्कइ वेरि जए अण्णहु जहु तुम्हइं मोय धर ॥

(११)

करकंडु का प्रत्युत्तर—

जिणु केरइ लभइ णाहि भित्त
एहु भेडणि भुंजहु हत्थमेत्त ।
ण वि पालहि जइ पुणु मेव तासु
तो टाउ करहि अह रहिं मिणासु ।
त सुणिवि वयणु करकंडएण
तें हियवए कोहु धरतएण ।
आयवणयण भालयले णीय
ण चन्दभिण्णायर सग्गि ठीय ।
जानाहि दूव तउ सामि जेत्थु
तह म्हणु वि एक्कु मा वसहि एत्थु ।

सव । सीयलत्तु= शीतलता । धर=धरा ।

११ आयवणयण=आताम्र नेत्र । सग्गें=स्वर्ग । महावीरेउ=प्राह का प्रहार ।

वें कहि चंपाहिवासु
इउ आयउ तुरियउ तुज्झ पासु।
जइ संगरि अत्थि भडारतेउ
संगामु मज्झु ता तुरिउ देउ।
इउ सुणिवि वयणु गउ दूउ तेत्थु
सिरिधाडीवाहणु वसइ जेत्थु।

घत्ता

तें कहियउ दंतीपुरिणिवइ सो वइ देव ण वि णवइ।
संगामरंगि तुम्हेंहिं सहु अइजुज्झइ धीरउ इउ लवइ॥

(१२)

चंपा नरेश की तैयारी और करकंडु का कूच—

त सुणिवि वयणु चंपाहिराउ
सण्णज्झइ ता चिर वद्धराउ।
तावेत्तहिं दंतीपुरिणिवेण
कंपाविय मेइणि मदरेण।
णिण्णासिय अरियणजीवएण
उड्डाविय दहदिसि रय रणेण।
णहु छायउ खलियउ रवि रएणं
लहु दिण्णु पयाणउ कुद्धएण।
गंगापएसु संपत्तएण
गंगाणइ दिट्ठी जंतएण।

---

१२ सण्णज्झइ=सनद्ध होता है। वद्धराउ=वद्धराग। उड्डाविय=उडाया। खलियउ=स्खलित हो गया। पयाणु दिण्णु=प्रस्थान किया। म्राइच्चहो=

दूतेण भणिउ तहो कुमलु राय
पइ जेहा अन्नहिँ जसु सहाय।
अणवरउ णरिन्दहिँ विहियसेव
सो सुमरइ तुम्हइ देवदेव।
जइ जलइ ण भिण्णइ सीयलत्तु
तइ नायणरिन्दहो तुहु णिरुत्तु।

घत्ता

लइ पालहि णिय करकंड तुहु चम्पाहिवरायहो केर धर।
होएविणु एक्कइ वे वि जण अणुहु अहु तुम्हइ सोय धर॥

(११)

करकंडु का प्रत्युत्तर—

विणु वेरइ लभइ णाहि मित्त
एह मेइणि भुंजहु हृप्पमेत्त।
ण वि पालहि जइ पुणु सेव तासु
तो टाउ करहि अइ रहि मिणासु।
त सुणिवि वयणु करकंडएण
तें हियवए कोहु धरतएण।
आयवणायण भालयले णीय
ण चन्दिवायर सग्गि ठीय।
जाणाहि दूत तउ सामि जेत्थु
तहु मग्गु वि एक्कु मा वसहि एत्थु।

सव। सायत्तु = शीतलता। केर = आज्ञा।

११ आयवणयण = आताम्र नेत्र। सग्गें = स्वर्ग। मन्नावउ = प्राह का अहंकार।

वें कहि चापाहिवासु
हुउ आयउ तुरियउ तुज्झ पासु ।
जइ सगरि अत्थि भडावलेउ
सगासु मज्झु ता तुरिउ देउ ।
इउ सुणिवि वयणु गउ दूउ तेत्थु
सिरिधाडीवाहणु वसइ जेत्थु ।

घत्ता

तें कहियउ दतीपुरिणिवइ सो वइ देव ण वि णवइ ।
सगामरगि तुम्हेंहिं सहु अइजुज्झइ धीरउ इउ लवइ ॥

(१२)

चपा नरेश की तैयारी और करकडु का कूच—

त सुणिवि वयणु चापाहिराउ
सण्णज्झइ ता चिर वद्धराउ ।
तावेत्तहिं दतीपुरिणिवेण
कपाविय मेइणि मदरेण ।
णिण्णामिय अरियणजीवएण
उद्धाविय दहदिसि रय रणेण ।
णहु छायउ खलियउ रवि रएण
लहु दिण्णु पयाणउ कुद्धएण ।
गगापएसु सपत्तएण
गंगाणइ दिट्ठी जतएण ।

---

१२ सण्णज्झइ=सनद्ध होना है । वद्धराउ=वद्धराग । उद्धाविय=उठाया । खलियउ=स्खलित हो गया । पयाणु दिण्णु=प्रस्थान किया । आइच्चहो=

सा सोहइ सियनल सुविलयति
ण सेयभुयगहो महि्रन जंति ।
दूराउ वहती अइरिहाउ
हिमवत गिरिन्दहो कित्ति णाइ ।
जिहि फुलहि लोयहि ण्ह्वणहि
आइन्चहो जलु परिन्तिणहि ।
दव्मकियन्दहि करयलेहि
णाइ मणइ णाइ ण्यहि छलेहि ।
हउ सुद्धिय णियमग्गेण जामि
मा रूसहि अम्महो उपरि सामि ।
एइ पेक्खिवि णिउ करकंडणामु
गउ लणणणयर गुणगणियगासु ।

घत्ता

तें मगरि सुरनरखेयरहं मण नणियउ घणुहरसुअसरहिं ।
तं वेढिउ पट्टणु चन्दिमिहि गयतुरगणरिन्दहिं दुद्धरहिं ॥

(१२)

चपा नगरी का घिराव—

त वेढिउ जा राणउ तेनु
ता आलि पुरयणु हुन मणेण ।
णरणाहहो कहिन परण केण
उत्थरुद्धन परबलु सयलु जेण ।
हे णरनइ परबलनणहुआम

आदित्य का—सूर्य का । ण्हविय= दूध से धवित और नष्ट हुए । सुद्धिय=शुद्ध ।
१२ वन्दिउ=घेर लिया । उत्थरुद्धन=नाश किया ।

वदीयणसज्जण पूरियास ।
उद्दंडसुंड गय गुलुगुलंत
कुडिलाणण वरहय हिलिहिलंत ।
सचल्लिय रहवर घरहरंत
फारक्कहिं फुरियहिं फरहरंत ।
करवालकिरण रविकरहरंत
वसुडिय कउत्तल थरहरंत ।
छुरिएहिं कोंत अइ णिप्फुरंत
पवण इव केए सचरत ।
सीहोव्व मदुद्धरु अइपयडु
तुह उवरि पराइउ वइरिदडु ।

घत्ता

त सुणिवि णरिदहो मुहकमलु सजायउ रत्तुप्पलसरिसु ।
डसियाहरु भूभगुरणयणु कोहाणलु वड्ढिउ गउ हरिसु ।।

(१४)

सैनिक प्रतिक्रियाए —

तान सो वड्डिओ धाइया किकरा
सगरे जे णि देवाण भीयकरा ।
वाउवेया हया सज्जिया कुजरा
चक्कचिक्कार सचल्लिया रहवरा ।
हक्क डक्कार हुकार मेल्लंतया
धाविया के वि कुताइ गेण्हतया ।
के णि सम्माणु सामिस्स मग्गतया
पायपोमाण रायस्स जे भत्तया ।

चानइत्था पसत्था रणे दुद्धरा
धानिया ते णरा चारुचित्तानरा ।
के वि कोवेण धावंत कपतया
के वि अग्गिण्णखग्गहिं दिप्पंतया ।
के वि रोमचकंचेण संजुत्तया
के वि सण्णाहमनद्धमगत्तया ।
के वि संगामभूमीरसे रत्तया
सग्गिणी छम्मगेण संपत्तया ।

घत्ता

भपाहिउ णिग्गउ पुरवरहो हरिकरिरहवर परियरिउ ।
इद इन्दाहपीवरकरहिं मणु केहिं ण अणुमरिउ ।।

(१५)

हद युद्ध—

वा हयइं तूराइं
भुवणयलपूराइं ।
वज्जंति नच्चाइं
सज्जंति सेण्णाइं ।
आणाए घडियाए
परवलइ भिडियाइं ।
खु ताइं भज्जंति
कु जरइं गज्जंति ।
रहसेण वग्गंति
करिकुम्भणे लग्गंति ।
गत्ताइं तुट्टंति
मु डाइं फुट्टंति ।

रुडाइ धावति
अरिथाणु पावति ।
अताइ गुप्पति
रुहिरेण थिप्पति ।
हड्डाइ मोडति
गीवाइ तोडति ॥

घत्ता

के वि भग्गा कायर जे वि णर के वि भिडिया के वि पुणु ।
खग्गुग्गामिय के वि भड मडेविणु थक्का के वि रणु ॥

(१६)

बाप बेटे का युद्ध—

ता रोसें चंपाहिउ णरिंदु
रह चडिवि पधायउ ण सुरिंदु ।
सो तुरिय गयउ परबलणिवासु
अभिडियउ करकंडहो णिवासु ।
ता कलयलु वड्ढिउ विहिं बलाह्
बाणावलिछाइयणहयलाहं ।
करकंडें कोहालणजुएण
अइरावइ करदीहरभुएण ।
ता तुरियइ चंपणराहिवासु

१५ मडेविणु=माडकर, रचकर ।

सहसत्ति पमेल्लिय मत्ति तासु ।
रहु छिण्णिउ चिन्धद्धउ खणेण
पुणु सारहि पाडिउ तुरिउ तेण ।
ता खेरें चपणरहिवेण
सपेसिय नाण तुरवएण ।
सर पेसिय जा चपाहिवेण
करकड्हो नलु भग्गउ खणेण ।

घत्ता

करकडग पेच्छिवि नलु चलिग मणि रोसु महंतउ निग्गरिउ
जा निग्न पइएणी खेयरउ वहे पेसगु णिप्पाउ तें तुरिउ ।

(१७)

क्रियाओं का प्रयोग—

ताव तेणुद्धरेण
मुक्क निजन मन्दरेण ।
ता खणेण विग्न घिट्ट
धाविया तुरत निट्ठ ।
पेक्करंति हु क्करंति
वान्नेय सचरंति ।
रक्खसी व वावरंति
भासुरा विसे मिलंति ।
कु भिकु म णिहलंति
रहवरेण रह ग्लंति ।
सग्गरम्मि जे वि निट्ठ
दसखणेण ताहे णट्ठ ।

---

१६ मग्गिदियउ=मिट गया ।

के वि मुच्छमोहियाइ
के वि जोह् जोहियाइ ।
के वि घायखडियाइ
के वि जीव छडियाइ ।

घत्ता

ता कुवियइ चपणरेसरइ तुरिएण वि असिलियकरे धरिय ।
जा विज्ज गिलती णरसयइ वलसत्ति रणद्धें तहे हरिय ।।

(१८)

युद्ध की विश्वव्यापी प्रतिक्रिया—

गय विज्ज तट्ठीय
करकंडें दिट्ठीय ।
रोस वहतेण
करे धणुहु क्रिउतेण ।
तहो चप्पे गुणु दिण्णु
त पेक्खि जणु खिण्णु ।
ता गयणे गुणसेव
खोहं गया देव ।
टणारसद्देण
घोरें रउद्देण ।
धरणियलु तडयडिउ
तस कुम्मु कडयडिउ
भुवणयलु खलभलिउ ।

---

१८ तट्ठीय=नष्ट हो गई ।

गिरिपवर टलटलिउ
मयरहर झलझलिउ।
धरणियलु मलमलिउ
गयणाहु परिसरिउ
सुरराउ थरहरिउ।

घत्ता

सो मइ सुग्गीवेण धणुगुणहो रइ मग्गा णट्ठा गयवर।
मग्गलियउ चपणारोदियहो भयभीय ण पल्लट्टिहिमयर॥

(१६)

मा का हस्तक्षेप—

सुरलोयहु टुडु हियरउ विभिण्णु
छुडु परवलु भयभीयउ णिमण्णु।
मरट्ठउ टुडु वड्ढमाइयाणु
टुडु मग्गए चपणरिम्माणु।
टुडु चाउ खगद्धे सज्जियाउ
छुडु सेयनल गुणु मज्जियाउ।
करकें गुणें लिउ णाणु परह
चपाहिवेण ता मुक्कु अनह।
हुउ णाणु णिरत्थउ सोट्टु जाम
पोमावइ सगरे पत्त ताम।
मा निट्ठीय तेण णरसरेण
पुणु पणमिय दूरहोणयसिरेण।
हे माए माए मगर असज्झे

---

१६ असज्झे=असाध्य।

किं आइय तुहु भडनियरमज्झे।
सा भणइ पुत्त सवरहि चाउ
एहु धाडीवाहणु तुज्झ ताउ

घत्ता

कहि माए महासइ गुणणिलउ किमु ताउ महारउ णिउ हवइ।
ता ताइ तुरतइ तहो कहिउ सुणि पुत्त महाबल धरणिवइ ॥

(२०)

मिलन—

चंपाउरिरायहो घरे रमणी
हउ होंती जणवयमणदमणी।
सजायउ जइयहु गब्भे तुहु
उप्पण्णउ तइयहु दुक्खु महु ।
हउ हरिवि णीय ता करिवराइ
दंतीपुरि वाहिरि दुद्धराइ ।
तहिं जायउ भीममसाणि तुहु
पइ पेक्खिवि जायउ मज्झु सुहु ।
करकंडु णरेसरु एक्कु मणु
त सुणिवि वयणु थिउ विमणमणु।
णियपुत्तहो अक्खिवि चत्तभया
पुणु तुरियउ कतहो पासेगया।
सा दिट्ठीय चपणरेसरेण
गंगाणइ ण रयणायरेण।

२०[1] थुइ करेइ=स्तुति करता है।

जाणतें एहु पोमावइया
तो वि तेण महारें मा गणिया ।
श्रह गरुयउ जो वयभरु धरेइ
तं राणउ वतहे थुइ करेइ ।

घत्ता

परिपुच्छिय चपणराहिवइ कहु छुट्टिय तुहु तहो गयवरहो ।
ता कहियउ ताइ तुरतियए गिरगयए पमुक्की तहे सरहो ॥

(२१)

पद्मावती धाडीवाहन को पूर्व कथा सुनाती है —

तहो पासे समाणए महो सुयउ
कुलमडणु णंदणु सो हुयउ ।
परिपालिउ पेण वि ग्णेयराइ
रउ लइयउ तहिं मइ णिव भराइ ।
रतीपुरिराणउ ता सुयउ
तहिं णयरे णराहिउ सो कियउ ।
सो जाणहि पउहिं तुह भिडिउ
तुहु श्रोह पिसाए परिखंडिउ ।
मा जुज्झहि छडहि एहु गहु
णिव णदणु तेरउ एहु पहु ।
त वयणु सुणिवि चपाहिवइ
सतुट्ठउ तक्खणे सो हियइ ।
हूउ धण्णउ जसु एहउ सुयउ

२१ पज्जुण = प्रद्युम्न । दामोयरिण = कृष्ण से । गिण्हहि = मानो ग्रहण करो ।

जो सगरे धीरउ दिढभुयउ ।
परिछडिवि धणुहरु गालियसरु
करकंडपासु गउ णिवपवरु ।

घत्ता

पुणु जाइवि धाडीवाहणेइ आलिंगिउ णंदणु सो खणिण ।
जह सगरे जाइवि तेयणिहि पज्जुण्णु कुमरु दामोयरिण ।।

(२२)

क्षमा याचना उपसहार—

करकंडइ वुत्तउ णियनयणु
पइ सरिसउ ज मइ कियउ रणु ।
मा गिण्हहि मेरउ देव छलु
त खमहि भडारा महो सयलु ।
तं सुणिवि वयणु चपाहिवइ
उल्लसियउ तक्खणे सो हियइ ।
गउ लेविणु णयरहो सहु णिवेहिं
पइसारिउ णाणाउच्छवेहिं ।
सा णयरी करकंडें सहेइ
अमराउरि लज्जा तहो वहेइ ।
णर रयणइ लेविणु साणुराय
णिवमंदिरे वद्धावणहु आय ।
ता दुद्धररायह जो घरट्टु
करकंडहो वद्धउ रायपट्टु ।

---

२२ खमहि=क्षमा करो । अमराउरि=अमरपुरी । वद्धावणहु=बधाई के लिए । हिययगंठि=हृदय की गाठ ।

पुणु अप्पणु राए तक्खणेण ।
तणु मण्डिउ नवसिरिभूसणेण
धम्मट्ठठिणिगट्ठणमारु ।
तउ चरिवि सुदुद्धरु थाममारु
तणु छण्डिवि खण्डिवि हियगठि
सो लग्गउ सिवरहुनरण कंठि ।

घत्ता

गउ घाडीवाइणु मिनणिलउ कणयामरनग्गणउ गुणट्ठ नरु ।
करकडु करतउ रज्जु पुरि मो अच्छइ माणिणिहियहरु ।।



[५]

कवि धाहिल

'पूव ज`म की धनश्री ही वतमान ज म म हस्तिनापुर के माथवाह अशोकदत्त की पुत्री पद्मश्री है। साकेतपुर के कुमार समुद्रदत्त स उसका विवाह होता है। विवाह के बाद, वह कुछ दिन ससुरान मे ही रहना है। फिर मा की बीमारी की खबर पाकर अपने घर जाता है। यहा पद्मश्री को भूल जाता है। वह वियोग म व्याकुल हो उठती है। एक साझ कुमार को वियोग म दुखी 'चकवी को देखकर अपनी पत्नी की याद आती है वह ससुराल पहुच जाता है। शाम को पद्मश्री सजधज कर प्रिय से मिलने के लिये जाती है। ठीक इसी समय, पूव ज`म के अतराय स एक व्यतर देव चिल्ला उठता है, पद्मश्री तून मुझे सकेत दिया था यह दूसरा कौन है। यह सुनना था कि कुमार सदेह, क्रोध और घृणा से जल उठता है। पद्मश्री को मिलता है—भत्सना, अपमान के घूट और परित्यक्त जीवन। वह शेष जीवन धार्मिक आचरण म विताने के लिये बाध्य है।

उज्जोइउ भुयणु असेसु इ
गरुय-राय रजिय हियउ।[1]
अत्थवणु सिहरि रवि सठियउ
समा-वहु-उक्कठियउ ॥

(१)

सध्या का चित्रण पद्मश्री का वासगृह मे प्रवेश—

अत्थमिउ दिनायरु सभ जाय
लिय कणय घडिय न भुयण भाय।
कमलिणि कमलुन्निय महुयरहिं
अमुए हि रुएइ मकरन्दलेहिं।

---

[1] घत्ता—गरुय राय भारी राग स रजित हुआ।

सोप्राउरु मणि चमक्कारु होइ
छउ मित्त विओउ न दुक्खु देइ ।
अधारिय सयल वि णिसि विहाइ
किलिकिलिय भूय-रक्खस पिसाय ।।
तसु पसरिउ किंपि न तमु विहाइ
तमु गब्भ जामि णिक्खित्तु नाइ ।।
तोडंत कुसुम तसु उडंत चंदु
कदप्प-महोमहि-कंदकंदु ।।
धणि जेम मड हट्ट हत्थि चूट
नासेइ मियकह तिम्य तमोह ।
हिरणंक-किरण विप्फुरिउ भाइ
गयणंगणु धवलिउ न टुमाइ ।।
णिसि पढम-पहरि उत्ताम-कामि
वासहरि कुमारु मणभिरामि ।।
महमहिय-बहल-वरधूव-गंधि
पचलंत-कुसुममाला सुगंधि ।।
रुणुरुणिय महुर रवि भमर-लोणि
पज्जालिय-मणि-मंगल-पईवि ।।
पल्लसिरि सहिउ पल्लंकि ठाइ
सहियणु आणंदिउ घरहु जाइ ।।

घत्ता

जाणविह करणु विसेसेंहि
सुर सोक्खइ माणेइ कुमरु ।

---

१ पत्थवणमिहरि—अस्ताचल के शिखर पर । गंभ=संध्या । जाय=हो गई । संध्या का चित्रण ।

आलिंगिउ कंत पसुत्तउ
नाइ स विग्गहु पचसरु ॥

(२)

प्रभात का चित्रण—

परिगलिय रयणि उग्गमिउ भाणु
उज्जोइउ मज्झिम-भुयण भाणु ॥
विन्छाय-कंति ससि अत्थमेइ
सक्लक्कहु किं थिरु उदउ होइ ॥
सूरहु भएण नासेवि निहीणु
गिरि-कंदरि तिमिर तमोहु लीणु ॥
रहहिं कमलायर पयड कोस
विलसंति मित्त किर विगय-दोस ॥
मउलंति कुमुय महुयर मुयंति
थिर नेहु मलिण किं कहवि हुंति ।
मुणिवर करंति सज्झाउ झाणु
कुरलंति हंस निम्मलु विहाणु ॥
नवकारु पढंति थुणंति सिद्ध
पउमसिरि कुमारि सहु विउद्ध ॥
गोसग्ग कज्जु सयलु इ करेवि
गुरु-चलण-कमलु पणमंति बे वि ॥
गउ सत्थवाहु निय पुरि स-बंधु
ठिउ कुमरु-तहि वरगुहगंधु ॥

---

२ प्रभात का चित्रण। गो सग्ग कज्जु=सवेरे के सब काम । बेवि=दोनों ।
सोहग्गउ=सौभाग्य । लावन्नउ=लावण्य । विम्हिय मणेण=विस्मित मन से ।

गोआउरु मग्गि चरन्तउ होइ
चउ मित्त विओउ न दुक्खु देइ ।
अंधारिय सयल वि दिसि विहाइ
किलिकिलिय भूय रक्खस पिसाय ॥
तसु पसरि किंपि न जणु विहाइ
जणु गब्भ वासि निक्खित्तु नाइ ॥
थोइन कुसुम यणु उडइ चन्दु
कन्दप्प-महोसहि कन्द-कन्दु ॥
यणि जेम मइन्दहु हत्थि जूह
नासेइ मियरहु तिम्व तमोहु ।
हरिणङ्क-किरण विप्फुरिय भाइ
गयणंगणु धवलिउ न दुद्धाइ ॥
निसि पढम पहरि रमण-कामि
वासहरि कुमारु मणभिरामि ॥
महमहिय वहल-घणधूव गंधि
पचलन-कुसुममाला सुगंधि ॥
रुणुरुणिय महुर रवि भमर-लीणि
पज्जालिय-मणि-मंगल-पईवि ॥
पउमसिरि मण्डिउ पल्लवि ठाइ
सहियणु आणन्दिउ धरहु जाइ ॥

घत्ता

नाणाविह करण विसेसेहि
सुरु मोक्खइ माणेउ कुमरु ।

---

१ अत्थवणमिहरि—अस्ताचल के शिखर पर । गम=सन्ध्या । जाय=हो गई । सन्ध्या का चित्रण ।

आलिंगिउ कंत पसुत्तउ
नाइ स विग्गहु पचसरू ॥

(२)

प्रभात का चित्रण—

परिगलिय रयणि उग्गमिउ भाणु
उज्जोइउ मज्झिम-भुयण भाणु ॥
निच्छाय-कंति ससि अत्थमेइ
सकलंकह किं थिरु उदउ होइ ॥
सूरहं भएण नासेवि निहीणु
गिरि-कंदरि विविर तमोहु लीणु ॥
देहहिं कमलायर पयड कोस
निलसंति मित्त किर विगय-दोस ॥
मउलंति कुसुय महुयर मुयंति
थिर नेह मलिण किं कह वि हुंति ।
मुणिवर करंति सज्भाउ भाणु
कुरलंति हंस निम्मलु विहाणु ॥
नवकारु पढंति थुणंति सिद्ध
पउमसिरि कुमारि सहु विउद्ध ॥
गोसग्ग कज्जु सयलु इ करेवि
गुरु-चलण-कमलु पणमंति वे वि ॥
गउ सत्थवाहु निय पुरि स-वधु
ठिउ कुमर-तहिं वरजसुहगधु ॥

---

२ प्रभात का चित्रण। गो सग्ग कज्जु=सवेरे के सब काम । वेवि = दोनों । सोहग्गउ=सौभाग्य । लावन्नउ =लावण्य । विम्हिय मणेहिं=विस्मित मन से।

गाढाणुराय पउमसिरि जासु
छाया व न मेल्लइ खणु वि पासु ॥
हरि हियइ जेम्व नियमेइ लच्छि
तिह सा वि कुमारहु दीहरच्छि ॥
पुन्यजिनय नयण-मण हरण-दक्खु
माणंति जहिच्छइ विसय सोक्खु ॥

घत्ता

मोहुग्गउ लायन्नउ न
पसरियणि विम्हिय मणहिं ।
मलहिज्जइ अणुदिणु लोयहि
हरिसुप्फुल्लिय-लोयणेहिं ।

(२)

नवयुगल पद्मश्री और समुद्रदत्त की दिनचर्या—

गुरु विविह विणोएं दियह जंति
अवरोप्परु गम्मसइ करंति ॥
कइय वि निय अंग-पसाहणेण
कइय वि गुरु चलणाराहणेण ॥
कइय वि जिणिंद-गुण कित्तणेण
कइय वि साहुण नमसणेण ॥
कइय वि जिणधम्म-कहाणएहिं
कइय वि रमंति पेच्छणएहिं ॥

---

२ पसाहणेण=प्रसाधन से । पेच्छणय=पेक्खणय=प्रेक्षण=नाटक देखकर । साहम्मिय भोयणेण=साधर्मि भोजन से । पहाणगा =अन्नातर । बहुभेय =

कइय वि करंति जल-केलि रम्मु
कइय वि लिहंति वर चित्त कम्मु ॥
कइय वि पेच्छणय पलोयणेण
कइय वि साहम्मिय भोयणेण ॥
कइय वि पढन्ति पन्होत्तराइ
बहु भेयइं गूढ-घणक्खराइं ॥
भुंजतइ मणहर विसय लट्ठ
संवच्छर वोलिय ताम अट्ठ ॥
अह अन्न दियहि नामिं वराहु
सापयहि अविउ लेहवाहु ॥
तिं घित्तु लेहु वायइ कुमारु
तहिं लेहि लिहिउ किर एउ सारु ॥
"लहु एहिं कुमार समुद्ददत्त
तुहु विरहिं निसढुल जणणि पुत्त ॥
गुरु-सोय-सेल्ल-निब्भिन्नमाण
कठ टिठय दुक्खि धरइपाण ॥

घत्ता

रच्छामुहि गेहि घर गणि
खणि रुयति न वि थक्कइ ।
सरि नलिणि जेम जल-वज्जिय
रत्ति दियहु परिसुक्कइ ॥"

बहुत भेद वाले । गूढ-घणक्खराइं=गूढ घनाक्षरों से । वोलिय=चले गए ।

मां की बीमारी का लेखपत्र और समुद्रदत्त का प्रस्थान, पद्मश्री की वियोग वेदना—

पउमसिरिहि साहिय लेह वत्त
'महु दुम्मि अच्छइ जणणि तत्त ॥
ता जामि कंत पेक्खेमि ताउ
अवगणेमि जणेरिहि हियय-सोउ ॥"
सा भणइ अंसु जलोल्ल नेत्त
हउं जामि तइ सहु अज्जउत्त ॥"[1]
लग्गंति दियह पिय दुग्गु देसु
पिउ मंदिरि अच्छहि तुरियउ पहु ॥"
गउ दिट्ठउ जणणि पणमिउ असोउ
आलिंगिण जिहिं नि पणट्ठु सोग ॥
आणन्दिय-पवर-सयण मित्तु
अच्छइ सुसाउ सुह कालु तेत्तु ।
पउमसिरि विरह सिहि-सोसियंगि
निरु झूरइ रयणिहि दिह रइंगि ॥
नेमित्तिय पुच्छइ भणइ साहु
कइयहु आवेसइ मज्झु नाहु ॥
बलि-सहु-सक्खण महुर-वाय
लहु करिउरहि काय ॥
आवेइ कन्तु जइ मज्झु अज्जु
दहि मालि भत्तु तो देमि तुज्झु ॥
आवेउ कन्तु लोयण-सलूणु
तुह देमि जक्ख लड्डुयइ दूणु ॥

---

१ अज्जउत्त=आर्यपुत्र ।

आवेउ तुरिउ महु जीवएसु
ओयाइउ तुम्हह वि देसु ॥

घत्ता

नयणसु-सलिल गडयल-थल
दिणि दिणि झिज्जइ बाल जिह ।
लावन्न-कंति परिवज्जिय
किन्ह पक्खि ससिरेह जिह ॥

(५)

कुमार का चकवी को देखकर पद्मश्री का याद आना और ससुराल के लिए कूच करना—

अह एक्कहिं दियहि समुद्ददत्त
निसि समइ सरोवरु नेण पत्तु ॥
पिय रहिय दिट्ठ तिं चक्कवाइ
कदंत कलुणु दुक्खिय वराइ ॥
उन्नेइ भप जल मज्झि देवि
तीरहिं ठिय पखउ पुणु धुणेवि ॥
पक्ख-रणु लोलइ गयणि ठाइ
तड-तरुयरि लग्गइ दिसिहिं धाइ ॥
"चक्काय-घरिणि सरि एह जेम्व
विरहाउर मज्झ वि दइय तेम्व ॥
जिह राय नीरि पजरि निरुद्ध
अच्छइ महु मग्गु नियन्त मुद्ध ॥"
उक्कंठ विसंठुल भट्ट जाउ
विरहानल सोसिय नियवि जाउ ॥

गुरुयणेण वुत्तु म "सहार सन्ध
निय पत्त लग्गिणु आउरन्ध ॥"

आरुहु तुरगि मयुददत्त
हत्थिणउरि सहु सत्थेण पत्त ॥
पमुइय मण सो अयरन्द-णालि
पइसरइ सस मदिरि निमालि ॥
आयड वेगि
सिय-दसण सेणि ॥
कर-गलिय-वलय
लयत अलय ॥
मल-मइल वेस
लीहावसेस ॥
इय-गुण विसिट्ठ
पउमसिरि दिट्ठ ॥

घत्ता

पेक्खेवि कुमरु तहि पावहि
नट्ठ खणद्धि सोगु किह ॥
दुव्विमहइ लोय-सतावणु
कय पुन्नह तालिद्दु जिह ॥

(६)

मिलन की पूर्व तैयारी और अन्तराय—

न्हाविय सुयवन्हाणिय नलेण
सु निउ निलित्तु हरियदणेण ॥
तबोलु किन्नु किय उचिय तित्ति

परिपुन्छिय कुसलाइय-पउत्ति ॥
एत्थंतरि मउलिउ गुरु पयाउ
वारुणि पसग-जणियाणुराउ ॥
कहवि य अत्थवणु न होइ लोइ
न अन्भमुवकुर वि अत्थवेइ ॥
पउमसिरिइ सज्जिय जास भवणु
विणिवेसिउ कोमल-तूलि सयणु ॥
निम्मल पईउ निहयधारु
सेज्जहि ठिउ अच्छइ तहिं कुमारु ॥
ज वद्धउ अन्नहि जम्मि आसि
धणसिरिए कम्मु बहु-दुक्ख रासि ॥
त उदयगउ भोगतराउ
केलिप्पिउ आइउ तहिं पिसाउ ॥
पउमसिरि नियवि आवत गेहु
चिंतवि "विहडावउ विहि मि नेहु"
सो अन्न भित्ति अतरिउ भणइ
फुडु वयणहि जिह सो कुमरु सुणइ ॥
'अत्थमिइ सूरि पसरिइ तमोहि
आवेज्जसु अणुदिणु एत्थु गेहि ॥
पउमसिरि मज्झु सकेउ देइ
आणिउ एत्थु पइ अनु कोइ ॥'
"को बोल्लइ एहु अणज्जु घटठु"
जोवइ कुमारु ता भत्ति नट्ठु ॥

---

६ किन्ह पक्खि=कृष्ण पक्ष । ससिरेहजिह=जिस प्रकार चन्द्र रेखा ।
विहडावउ नेहु'—दोनों का प्रेम नष्ट करू । अन्नभित्ति

घत्ता

मायाविणि टुट्टु पिसाउ
सुदट्ठु सुन्दरि अवलोइयउ ।
परणाइव जेम पईवउ
भत्ति न नज्जइ कहिं ठियउ ॥

(७)

कुमार द्वारा नारी जाति की निन्दा—

चिंतइ कुमारु 'दुस्सील एह
कलत्तु महु भिन्न-नेह ॥
अइनिम्हइ निम्मल कुल-पसूय
दुच्चारिणी एह हूय मन्त-धूय ॥
उम्मग्ग-लग्ग हुय ट्टु सील
उद्दाम विसमिसय-कामलील ॥
सच्छन्द अणज्ज निराणुरप
अन्नाणिय मोहिय विसय-सङ्ग ॥
न गणइ माइ बप्पु म महोयर
न गणइ इह परलोय भयावणु ॥
न गणइ मरणु लज्ज भउ मेल्लइ
करइ अकज्जइ ठहरसु खेल्लइ ॥
कवडु करवि कनु मारावइ

दूसरा दीवार के अन्दर से । आवज्जमु=आवरण । अणु?=अन्याय । नट्टु=नष्ट हो गया । विमाण=विचार ।

७ अइ निम्हइ=अत्यन्त विस्मित । मन्त धूय=मन्त्र की बेटी । उम्मग्ग-लग्ग=कुमार्ग में लग गई । सच्छन्द=स्वच्छन्द । अन्नाणिय=अज्ञानी । भयावण=

खइ अन्नु पुणु सो नि ण भावइ ॥
पलविकय एह नारि वट्ट भगेंहिं
चदण-लय जिह भुत्त भुयगेंहि ॥
छिन्निनि नक्कु कन्न-सहु वालहिं
दसमि अज्जु कयतु दुसीलहिं ॥
तोडमि कमलु जेम्व सिरु दुट्ठहिं
फलउ अणग सगु पाविट्ठहिं ॥

घत्ता

चिंतइ एउ कुमारु
कोवाणल जालिय मणउ ।
"परिहारु डड्डु खल नारिहिं'
सुमरिय नीइ वियक्खणहु ॥

(८)

पद्मश्री का शयनकक्ष मे प्रवेश, प्रताडना और अपमान—

आइय पउमसिरि अलकरेवि
करि कमलु पउर तबोलु लेवि ॥
पसरत-बहल सुदवास ग ध
उब्भिन्न निविड रोमच बध ॥
उब्भड भिउडि भग भीसावणु
कुवित कयतु नाइ दुद्द सणु ॥
कोय फरत नासु डमियाहरु

भयानक । ढढढसु खोल्लइ=आग से खेलता है । पलविकय=प्रलयार्व ।
८ पलकरेवि=पलकार करके । पउर=प्रवर । दुद्द सणु=दुदर्शनीय । डसियाउर=

कुरल दिट्ठि नं पयडु मणिच्छर ॥
मक्खिय वण लय जिह करि-रायहु
सक्खिय मनरि जेम्व दुरायहु ॥
मक्खिय कमलिणि जेम्व मियरहु
मक्खिय कुलवहु जेम्व कलरहु ॥
सक्खिय गरुडहु जेम्व भुयंगी
सक्खिय वग्घहु जेम्व कुरंगी ॥
सक्खिय सेल मुत्ति जह वज्जहु
सक्खिय मुणिवहु जेम्व अकज्जहु ॥
सक्खिय निहु मइ अमइ-पमगहु
संक्खिय जिह चक्काइ विग्गालहु ॥
सक्खिय रायहंसि जिह जलयहु
सक्खिय जेम्व वसु नरि पणयहु ॥

घत्ता

निम्य करिणि विंझि आसंकिय
सर-णहरहु पचाणणहु ।
तह भीसणु रूउ निए विणु
बाल चमक्किय चित्त तहु ॥

दग्गितागर । कुरल दिट्ठि=क्रूर दृष्टि । वणलय=वनलता । सासूरि=मंदरी चक्काइ=चक्रवाक । जलय=जलदों से । विग्गालहु=बिडाल से । विंझि= विन्ध्याचल ।

(६)

उगते प्रभात मे पद्मश्री के नियएण जीवन का चित्रण—

वोल्लाविउ वतु न देइ वाय
कर मउलि करेविणु भणइ जाय ॥
"को अविणउ मइ किउ सामिसाल'
पडिभणइ सो वि आरुट्ठ गाल ॥
"दुस्सीलें दिट्ठि महु परिहरेहि
अह कालि अपूरइ तुहु मरेहि ।।
तं असुय-पुव्वु निसुणेवि कत
अइगरुय तास-कपत गत्त ॥
वज्जाहय जिह् कुल सेल-मुत्ति
मुच्छिय धरणीयलि पडिय भत्ति ॥
चिर वेलइ उट्ठिय लद्ध सन्न
मुह-कमलु ठविवि करयलि परुन ॥
अच्छेइ वाल जिह् वुन्न हरिणि
नइ कलुणाइ भत्ति निहाइ रयणि ॥
पउमसिरि-सरीरह् जेम्व कति
नक्खत्त निवह् नहयत्ति गलति ॥
इ दिय सुह व नासइ तमोहु
कुक्कुड-रउ पसरइ नाइ मोहु ॥
गयणे वे चदु निच्छाउ जाउ
सोय व नियधइ चक्कवाउ ॥
नयणा इव कुमुयइ सकुयति

---

१ लद्ध सन्न=लब्ध सना=लब्ध चेतना । परुन=रख दिया ।

कुरूर दिट्ठि न पयडइ मणिच्छर ॥
मक्खिय वणलय जिह करि-रायइ
मक्खिय सालूरि जेम्व दुवायइ ॥
मक्खिय कमलिणि जेम्व सियरइ
मक्खिय कुलनइ जेम्व कलरइ ॥
सक्किय गरुडइ जेम्व भुयंगी
सक्किय वग्घइ जेम्व कुरंगी ॥
सक्किय सेल मुत्ति जइ वज्जइ
सक्किय मुणिवइ जेम्व अणंगइ ॥
मक्खिय जिह मइ अमइ-पमगइ
मक्खिय जिह चक्काइ विग्रालइ ॥
सक्किय रायहंसि जिह जलयइ
मक्किय जेम्व वसु गरि पणयइ ॥

घत्ता

विम्भय करिणि विंझि आसंकिय
खर-णहरइ पचाणणहु ।
तह भीसणु रूउ निए विणु
वाल चमक्किय चित्त तहु ॥

दशिताधर । कुरुर दिट्ठि=क्रूर दृष्टि । वणलय=वनलता । सालूरि=मेंढकी चक्काइ=चक्रवाक । जलय=जलदों से । विग्रालइ=विडाल से । विंझि=विन्ध्याचल ।

(६)

उगते प्रभात में पद्मश्री के वियोग जीवन का चित्रण—

वोल्लाविउ कंतु न देइ वाय
कर मउलि करेविणु भणइ जाय ॥
'को अविणउ मइ किउ सामिसाल'
पडिभणइ सो वि आरुट्ठ बाल ॥
"दुस्सीलें दिट्ठि महु परिहरेहि
अह कालि अपूरइ तुहु मरेहि ॥
त असुय-पुव्वु निसुणेवि कंत
अइगरुय तास-कंपंत गत्त ॥
वज्जाहय जिह कुल सेल-मुत्ति
मुच्छिय धरणीयलि पडिय झत्ति ॥
चिर वेलइ उट्ठिय लद्ध सन्न
मुह कमलु करिवि करयलि पसन्न ॥
अच्छेइ बाल जिह चुन हरिणि
नइ वलुणइ झत्ति निहाइ रयणि ॥
पउमसिरि सरीरह जेम्व कंति
नक्खत्त निवह नहयत्ति गलंति ॥
इ दिय सुह व नासइ तमोहु
कुक्कुड-रउ पसरइ नाइ मोहु ॥
गयणे वे चदु निच्छाउ जाउ
सोय व वियघडइ चक्कवाउ ॥
नयणा इव कुमुयइ सकुयंति

---

६ लद्ध-सन्न=लब्ध सना=लब्ध चेतना । पसन्न=रख दिया ।

आमा इव दीहउ दिसउ होति ।।
उग्गमइ अरुगु सताउ नाइ
रविबुद्धि जेम्व निसि खयहु जाइ ।।

घत्ता

हरिसो इव निग्गउ
कुमरु सदेसहु पट्ठियउ ।
दोहग्गु जेम्व घर-वालहि
उयलि महीयति मठियउ ।।

(१०)

पद्मश्री का आत्म चिन्तन—

'दुव्वयण-सल्लु मणि पक्खिवेवि
वत्तुण रयति मइ परिहरेवि ।
पिउ गेहि गयउ गलियाणुराउ
मइ काइ हयासइ क्यिउ पाउ ।।
आगेसि नाह ति धरियपाण
वइया वि न खंडिय तुम्ह आण ।।
तुहु सामिय वेण इ अलिउ अज्जु
सभालिउ जिह मइ भिउ अकज्जु ।।
हउ सुक्क विरह-सताव-तत्त
कणवीर माल जिह न वि विरत्त ।।
दुव्वाइय मत्तरि जिह मिलाण
कपि-थरतणु व्व उक्खय विसाण ।।
उप्पाडिय फणि-मणि जिह भुयगि

---

१० गतियाणुराउ=गलितानुराग ।

विच्छाय दीण भय-गेविरगि ॥''
वासहरह निग्गइ सीलवति
वत्थचलेण नयणइं लुहति ॥
चिततु एहु गरुयणह सिटठु
जोयाविउ कुमर न कहिं वि दिट्ठु ॥
अइभीम सोय सायरि निहित्त
दोहग्ग सल्ल सल्लिय विचित्त ॥
वज्जिय विस मजरि जह भमरेंहि
वज्जिय सर दिटि्‌ठ जिह तिमरेंहि ॥
वज्जिय सुयण गोटि ठ जिह पिसुणेंहि
वज्जिय सोह दिट्ठि जिह हरिणेंहि ॥

घत्ता

तिह सयल सोक्ख-परिवज्जिय
निष्फल इव तारुन सिरि ॥
जिणु दिव्व दिटिठ मणि भायइ
कंति पउत्थइ पउयसिरि ॥

आसा इव दीहउ निसउ होंति ।।
उग्गमइ अरुणु संताउ ताइ
रविबुद्धि जेम्व निसि खयहु जाइ ।।

घत्ता

हरिसो इव निग्गउ
कुमरु सदेसहु पट्टियउ ।
सोहग्गु जेम्व परवासहि
उयलि महीयवि मढियउ ।।

(१०)

पद्मश्री का आत्म चिन्तन—

'दुज्जयण-सल्लु मणि पक्खिवेवि
कलुण रयवि मइ परिहरवि ।
पिउ गेहि गयउ गलियाणुराउ
मइ काइ हयासइ कियउ पाउ ।
आनेसि नाह वि धरियपाण
घइया वि न म्हडिय तुम्ह आण ।।
तुहु सामिय केण इ अलिउ अज्जु
संभालिउ जिह मइ किउ अकज्जु ।।
हउ मुक्क विरह-सताव-तत्त
कणवीर-माल जिह न वि विरत्त ।।
दुव्वाढय मनरि जिह मिलाण
कवि-वयणु व्व लक्खय विसाण ।।
उप्पाडिय फणि-मणि जिह भुयंगि

---

१० गलियाणुराउ=गलितानुराग ।

विच्छाय दीण भय-त्रेविरगि ॥"
वासहरह निग्गइ सीलवति
वलवचलेण नयणइ लुहति ॥
चितवु एहु गरुयएह सिटठु
जोयानिउ कुमरु न रहिं रिं दिट्ठु ॥
अइभीम सोय सायरि निहित्त
दोहग्ग-सल्ल-सल्लिय विचित्त ॥
वज्जिय विस-मवरि जह भमरेंहि
वज्जिय सर दिटि ठ जिह तिमरेंहि ॥
वज्जिय सुयण गोटि ठ जिह पिसुणेंहि
वज्जिय सोह दिट्ठि जिह हरिणेंहि ॥

घत्ता

तिह सयल सोक्ख-परिवज्जिय
निप्फल इव तारुन्न सिरि ॥
जिणु दिव्व दिटिठ मणि मायई
रति पउत्थइ पउयसिरि॥

शुद्धि पत्र

पृष्ठ	अशुद्ध रूप	शुद्ध रूप
२२ शीर्षक	सपज्र प्रवस्था	सहज्र प्रवस्था
२५–२६	सउ	साउ
३९/१२	वहमज्भइ	वहमज्भह
३१/१०	नित्य	नित्य
३१/११	तह	तहि
३१/९ टिप्पणी	पढ़्व स	पढ़न से
३८/२६	वसत यातु	वमत मातु
३९/६	तेवहहउ	ते वहहउ
४२/५	सुमहि	सुमरि
४६/२५	उटब्भइ	उद्भमइ
४७/९	जेन प्राम्व	जल प्राइम्व
४८/१८	देमुच्चाउणु	देमुच्चाइणु
४९/३३	एह	एह
४९/३५	प्रावही	प्रावहि
४९/३५	पमाणियइ	पमावियइ
५०/४५	गोरा	गोरडी
५०/३७ टि०	जीवाग	जावागल
५१/४७	प्रप	प्रह
५१/४८	मयु	मणु
५१/५०	लज्जिजणइ	लज्जिजइ
५१/५५	पवमनि	पवसति
	प वसतेन	पवसउन
५२/६४	प्रणणेइ	प्रणुणइ
५२/६६	एट	णउ
५३/५	गिरा	मिग
५३/६	निमि	निभिच्च
	मतरूउ	मतहउ

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
५४/६	विवन	विघन
५५/४	रोमयणवस	रोमयणवस
५६/१	सिनाय	सिलायल
५६/२ टि०	पामय घन	पावय घन
५७/२	वि	विउ
५८/१४ १५ प०	सावडड	सावडड
	वघड	घडड
६३/टि०	भाधानी	भाग्गाला
६४/७	विम हुम्मिणु	विहुसेम्मिणु
६७/टि०	भावा	भाया
६६/१४	चडु	चडु
७१/१ प०	रिटठगेमि	रिट्ठणेमि
७५/५	मरेणु	मरणु
	जिल्नोल्लिय	जलोल्लिय
७६/६	घुडु	घुडु
७७/६	मुि	मुहि
८०/१०	इयरि	उयरि
८१/११	मेहु	एहु
८२/१२	सयनिधि	सयनिधि
८३/१३	वज्जारिवि	वज्जारिवि
८६/भूमिका	पुत्रियाँ थीं	पत्नियाँ थीं
६१/प० १	सरनर	सुरणर
६२/५	पणरवि	पुणरवि
६३/६	पविरत्न	पविरल
६७/१२	मवलु	भुपवडु
१००/१४	मयवलिहि	भुपवलिहि
१०१/१५	मरघ्दूर्पाँन	मरुदघूप
१०१/१५	गिच्चिद्यूलि	निगिच्छयूनि
१०२/१५	फुलन	फुरन्ते
१०२/टि०	भुनम्म	मल्लव
१०३/टि०	भुपघुत्ति	गुरलिघुत्ति
१०७/१६	हब्बरिव	उब्बरिव

पृष्ठ	अशुद्ध	शुद्ध
१११/टि०	नाघ	नीघ्र
११३/४	विगप्पइ	वियप्पइ
११८/टि०	म्पम	म्मम
११६/६	णन्तु	णन्ण
११६/७	वमल	वसरन
११०/श्रो०	सक्टा	नसर
१२२/प० ८	दतिया	दनिया
१२५/१०	णन	गद
१२५/१२	उिवक्गउ	अविगउ
१३३/१६	कृष्ण का	कृष्ण की
१३८/२	आसधिवि	आमधित्रि
१४४/	हक्कारिव	हक्कारिवि
१४४/	८	६
१४४/श्रो	वग्रिय पुत्रा	वणिक पुत्रा
१४६/टि०	पियुनना	पिमुनना
१४८/११	अपहरि	अवहरि
१५१/१४	भवाल	भुवाल
	हप्पउ	हत्यउ
१५३/	लज्जिम	लज्जिय